सूचना और प्रसारण मंत्रालय

वार्षिक रिपोर्ट
1992-93

विषय-सूची

अध्याय	1	वर्ष—एक दृष्टि में	1
अध्याय	2	योजना निष्पादन	9
अध्याय	3	संगठन	14
अध्याय	4	आकाशवाणी	17
अध्याय	5	दूरदर्शन	27
अध्याय	6	फिल्में	34
अध्याय	7	पत्र सूचना कार्यालय	45
अध्याय	8	भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक	47
अध्याय	9	प्रकाशन विभाग	48
अध्याय	10	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	50
अध्याय	11	विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय	54
अध्याय	12	फोटो प्रभाग	58
अध्याय	13	गीत और नाटक प्रभाग	60
अध्याय	14	गवेषणा और संदर्भ प्रभाग	63
अध्याय	15	भारतीय जनसंचार संस्थान	64

परिशिष्ट

एक.	मंत्रालय का संगठनात्मक चार्ट	67
दो.	योजना और गैर-योजना बजट का विवरण	69
तीन.	1993-94 की अवधि में सम्भावित नए आकाशवाणी केन्द्रों की सूची	73
चार.	विविध भारती और आ.वा. के प्राथमिक चैनलों के विज्ञापनों से प्राप्त राजस्व	74
पांच.	1992 में प्रमाणित की गई फीचर फिल्मों की सूची	75
छह.	दूरदर्शन प्रसारण केन्द्रों की सूची (25-2-1993 की स्थिति)	76
सात.	पत्र सूचना कार्यालय— क्षेत्रीय एवं शाखा कार्यालयों की सूची	77
आठ.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के प्रादेशिक और क्षेत्रीय कार्यालयों की सूची	78

अध्याय 1

वर्ष – एक दृष्टि में

1.1.1 सूचना और प्रसारण मंत्रालय का उद्देश्य लोगों को जानकारी देना, शिक्षित करना और उनका मनोरंजन करना है। मंत्रालय की माध्यम इकाइयां विकास की दिशाओं के बारे में जागरूकता पैदा करती हैं और सरकार की नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों में लोगों का सहयोग सुनिश्चित करती हैं।

1.1.2 सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत निम्नलिखित माध्यम इकाइयां हैं : आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र सूचना कार्यालय, प्रकाशन विभाग, गवेषणा और संदर्भ प्रभाग, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, फोटो प्रभाग, गीत एवं नाटक प्रभाग तथा फिल्म प्रभाग। इसके अलावा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र, भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, भारतीय जन संचार संस्थान, भारतीय प्रेस परिषद और केंद्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड भी मंत्रालय से सम्बद्ध हैं। इस अध्याय में वर्ष 1992-93 के दौरान विभिन्न माध्यम इकाइयों की गतिविधियों का विवरण दिया गया है। इसके पश्चात् प्रत्येक माध्यम इकाई के बारे में विस्तृत अध्याय दिया गया है और सारणियों अथवा आंकड़ों के रूप में जानकारी सबसे अंत में परिशिष्टों में दी गयी है।

आकाशवाणी

1.2.1 इस समय आकाशवाणी के 149 प्रसारण केन्द्र (8.2.93 तक) हैं। 1992-93 में 24 स्थानीय आकाशवाणी केन्द्रों, 4 नए केन्द्रों तथा एक रिले केन्द्र से नियमित प्रसारण शुरू हुआ।

1.2.2 आकाशवाणी की केन्द्रीय शिक्षा आयोजना इकाई ने राष्ट्रीय विज्ञान एवं टैक्नोलोजी संचार परिषद के सहयोग से 'ह्यूमन इवाल्यूशन' नामक एक वृहत सीरियल शुरु किया है। यह कार्यक्रम 2 जून 1991 से आकाशवाणी के लगभग 80 केंद्रों पर शुरू हुआ। इसका प्रसारण 18 भाषाओं में होता है। इसमें 144 प्रकरण हैं। इनमें से 32 प्रकरणों में श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिए जाते हैं। हर चार प्रकरणों के बाद ऐसा एक प्रकरण प्रसारित किया जाता है। दिसम्बर 1992 तक 67 प्रकरण प्रसारित हो चुके थे, जिससे लगभग आधे सीरियल का प्रसारण हो गया। अंतिम 144 वां प्रकरण 27 फरवरी, 1994 को प्रसारित होगा। उसी दिन राष्ट्रीय विज्ञान दिवस होगा। 10 से 14 वर्ष के लगभग एक लाख बच्चों को इस कार्यक्रम के श्रोता के रूप में पंजीकृत किया गया है। इस सीरियल को 10,000 स्कूलों में सुना जाता है। बच्चों को इस कार्यक्रम से सम्बन्धित सामग्री भी निःशुल्क प्रदान की जाती है. यह सामग्री रंगीन चार्टों तथा 'अभ्यास किटों' के रूप में होती है। श्रोता बच्चों के लिए समय-समय पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है और बड़ी संख्या में विजेताओं को पुरस्कार दिए जाते हैं।

1.2.3 आकाशवाणी के गुवाहाटी केन्द्र से इंदिरा गांधी के जन्म दिवस 19 नवम्बर, 1992 से असमिया में रात 9.25 पर 5 मिनट का एक और बुलेटिन प्रारंभ किया गया। पूर्वोत्तर राज्यों की मांग को पूरा करने के लिए यह बुलेटिन डिब्रूगढ़ से रिले किया जाता है।

1.2.4 शाम को प्रसारित होने वाले सिंधी (विदेशी) बुलेटिन में देश, पड़ोसी देशों तथा विश्व की घटनाओं के संबंध में और अधिक समाचार देने के उद्देश्य से इसकी अवधि 5 मिनट से बढ़ाकर 10 मिनट कर दी गई। सिंधी भाषी लोगों को इससे बहुत लाभ होगा क्योंकि उन्हें अब इस क्षेत्र के बारे में अधिक जानकारी मिल सकेगी।

1.2.5 भारतीय अर्थव्यवस्था को फिर से प्रगति के मार्ग पर लाने के लिए सरकार द्वारा घोषित नए आर्थिक उपायों को समाचार बुलेटिनों तथा समाचार सेवा प्रभाग द्वारा तैयार किए गए समाचार आधारित कार्यक्रमों में व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। इन समीक्षाओं तथा परिचर्चा कार्यक्रमों में नई नीतियों के विभिन्न पहलुओं तथा उस पृष्ठभूमि तथा उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया, जिनके कारण ये तैयार की गई। इन कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री द्वारा

शुरू की गई संशोधित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के बारे में भी पर्याप्त जानकारी दी गई।

1.2.6 भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती के सिलसिले में वर्ष भर चले समारोहों तथा स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए आयोजित संसद के दोनों सदनों के विशेष संयुक्त अधिवेशन के समाचारों को समाचार बुलेटिनों में पर्याप्त स्थान दिया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति डॉक्टर शंकर दयाल शर्मा का 'वायस कास्ट' समाचार बुलेटिनों में शामिल किया गया। दिल्ली में लाल किले तथा देश के विभिन्न भागों में आयोजित अन्य समारोहों के भी समाचार प्रसारित किए गए, जिन्हें प्रधानमंत्री तथा अन्य नेताओं ने सम्बोधित किया।

1.2.7 आकाशवाणी से सामान्य तथा विशेष श्रोता वर्ग के लिए विभिन्न रूपों में पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित किए जाते हैं।

दूरदर्शन

1.3.1 25 फरवरी 1993 को केन्द्रीय निर्माण केन्द्र (सी पी सी) के अलावा 24 कार्यक्रम निर्माण केन्द्रों और अलग-अलग क्षमता वाले 541 ट्रांसमीटरों की सहायता से, जो देश की जनसंख्या के 82.4 प्रतिशत हिस्से तक पहुंचते हैं, दूरदर्शन विश्व का एक प्रमुख टेलीविजन संगठन बन चुका है।

1.3.2 दिल्ली, लखनऊ, पटना, हैदराबाद और कलकत्ता से उर्दू समाचार बुलेटिन शुरू किए गए हैं।

1.3.3 1 जनवरी, 1993 से राष्ट्रीय चैनल पर कार्यक्रमों की संशोधित पद्धति प्रारंभ की गई, जिसमें निम्नलिखित मुख्य परिवर्तन किए गए।

- सर्वाधिक दर्शकों द्वारा टी.वी. देखे जाने के समय अर्थात् रात 8.45 से 9.45 बजे तक एक घंटे के मनोरंजन कार्यक्रम।
- हिन्दी बुलेटिन 8.30 बजे तथा अंग्रेजी बुलेटिन 9.45 बजे। दोनों की अवधि 15-15 मिनट।
- दोपहर बाद प्रसारण में हर मंगलवार को फीचर फिल्म का प्रसारण।

1.3.4 चारों मेट्रो चैनलों पर सोमवार से शुक्रवार तक प्रतिदिन शाम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक एक घंटे का खेल कार्यक्रम शुरू किया गया है। इसके अलावा क्षेत्रीय केन्द्र आधे घंटे के खेल कार्यक्रम प्रसारित करेंगे।

1.3.5 दूरदर्शन ने 26 जनवरी 1993 से मेट्रो चैनल पर रात 8.00 से 9.00 बजे तक एक घंटे का मनोरंजन कार्यक्रम प्रारंभ किया। इसमें आधे-आधे घंटे के स्लॉट हैं, जो निजी निर्माताओं को दिए गए हैं।

1.3.6 दूरदर्शन ने पुनरावलोकन के अंतर्गत सत्यजीत राय, कानन देवी तथा ए. वी. मयप्पन की फिल्में दिखाई।

1.3.7 बार्सिलोना ओलम्पिक 1992 की खेल प्रतियोगिताओं का व्यापक प्रसारण किया गया। इसके लिए दूरदर्शन ने लगभग 110 घंटों का प्रसारण किया। फुटबाल, वालीबाल, बैडमिंटन, हाकी, आदि के सेमी फाइनल तथा फाइनल मैचों का सीधा प्रसारण किया गया।

1.3.8 डॉ० भीमराव आम्बेडकर के शताब्दी समारोहों के सिलसिले में कथा चित्र 'बालक आम्बेडकर' का प्रसारण किया गया। लाल बहादुर शास्त्री के जीवन तथा उपलब्धियों पर 8 भागों वाला सीरियल 'धरती का लाल' राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित किया गया।

1.3.9 दूरदर्शन के सभी केन्द्रों से पर्यावरण तथा प्रदूषण के संबंध में विभिन्न रूपों में कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं। दूरदर्शन की ओर से पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर लोगों का ध्यान आकर्षित करने, वृक्षारोपण में सहयोग देने को प्रेरित करने और उनमें पर्यावरण संरक्षण की भावना जागृत करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

फिल्म प्रभाग

1.4.1 अप्रैल से नवम्बर 1992 की अवधि में फिल्म प्रभाग ने 54 वृत्त चित्र और समाचार पत्रिकाओं के अतिरिक्त, लघु फिल्मों, फीचरेट्स आदि का भी निर्माण किया। इनमें से 40 फिल्में प्रभाग के लोगों ने ही बनाई, 14 का निर्माण स्वतंत्र निर्माताओं ने किया।

1.4.2 दूरदर्शन पर प्रसारण के लिए 15 भागों का सीरियल 'जर्नी थ्रू दि यूनीवर्स' का निर्माण किया गया है।

1.4.3 भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर फिल्में बनाने का क्रम इस वर्ष भी जारी रहा। स्वतंत्रता संग्राम में उड़ीसा के योगदान पर एक फिल्म पूरी हो चुकी है तथा तीन अन्य राज्यों के योगदान पर बनाने वाली फिल्में निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं।

1.4.4 आम लोगों के दैनिक जीवन में साक्षरता के महत्व को दर्शाने वाली फिल्म 'अक्षर गाथा' का निर्माण पूरा हो चुका है। फिल्म प्रभाग ने के. एम. मुंशी, वी. के. कृष्णामेनन तथा के. डी. मालवीय पर जीवनी फिल्में भी बना ली हैं।

1.4.5 फिल्म प्रभाग ने नई आर्थिक नीतियों, औद्योगिक नीति तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली को नया रूप दिए जाने के बारे में जन साधारण को जानकारी देने के लिए 5 फिल्में बनाई हैं। इन्हीं विषयों पर 6 और फिल्में तैयार की जा रही हैं। पेट्रोलियम पदार्थों

की बचत की आवश्यकता के बारे में 5 अति लघु फिल्में भी बनाकर जारी की गई हैं, जिनमें तेल के मूल्यों में हाल की वृद्धि के कारणों पर प्रकाश डाला गया है।

1.4.6 फिल्म प्रभाग द्वारा नवम्बर 1992 तक निर्मित 5 फिल्मों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। समाचार पत्रिका संख्या 219 को 1992 में 'भारतीय पैनोरमा' के लिए चुनी गई।

1.4.7 फिल्म प्रभाग अपनी सामान्य गतिविधियों के तौर पर प्रदूषण नियंत्रण के संबंध में नीतिगत वक्तव्य से जुड़े विषयों पर वृत्त चित्रों तथा समाचार पत्रिकाओं का निर्माण करता रहा है।

1.4.8 इस समय फिल्म प्रभाग निम्नलिखित विषयों पर फिल्में बना रहा है –

1. ठोस मल प्रबंध
2. कच्छ वनस्पति और मनुष्य
3. उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा जम्मू-कश्मीर में तैनात तीन पर्यावरण कार्य दलों द्वारा किए गए काम।
4. उर्वरक संयंत्रों में पर्यावरण प्रबंध

फिल्म समारोह निदेशालय

1.5 सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत निदेशालय ने भारत में जापानी, चीनी, फ्रांसीसी, तुर्की और हंगेरियन फिल्म सप्ताहों का आयोजन किया। भारतीय फिल्मों को लोकप्रिय बनाने के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत विदेशों में भारतीय फिल्में प्रदर्शित की गयीं। इस वर्ष का दादासाहब फाल्के पुरस्कार विख्यात निर्माता निर्देशक भाल जी पेंढारकर को प्रदान किया गया। 24 वां भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 10 से 20 जनवरी 1992 तक नई दिल्ली में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। भारत सहित 40 देशों की 174 फिल्में समारोह में प्रदर्शित की गयी। 86 विदेशी प्रतिनिधियों ने इसमें हिस्सा लिया।

राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र

1.6 राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र का मुख्य उद्देश्य बच्चों के लिए फिल्मों का निर्माण, वितरण और प्रदर्शन करना है। केन्द्र ने 2 फीचर फिल्में, एक टी. वी. सीरियल (2 भाग) तथा एक अन्य सीरियल के 8 भाग तैयार किए। एक कथा चित्र (करामती कोट), एक लघु चित्र तथा एक टी. वी. सीरियल का निर्माण विभिन्न चरणों में है। इसके अलावा तीन फिल्मों को दूरदर्शन पर प्रसारण के लिए धारावाहिक रूप दिया गया। उदयपुर में 14 से 23 नवम्बर तक आयोजित होने वाले 8वें अंतर्राष्ट्रीय भारतीय बाल फिल्म समारोह की तैयारियां शुरू हो गई हैं।

भारत का राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार

1.7.1 1964 में अपनी स्थापना के बाद भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने देश की फिल्म धरोहर के परिरक्षण, विश्व भर की श्रेष्ठतम फिल्मों के संग्रह, संदर्भ, अध्ययन तथा देश में फिल्म संस्कृति के प्रसार के क्षेत्र में निरंतर प्रगति की है। 1992 के अंत तक अभिलेखागार में 12,747 फिल्में, 875 वीडियो कैसेट, 21,403 स्क्रिप्ट्स, 20,604 पुस्तकें और 97,414 स्टिल्स का भंडार था।

1.7.2 वर्ष के दौरान अभिलेखागार ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे के सहयोग से राष्ट्रीय फिल्म समीक्षा पाठ्यक्रम का आयोजन किया। विख्यात फिल्म निर्माताओं बालु महेन्द्र, कुमार शाहनी, श्याम बेनेगल, गोविन्द निहलानी, मणि कौल आदि की देख-रेख में आयोजित इन पाठ्यक्रमों में विभिन्न विषयों और व्यवसायों के 65 लोगों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

1.7.3 फ्रांसीसी राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की प्रयोगशाला के अध्यक्ष श्री जीन माइकेल जीनट अभिलेखागार में आए और उन्होंने एक कार्यशाला का आयोजन किया, जो बहुत उपयोगी रही। इटली की नाइट्रो संरक्षण विशेषज्ञ सुश्री अन्ना केसालेरी तथा म्युनिख विश्वविद्यालय के इतिहासकार श्री मार्टिन लायपरडिंगर भी अभिलेखागार देखने आए।

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान

1.8 भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान फिल्म निर्माण की कला और तकनीक का विधिवत प्रशिक्षण देता है। संस्थान दूरदर्शन के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण भी देता है। इस वर्ष दूरदर्शन कर्मचारियों के लिए निर्माण और तकनीकी कार्यों का 37वां बुनियादी टेलीविजन प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 जुलाई से 20 नवम्बर 1992 तक चलाया गया। पहली बार फिल्म प्रभाग के 11 अधिकारियों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न वर्गों के कुल 82 अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा भारतीय जन संचार संस्थान से आए भारतीय सूचना सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए फिल्म तथा टेलीविजन निर्माण के बारे में लघु पाठ्यक्रम 10.6.92 से 4.7.92 तक चलाया गया। इसमें 23 अधिकारी शामिल हुए।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

1.9.1 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम फिल्म संबंधी अनेक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है, निर्माण, आयात तथा निर्यात, अच्छी फिल्मों का वितरण, वीडियो कैसेट्स के विक्रय और छविगृहों के निर्माण के लिए वित्त की व्यवस्था करना।

1.9.2 निगम और दूरदर्शन के मध्य हुए समझौते के अंतर्गत अच्छी टेली और फीचर फिल्मों का निर्माण संयुक्त रूप से हो रहा है। दिसम्बर 1992 तक 21 फिल्में शुरू की गई, जिनमें से कुछ पूरी हो चुकी है।

1.9.3 निगम अच्छी पटकथाओं पर आधारित तथा प्रसिद्ध निर्देशकों द्वारा निर्देशित फिल्मों का निर्माण करता है। 1980-81 में शुरू की गई इस योजना के अंतर्गत 1992-93 में (दिसम्बर 1992 तक) पूरी की गई फिल्में इस प्रकार हैं :

1. तहादेर कथा – बंगला – बुद्धदेव दास गुप्ता
2. एक होता विदूषक – मराठी – डा. जब्बार पटेल

   वर्ष के दौरान निगम ने सत्यजीत राय द्वारा निर्देशित फिल्म 'आगंतुक' बनाई, जिसे सर्वोत्तम कथा चित्र तथा सर्वोत्तम निर्देशन के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। निगम ने भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय और महाराष्ट्र सरकार की ओर से डॉ० भीमराव आम्बेडकर पर बड़ी फिल्म के निर्माण का दायित्व संभाला है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के लिए 'दुर्गा' फिल्म का निर्माण किया। इस फिल्म को परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथा चित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

1.9.4 'वीडियो पायरेसी' की रोकथाम के उद्देश्य से निगम ने भारतीय फिल्म उद्योग के सहयोग से वीडियो चोरी विरोधी संगठन की दिशा में प्रयास किए। इंडियन फेडरेशन अगेंस्ट कापी राइट थेफ्ट नाम की इस संस्था को कंपनी के रूप में पंजीकृत कराया गया है।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड

1.10.1 भारत में फिल्में केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड से प्रमाणित होने के बाद ही सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित की जा सकती है। इसका गठन 1952 में सिनेमेटोग्राफी अधिनियम के तहत किया गया था। इस बोर्ड में अध्यक्ष और अधिकतम 25 सदस्य होते हैं बोर्ड का मुख्यालय बंबई में है और बंगलूर, कलकत्ता, बंबई, कटक, दिल्ली, गुवाहाटी, हैदराबाद, मद्रास और तिरुअनन्तपुरम में इसके क्षेत्रीय कार्यालय हैं।

1.10.2 गुवाहाटी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना इस वर्ष के दौरान ही हुई।

1.10.3 1992 में बोर्ड ने कुल 3188 प्रमाण पत्र दिए। 836 भारतीय फीचर फिल्मों (सेल्यूलाइड) को प्रमाणित किया गया, जिनमें से 611 को "यू" प्रमाण पत्र (73.09%), 88 को "यू ए" (10.52%) तथा 137 को "ए" प्रमाण पत्र दिए (16.39%)। 80 विदेशी फीचर फिल्मों (सेल्यूलाइड) को प्रमाण पत्र दिया गया, जिनमें 20 को "यू" प्रमाण पत्र (25%), 12 को "यू ए" (15%) तथा 48 को "ए" प्रमाण पत्र (60%) दिया गया।

1.10.4 वर्ष के दौरान 6 भारतीय तथा 4 विदेशी कथा चित्रों को प्रमाण पत्र देने से इंकार कर दिया गया क्योंकि उनसे प्रमाणीकरण के किसी न किसी दिशा निर्देश का उल्लंघन होता था।

पत्र सूचना कार्यालय

1.11.1 वर्ष के दौरान पत्र सूचना कार्यालय ने सरकार द्वारा अभूतपूर्व आर्थिक संकट को दूर करने तथा आर्थिक प्रगति में तेजी लाने व विदेशी पूंजीनिवेश को आमंत्रित करने के उद्देश्य से किए गए साहसिक तथा दूरगामी सुधारों के प्रचार की व्यवस्था की। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के नए रूप की जानकारी लोगों तक पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास किए गए। अयोध्या समस्या तथा इससे उत्पन्न स्थिति पर राष्ट्रीय एकता परिषद में हुए विचार-विमर्श, बोडो वार्ता, पंजाब तथा कश्मीर समस्या, झारखंड वार्ता, आतंकवाद के बारे में मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन, मानव अधिकार आयोग का गठन जैसे विषयों का भी प्रचार किया गया।

1.11.2 वर्ष के दौरान पत्र सूचना कार्यालय ने विभिन्न विषयों पर 924 संवाददाता सम्मेलन आयोजित किए। 31,945 प्रेस विज्ञप्तियां जारी की तथा जन संचार माध्यमों को 851 समाचार चित्रों की 2,33,908 प्रतियां उपलब्ध कराईं

1.11.3 विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को समाचार पत्रों की 6 लाख कतरनें भेजी गई।

1.11.4 पर्यावरण तथा वन मंत्री के संवाददाता सम्मेलन में प्रदूषण की रोकथाम के बारे में नीति संबंधी वक्तव्य पर दिए गए भाषणों का व्यापक प्रचार किया गया। देश के लगभग सभी प्रमुख दैनिक पत्रों ने इन्हें प्रमुखता से छापा और कुछ पत्रों ने संपादकीय भी लिखे। पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय से सभी क्षेत्रीय कार्यालयों को क्षेत्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशन के लिए प्रेस विज्ञप्तियां भेजी गई।

1.11.5 इस नीति की प्रतियां ब्राजील में रियो द जानेरो में हुए पृथ्वी सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों तथा अंतर्राष्ट्रीय समाचार एजेंसियों के संवाददाताओं को भी उपलब्ध कराई गई।

भारत के समाचार पत्रों का पंजीयक

1.12.1 अप्रैल से दिसम्बर 1992 के दौरान भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक के कार्यालय ने 11401 समाचार पत्रों/पत्रिकाओं के शीर्षक को मंजूरी दी। इसी अवधि में 1460 समाचार पत्रों को पंजीकृत किया गया। 1482 समाचार पत्रों की प्रसार संख्या के दावों की भी नवम्बर 1992 तक जांच की गयी

1.12.2 1.4.92 से 1992-93 के लिए अखबारी कागज की आयात नीति तथा उसके आयात पर नियंत्रण समाप्त होने की अधिसूचना जारी हो जाने के बाद समाचार पत्रों को अधिकार प्रमाण पत्र जारी करने के संबंध में 5.5.92 को दिशा निर्देश जारी किए गए। नवम्बर 1992 तक 200 मीट्रिक टन से स्टैंडर्ड अखबारी कागज की वार्षिक खपत वाले 371 पत्रों/पत्रिकाओं को अधिकार प्रमाण पत्र जारी किए गए। 1715 पत्रों एवं पत्रिकाओं को 1.03 लाख मी. टन आयातित स्टैंडर्ड अखबारी कागज और 53,857 मी. टन ग्लेजूड अखबारी कागज आबंटित किया गया। नवम्बर 1992 तक 272 नए आवेदनकर्ताओं को 27,407 मी. टन देसी अखबारी कागज आबंटित किया गया।

प्रकाशन, विभाग

1.13.1 विभाग ने 'आर. वेंकटरामन के भाषण' (राष्ट्रपति के रूप में) तथा 'पी. वी. नरसिम्ह राव के भाषण' पुस्तकों का प्रकाशन किया। इसके अलावा 'आधुनिक भारत के निर्माता' पुस्तक माला के अंतर्गत 'आचार्य विनोबा भावे', 'केशव चंद्र सेन', 'वी. ओ. चिदम्बरम पिल्लै', 'ऐनी बेसेंट' आदि पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

1.13.2 विभाग ने अपनी विभिन्न पत्रिकाओं का प्रकाशन जारी रखा। इन पत्रिकाओं में 8वीं पंचवर्षीय योजना, भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती, आर्थिक सुधार, पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी, संशोधित सार्वजनिक वितरण प्रणाली, स्वच्छता जैसी महत्वपूर्ण तथा समसामयिक घटनाओं एवं विषयों पर प्रकाश डालने वाले लेख प्रकाशित किए गए.

1.13.3 बिक्री बढ़ाने के अपने अभियान के अंतर्गत विभाग ने देश भर में 40 प्रदर्शनियों/मेलों में भाग लिया।

1.13.4 प्रकाशन विभाग जल्दी ही 'हमारा पर्यावरण' नामक पुस्तक निकाल रहा है. पर्यावरण तथा प्रदूषण के संबंध में अनेक लेख प्रकाशन विभाग की पत्रिकाओं में छपे हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

पत्रिका	लेख
कुरुक्षेत्र (अंग्रेजी)	'रोल ऑफ कापार्ट एण्ड वालंटरी एजेंसीज इन रूरल सिचुएशन', 'मेकिंग क्लीन एण्ड हेल्दी हैबिटैट', 'ए पीपुल्स प्रोग्राम', 'रोल ऑफ एन जी ओज इन रूरल सेनिटेशन,' 'टैक्नोलॉजिकल ऑपरेशनस फॉर रूरल सेनिटेशन फार इनवॉयरमेंटली क्लीन टैक्नोलॉजीस'
कुरुक्षेत्र (हिन्दी)	पर्यावरण प्रदूषण और पारिस्थितिकी संतुलन, पर्यावरण प्रदूषण भविष्य की त्रासदी, ग्रामीण पर्यावरण : कारण, प्रभाव और निदान
योजना (हिन्दी)	जल प्रदूषण की समस्या : भारतीय संदर्भ पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर्यावरण प्रदूषण-आखिर निदान क्या है? प्रदूषण से प्रभावित होगा अंतरिक्ष मिट्टी प्रदूषण : बढ़ता हुआ खतरा
योजना (असमिया)	सम्पूर्ण स्वस्थ पर्यावरण सामूहिक प्रयास का श्रीगणेश

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय

1.14.1 विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय देश भर में समाज के सभी वर्गों में सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों तथा उपलब्धियों का प्रचार करता है. यह प्रचार कार्य हिंदी, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में मुद्रण माध्यमों, प्रेस विज्ञापनों, दृश्य-श्रव्य माध्यमों, बाह्य प्रचार तथा शिल्प विकास के जरिए किया जाता है.

1.14.2 अप्रैल 1992 से जनवरी 1993 के दौरान निदेशालय ने नए आर्थिक उपाय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, ग्रामीण विकास,

साक्षरता, मादक पदार्थों का सेवन तथा मद्य निषेध, पर्यावरण संरक्षण, भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती तथा महिला एवं बाल कल्याण जैसे आर्थिक सामाजिक विषयों पर जोरदार प्रचार अभियान चलाए।

1.14.3 114 विषयों की 489 पुस्तिकाओं की 1.25 करोड़ प्रतियां हिंदी, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित की गई। अनेक आर्थिक-सामाजिक विषयों पर लगभग 13,865 (13,068 वर्गीकृत तथा 797 डिस्पले) विज्ञापन 3,687 समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं को जारी किए गए।

1.14.4 दृश्य श्रव्य प्रचार के अंतर्गत 2,135 रेडियो तथा 225 वीडियो विज्ञापन तैयार किए गए। इनके 58,900 रेडियो प्रसारण तथा 825 टी.वी. प्रसारण हुए। बाहृय प्रचार के लिए लगभग 775 होर्डिंग, 3,875 बस पैनल, 4,450 कियोस्क, 720 दीवार लेखन, 29,300 सिनेमा स्लाइड, 1,125 बैनर तथा अन्य विविध प्रचार सामग्री तैयार की गई।

1.14.5 निदेशालय के 7 वाहनों सहित 35 क्षेत्र प्रदर्शनी इकाइयों ने 380 प्रदर्शनियां लगाईं, जो 2,200 प्रदर्शनी दिवसों तक चलीं।

1.14.6 प्रभाग द्वारा तैयार की गई प्रचार सामग्री की लगभग 2.25 लाख प्रतियां 530 वर्गों के लगभग 15 लाख पतों पर डाक से भेजी गई। इनमें ग्रामीण बैंक, पंचायतें, शिक्षा तथा सांस्कृतिक संगठन, सामाजिक संस्थाएं, प्रशासनिक एवं स्थानीय स्वशासन संस्थाएं शामिल हैं।

निदेशालय ने 1992 में पर्यावरण प्रदूषण के बारे में 7 वीडियो विज्ञापन तैयार किए। ये कैसेट टी.वी. पर प्रसारण हेतु केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को सौंपे गए। 'इको मार्क' को लोकप्रिय बनाने के लिए दृश्य एवं श्रव्य कैसेट तैयार करने का काम भी चल रहा है।

विभिन्न विभागों के अनुरोध पर 1 फरवरी 1992 से निम्नलिखित विज्ञापन जारी किए गए हैं :

1. पर्यावरण की देखभाल प्रतियोगिता
2. विश्व पर्यावरण दिवस - 5 जून 1992
3. राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता अभियान - 1992-93
4. प्रदूषण निवारण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार
5. इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार

गवेषणा तथा संदर्भ प्रभाग

1.15.1 गवेषणा तथा संदर्भ प्रभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, इसकी माध्यम इकाइयों और क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए सूचना प्रदान करने वाली एजेंसी के रूप में कार्य करता है। प्रभाग विभिन्न माध्यम इकाइयों के प्रचार अभियानों तथा अन्य कार्यक्रमों के लिए एक सूचना बैंक तथा सूचना फीडर सेवा की तरह कार्य करता है। प्रभाग जनसंचार माध्यमों की प्रवृत्तियों का अध्ययन करता है तथा साथ ही वर्तमान घटनाक्रम और जनसंचार के बारे में ताजा संदर्भ तथा प्रलेखन सेवा जुटाता है।

1.15.2 इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रभाग विभिन्न प्रकार की सूचना सामग्री तैयार करता है— जैसे बेक ग्राउंडर टू द न्यूज, जन महत्व के विषयों पर संदर्भ-पत्र, प्रमुख भारतीयों का जीवन परिचय, प्रमुख राष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी देने वाली डायरी ऑफ इवेंट्स, दो वार्षिक संदर्भ ग्रंथों-'इंडिया' तथा 'मास मीडिया इन इंडिया' का संकलन। प्रभाग की प्रलेखन सेवाएं राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र द्वारा की जाती हैं जो प्रभाग का ही अभिन्न अंग है। इस वर्ष प्रभाग ने सामयिक विषयों पर बैक ग्राउंडर तथा संदर्भ पत्रों के पेपर और प्रसारण मंत्रालय के उपयोग के लिए पृष्ठभूमि सामग्री तथा चर्चा के मुद्दे तैयार किए।

1.15.3 प्रभाग ने अपनी पाक्षिक 'राष्ट्रीय घटनाओं की सूची' में पर्यावरण सम्बन्धी महत्वपूर्ण समस्याओं को भी शामिल किया। इसमें मनुष्य तथा प्रकृति के सह-अस्तित्व के बारे में वैदिक दृष्टि पर प्रकाश डाला गया है।

फोटो प्रभाग

1.16.1 फोटो प्रभाग ने सचित्र प्रचार की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए फोटो उपलब्ध कराने के अलावा राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री की देश के विभिन्न भागों की यात्राओं और विदेशों के अनेक शासनाध्यक्षों, राष्ट्राध्यक्षों सहित अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की भारत यात्राओं के फोटो तैयार किए।

1.16.2 अप्रैल से दिसम्बर 1992 की अवधि में प्रभाग ने 2,348 समाचार तथा फीचर कार्य संपन्न किए, श्वेत-श्याम तथा रंगीन फोटोग्राफी के 66,631 निगेटिव तैयार किए, 3,38,022 श्वेत-श्याम तथा रंगीन प्रिंट बनाए, 225 रंगीन स्लाइड ट्रांसपेरेंसी तथा 80 फोटो-एलबम वालेट तैयार किए।

1.16.3 प्रभाग ने मार्च 1992 में 'सांस्कृतिक विरासत' पर चौथी राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता आयोजित की। इस प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता तथा चुने हुए फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी भी 23 से 28 मार्च 1992 तक मावलंकर हाल में लगाई गई।

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

1.17.1 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की स्थापना 1953 में हुई। शुरू में इसमें केवल 32 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां तथा इन इकाइयों के

कामकाज की देख रेख के लिए मात्र 4 क्षेत्रीय कार्यालय थे। समन्वित प्रचार कार्यक्रम के अंतर्गत बनाए गए संगठन का नाम उस समय पंचवर्षीय योजना प्रचार संगठन रखा गया। यह संगठन सीधे सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के अधीन काम करता था। दिसम्बर 1959 में क्षेत्रीय इकाइयों की गतिविधियों की देखरेख के लिए पूर्ण निदेशालय का गठन किया गया और इसका नाम 'क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय' रखा गया।

1.17.2 1982 में प्रचार इकाइयों की संख्या बढ़कर 257 तथा क्षेत्रीय कार्यालयों की 22 हो गई। वर्तमान 257 इकाइयों में से 72 सीमा इकाइयां तथा 30 परिवार कल्याण इकाइयां हैं। शेष 155 क्षेत्रीय इकाइयां हैं।

1.17.3 निदेशालय ने अपने मौखिक संचार कार्यक्रम के अंतर्गत अपनी प्रचार इकाइयों के लिए 'पर्यावरण तथा विकास' और 'प्रदूषण रोकने में मदद दीजिए' नाम के दो चर्चा के मुद्दे तैयार किए। इसके अलावा इस उद्देश्य से क्षेत्रीय इकाइयों को निम्नलिखित विषयों पर वृत्त चित्र/वीडियो कैसेट भी उपलब्ध कराए गए हैं :

1. बसे हुए काश्तकार
2. मेरा वृक्ष
3. हर बच्चे के लिए पेड़
4. सुबाबुल
5. बढ़ता हुआ रेगिस्तान
6. देर आए दुरुस्त आए
7. प्रकृति एवं पर्यावरण (वीडियो कैसेट)

गीत एवं नाटक प्रभाग

1.18.1 गीत एवं नाटक प्रभाग ने जनवरी से दिसम्बर 92 के दौरान 37,159 कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रभाग ने पंजाब, जम्मू कश्मीर तथा असम के संवेदनशील इलाकों में प्रभावकारी ढंग से अपने कार्यक्रम आयोजित करने का अभियान चलाया।

1.18.2 विभाग ने ग्रामीण क्षेत्रों, विशेषकर जिन क्षेत्रों में इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों की पहुंच नहीं है, लोक तथा परंपरागत कला मंडलियों के माध्यम से अपने कार्यक्रमों की संख्या बढ़ाने की योजना बनाई है। हाल में सरकार ने सीधे सम्पर्क वाले माध्यमों तथा व्यक्तिगत संपर्क को अत्यधिक महत्व दिया है। अतः बढ़ी हुई जिम्मेदारियां निभाने के लिए संगीत एवं नाटक प्रभाग की गतिविधियों में वृद्धि की गई है।

1.18.3 यह वर्ष विशेष महत्व का रहा क्योंकि प्रधानमंत्री के निर्देश के अनुसार दो प्रमुख विषयों — नई आर्थिक नीतियों तथा संशोधित सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर कुछ चुने हुए विकास खंडों में विशेष बल दिया गया। भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयन्ती के सिलसिले में हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पूर्वोत्तर राज्यों, राजस्थान और पंजाब में विशेष कार्यक्रम तथा समारोह आयोजित किए गए।

1.18.4 प्रभाग ने देश की सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव तथा अब तक की देश की विकास प्रक्रिया पर प्रकाश डालने वाला एक नया ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम "वो राहगुजर, वो राहगीर" प्रस्तुत किया। नई दिल्ली में यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया। एक ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम मलयालम में "ओन्नाकाजा" केरल में क्विलोन में पेश किया गया। ओणम की भावना को व्यक्त करने वाले इस कार्यक्रम में सामाजिक न्याय, समानता तथा साम्प्रदायिक सामंजस्य का संदेश दिया गया है। डॉ० भीमराव आम्बेडकर पर मराठी में एक नया ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम तैयार करने का प्रस्ताव है।

1.18.5 विभागीय कलाकारों ने परिवार कल्याण की नई कार्यनीति के अनुरूप नया नाटक 'जागृति' प्रस्तुत किया।

1.18.6 पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रभाग ने गणतंत्र दिवस परेड, 1992 के सिलसिले में अपने दायित्वों को पूरा किया।

1.18.7 तमिलनाडु में डॉ० भीमराव आम्बेडकर के जीवन तथा कृतित्व पर एक नाटक प्रस्तुत किया गया तथा डॉ० आम्बेडकर की जन्म-शताब्दी समारोहों के संदर्भ में देश के विभिन्न भागों में कई कार्यक्रम पेश किए

1.18.8 पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा, असम में बिहू, मेरठ में नौचन्दी, अजमेर में उर्स, राजस्थान में पशु मेला तथा नई दिल्ली में फूल वालों की सैर जैसे मेलों व उत्सवों पर प्रभाग ने बड़े पैमाने पर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। देश में राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सौहार्द का संदेश लोगों तक पहुंचाने के लिए मेलों व उत्सवों का भरपूर उपयोग किया गया।

1.18.9 प्रभाग ने कर्नाटक में धारवाड़ में यूनीसेफ, भारतीय जन संचार संस्थान तथा कर्नाटक सरकार के सहयोग से विकासात्मक संचार में लोक माध्यमों की भूमिका के बारे में एक कार्यशाला आयोजित की। इसमें प्रभाग के सभी कार्यक्रम अधिकारियों तथा नाटक विशेषज्ञों ने भाग लिया। इस विषय पर एक बड़ा अभियान चलाने का प्रस्ताव है। विश्व जनसंख्या दिवस पर परिवार कल्याण से संबंधित समस्याओं पर नई दिल्ली में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

1.18.10 प्रभाग ने सेना, अर्द्ध-सैनिक बलों, केन्द्र तथा राज्य सरकारों की अनेक एजेन्सियों और स्वयंसेवी संगठनों को तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया।

1.18.11 विभागीय नाटक मंडलियां तथा पंजीकृत मंडलियां देश भर में पर्यावरण तथा प्रदूषण के संबंध में कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं।

भारतीय जन संचार संस्थान

1.19 भारतीय जन संचार संस्थान ने दो प्रशिक्षण कार्यक्रम और चार डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित किए। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए कई पाठ्यक्रम आयोजित किए। कुल मिलाकर, संस्थान ने वर्ष भर में 384 व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया।

गुटनिरपेक्ष देशों का समाचार एजेंसी पूल

1.20.1 यह पूल गुटनिरपेक्ष देशों की समाचार एजेन्सियों में परस्पर सहयोग और समन्वय पर आधारित समाचारों के आदान-प्रदान की एक व्यवस्था है। पूल की एक समन्वय समिति है जो पूल की गतिविधियों का समन्वयन करती है। पूल के कार्यकलापों का बारीकी से मूल्यांकन करने व मानीटरिंग (अनुश्रवण) करने के लिए मानीटरिंग ग्रुप है। 1976 में जब से पूल ने कार्य आरंभ किया है, तब से भारत इसका सदस्य है। भारतीय समाचार पूल डेस्क का संचालन प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के द्वारा किया जा रहा है।

1.20.2 वर्ष के दौरान भारतीय समाचार पूल डेस्क ने अत्यंत कुशलता से कार्य किया। पूल डेस्क को प्राप्त होने वाले समाचारों में कमी आई। ये लगभग 48,000 शब्द प्रतिदिन से घटकर 30,000 शब्द प्रतिदिन हो गए। पी. टी. आई. ने चयन और संपादन के बाद पहले से अधिक अर्थात् कुल प्राप्त समाचारों का 15 प्रतिशत भाग भारतीय माध्यमों तक पहुंचाया। बाहर से मिलने वाले समाचारों की मात्रा में कमी का एक कारण वित्तीय कठिनाइयों की वजह से ट्यूनीशिया के साथ पी. टी. आई. के उपग्रह संपर्क का काम न करना है। पैन अफ्रीकन न्यूज एजेन्सीज के सभी समाचार पी. टी. आई. को इसी संपर्क से प्राप्त होते हैं।

1.20.3 वर्ष के दौरान सबसे महत्वपूर्ण घटना थी इरान (इरना) द्वारा जून 1992 में आयोजित गुटनिरपेक्ष समाचार एजेंसी पूल का छठा महासम्मेलन। इसमें 73 समाचार एजेंसियों तथा जन-संचार माध्यम संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए। इनमें से 6 प्रेक्षक तथा 7 अतिथि वर्ग के थे। भारत को सर्वसम्मति से सप्ताह भर के इस सम्मेलन का रिपोर्टर जनरल चुना गया। भारत को पूल विचार विमर्श के निगरानी ग्रुप तथा समन्वय समिति के सदस्य के रूप में भी फिर से चयन हुआ। सम्मेलन में भाग लेने वालों ने पूल को और अधिक मजबूत व कारगर बनाने में रुचि दिखाई।

1.20.4 पी. टी. आई. ने भारतीय जन संचार संस्थान को समाचार एजेंसी पत्रकारिता पाठ्यक्रम चलाने में अपना सहयोग जारी रखा। इस पाठ्यक्रम में अफ्रीका, एशिया तथा लैटिन अमरीका की पूल की सदस्य एजेंसियों के पत्रकारों को प्रशिक्षण दिया गया।

विविध

1.21.1 सरकार ने 30 सितम्बर, 1992 को दिल्ली, बंबई, मद्रास तथा कलकत्ता में दूरदर्शन के मेट्रो चैनल तथा आकाशवाणी के एफ. एम. चैनल पर निजी निर्माताओं को समय आबंटित करने की योजना की अधिसूचना जारी की। इसके लिए निजी निर्माताओं का चयन इस उद्देश्य के लिए बनाई गई भारतीय प्रसारण समय समिति द्वारा किया जाएगा।

1.21.2 पूर्वोत्तर राज्यों के फिल्म निर्माताओं की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए गुवाहाटी में केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड का नया क्षेत्रीय कार्यालय खोला गया है। इस कार्यालय के लिए सलाहकार पैनल बन गया है और गुवाहाटी के बोर्ड के एक सदस्य की भी नियुक्ति हो चुकी है। गुवाहाटी में गीत एवं नाटक प्रभाग के उप निदेशक को इस कार्यालय के क्षेत्रीय अधिकारी के अधिकार दिए गए हैं।

1.21.3 कलकत्ता में फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान बनाने का निश्चय किया गया है। आठवीं योजना में इस कार्य के लिए 29.50 करोड़ रुपये रखे गए हैं। व्यय वित्त समिति ने इस परियोजना के लिए आवश्यक सरकारी स्वीकृति नवम्बर 1992 में प्रदान कर दी। पश्चिम बंगाल सरकार ने संस्थान के लिए ई. एम. बाई पास के समीप लगभग 40 एकड़ भूमि उपलब्ध कराई है। प्रधानमंत्री ने 10 अक्तूबर, 1992 को संस्थान का शिलान्यास किया।

अध्याय 2

योजना निष्पादन

2.1.1 मंत्रालय और इसकी जनसंचार इकाइयों का मुख्य उद्देश्य सरकार की नीतियों और कार्यक्रम संबंधी सूचना का व्यापक प्रचार-प्रसार करना और लोगों को राष्ट्र के समग्र विकास में भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। मंत्रालय के अधीन ये इकाइयां इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आपसी संवाद के पारंपरिक और लोक कला माध्यमों का इस्तेमाल करती हैं और साथ ही अपने जन संचार के अति आधुनिक इलैक्ट्रानिक माध्यमों का भी उपयोग करती है। संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने और विशेषकर सीमावर्ती और संवेदनशील क्षेत्रों में मीडिया इकाइयों की पहुंच को व्यापक बनाने के लिए मंत्रालय के योजना कार्यक्रमों में वर्तमान सुविधाओं को सुदृढ़ तथा विस्तृत बनाने पर ध्यान दिया गया है

2.1.2 वर्ष 1992-93 की वार्षिक योजना में प्रावधान और इसका उपयोग इस प्रकार है:-

1992-93 की वार्षिक योजना

(करोड़ रुपये में)

क्षेत्र	प्रावधान	अनुमानित व्यय (सं. अ.)
दूरदर्शन	265.16	201.93
आकाशवाणी	225.00	135.07
सूचना माध्यम	13.00	8.49
फिल्म माध्यम	29.84	22.87
योग	533.00	368.36

1993-94 की वार्षिक योजना के लिए योजना आयोग द्वारा अनुमोदित प्रावधान का विवरण इस प्रकार है:

1993-94 की वार्षिक योजना

(करोड़ रुपये में)

क्षेत्र	प्रावधान
दूरदर्शन	170.00
आकाशवाणी	203.00
सूचना माध्यम	10.36
फिल्म माध्यम	21.64
योग	405.00

2.1.3 योजना आयोग ने आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97) के लिए 3,634 करोड़ रुपये के प्रावधान को स्वीकृति दी है। आठवीं पंचवर्षीय योजना का क्षेत्रवार विवरण इस प्रकार है:-

(करोड़ रुपये में)

क्षेत्र	प्रावधान
दूरदर्शन	2300.00
आकाशवाणी	1134.95
सूचना माध्यम	75.40
फिल्म माध्यम	123.65
योग	3,634.00

2.1.4 1992-93 के दौरान प्रचार माध्यमों के योजना कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की उपलब्धियों का विवरण निम्नलिखित है:-

दूरदर्शन

2.2.1 1992-93 के दौरान (1 मार्च, 1993 तक) भोपाल, अगरतला और भुवनेश्वर में तीन स्टूडियो केन्द्र स्थापित किए गए। पांडिचेरी में एक कार्यक्रम निर्माण सुविधा केन्द्र स्थापित किया गया। पांच उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर–तिरुपति (10 किलोवाट), जगदलपुर (1 किलोवाट), जबलपुर (1 किलोवाट-अन्तरिम स्थापना), बरेली (10 किलोवाट) और अनंतपुर (1 किलोवाट से 10 किलोवाट की क्षमता वृद्धि) भी चालू किए गए। पुरी, वल्लभ नगर, मयूरम येलानाडु, कर्णपुर, रायसिंह नगर, कोंटई, कोटपुतली, नागपट्टिनम और रामपुर में 10 कम शक्ति के ट्रांसमीटर चालू किए गए हैं। रामपुर में कम शक्ति का ट्रांसमीटर जो बरेली में उच्च शक्ति ट्रांसमीटर के चालू हो जाने पर बंद कर दिया गया था अब फिर से चालू कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त चार बहुत कम शक्ति के ट्रांसमीटर किलहोट्रन, सांकू, दरास और तिमसोगम में भी चालू किये गये हैं। गुजरात में उपग्रह आधारित टेलीविजन सेवा शुरू की गई। 1992-93 के दौरान जो अन्य परियोजनाएं शुरू की गई उनमें 15 फरवरी 1993 से प्रादेशिक टेलीविजन सेवा कार्यक्रम रिले करने के लिए दूरदर्शन केन्द्र लखनऊ का कानपुर, इलाहाबाद और वाराणसी में उच्च शक्ति ट्रांसमीटरों के साथ माइक्रोवेव सम्पर्क स्थापित करना और औरंगाबाद में एक टेलीविजन ट्रांसपोजर की स्थापना करना शामिल है। पोर्टब्लेयर और बरेली में कार्यक्रम निर्माण सुविधा केन्द्र बनाने का कार्य पूरा हो गया है और जो 1 मार्च 1993 को चालू होने वाले थे। धारवाड़ में एक उच्च शक्ति ट्रांसमीटर और पुरूलिया, खम्बात, सुजानगढ़ झारग्राम और भीमवरम में कम शक्ति का एक-एक ट्रांसमीटर भी चालू होने की आशा है। झालदा में भी एक बहुत कम शक्ति का ट्रांसमीटर चालू होने वाला है।

2.2.2 जिन परियोजनाओं को जनवरी-मार्च 1993 तक पूरा कर लिए जाने का लक्ष्य है, वे हैं:- आइजोल में एक स्टूडियो, बाड़मेर में (1 किलोवाट-अन्तरिम स्थापना), भुज (1 किलोवाट-अन्तरिम स्थापना), कालीकट (1 किलोवाट-अन्तरिम स्थापना), बूंदी (10 किलोवाट) और शिमला में (1 किलोवाट), का एक एक उच्च शक्ति ट्रांसमीटर और 22 कम शक्ति के ट्रांसमीटर।

2.2.3 चालू वर्ष में दूरदर्शन कार्यक्रमों के अंतर्राष्ट्रीय विपणन से 2,50,000 अमरीकी डालर की आमदनी का अनुमान है। दूरदर्शन कार्यक्रमों की स्थानीय बिक्री से करीब 20 लाख रु. अर्जित होने का अनुमान है।

2.2.4 दूरदर्शन की विज्ञापनों से कमाई में लगातार वृद्धि हुई है अनुमान है कि इस वर्ष करीब 350 करोड़ रुपये एकत्र होंगे। विदेशी टेलीविजन नेटवर्क से प्रतियोगिता के बावजूद पिछले वर्ष की तुलना में आय में 50 करोड़ रु. की वृद्धि होगी।

आकाशवाणी

2.3.1 1992-93 के दौरान 4 दिसम्बर 1992 तक आकाशवाणी ने निम्नलिखित स्थानों पर प्रसारण केन्द्र चालू किए हैः सवाई माधोपुर, पटियाला, कसौली (रिले केन्द्र), चुरू, पूर्णिया, चाइबासा, हजारीबाग, हाफलोंग, कैलाशहर, बेलोनिया, अकोला, रायगढ़, कोल्हापुर, शहडोल, बालाघाट, सतारा, यवतमाल, होसपेट और कुरनूल।

2.3.2 वर्ष के दौरान अन्य परियोजनाएं भी चालू की गई। ये हैं:- लखनऊ (10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), जालंधर (2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर), गुवाहाटी (50 किलोवाट शार्ट वेव ट्रांसमीटर), कलकत्ता (100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर) और भोपाल (3 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर)

2.3.3 जो प्रसारण केन्द्र तैयार हो चुके हैं तथा शीघ्र ही जिनके शुरू हो जाने की आशा है वे हैं: झालावाड़, हमीरपुर, फैजाबाद, झांसी, ओबरा, जैसलमेर, चन्द्रपुर, धुले, गुना, नासिक, सागर, रायचूर, मर्कापुरम, मरकारा और बरेली

2.3.4 अन्य जो परियोजनाएं शुरू होने वाली हैं वे हैं:- जयपुर (50 किलोवाट शार्ट वेव ट्रांसमीटर), जम्मू (3 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर), परभनी (टाइप 1 आर स्टूडियो), और तिरूअनंतपुरम (50 किलोवाट ट्रांसमीटर)

2.3.5 मार्च, 1993 तक तकनीकी रूप से जो प्रसारण केन्द्र तैयार हो जाएंगे वे हैं: धर्मशाला, भदरवाह, पुंछ, भवानीपटनम, बरहामपुर, बोलनगीर, डिफू, गऊरकोंडा, डाल्टनगंज, नौगांव, रहवा, करवार, ऊटकमंड, नूंगकोगेन, इडुक्की और कगयकलम।

2.3.6 इनके अतिरिक्त मार्च, 1993 तक जो अन्य परियोजनाएं तैयार हो जाने की आशा है वे हैं:- बीकानेर (2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), शिमला (50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर), श्रीनगर (10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), जालंधर (स्टूडियो का पुनः निर्माण), पासीघाट (10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), गंगतोक (20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), इम्फाल (50 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), इटानगर (टाइप 1 आर स्टूडियो) (100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), तुरा (टाइप आर/स्टूडियो), तेजू (एम.पी. स्टूडियो), पासीघाट (एम.पी. स्टूडियो), गुवाहाटी (अतिरिक्त स्टूडियो), गंगतोक (10 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर), इटानगर (10 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर), कलकत्ता (50 किलोवाट शार्ट वेव ट्रांसमीटर),

कलकत्ता (2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), जयपुर (100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), जबलपुर (टाइप-1 आर स्टूडियो), बम्बई (50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर), पणजी (2x250 किलोवाट शार्ट वेव ट्रांसमीटर), भोपाल (50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर), बम्बई (स्टूडियो का पुनः निर्माण), मद्रास (50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर), मद्रास (2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर), मद्रास (मल्टी ट्रैक रिकार्डिंग तथा स्टीरियो ट्रांसमिशन), त्रिचिरापल्ली (स्टूडियो का पुनः निर्माण), बंगलूर (4x500 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर), त्रिचूर (100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर) और हैदराबाद (50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर)।

सूचना माध्यम

2.4.1 समाचार महत्व वाले प्रलेखों के संप्रेषण की प्रक्रिया को तेज करने तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये कम से कम समय में गंतव्य स्थान तक पहुंच सकें, पत्र सूचना कार्यालय, कम्प्यूटरीकरण के लिए तैयारी कर रहा है। कार्यालय उपग्रह के माध्यम से अपने क्षेत्रीय कार्यालयों से पहले ही जुड़ा हुआ है। 1992-93 के दौरान शाखा कार्यालयों में कम्प्यूटर लगाने, फैक्स मशीन आदि लगाकर संचार प्रणाली को आधुनिक बनाने जैसी योजनाएं पूरी की जानी है।

2.4.2 विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने मुख्यालय स्थित वर्तमान कम्प्यूटर प्रणाली को उन्नत बनाने का कार्य शुरू किया है।

2.4.3 आशा है फोटो प्रभाग भी अपनी आधुनिकीकरण योजना के अंतर्गत (i) श्याम-श्वेत आटो प्रिंटर व प्रोसेसर, (ii) एनलार्जिंग उपकरण (रंगीन एवं श्याम-श्वेत), (iii) तापमान नियन्त्रण इकाई (iv) जम्बो डिश, प्राप्त कर लेगा। इसके अलावा कम्प्यूटरीकृत फोटो डाटा बैंक की स्थापना की भी योजना है।

2.4.4 भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक ने 1992-93 के दौरान मुख्यालय स्थित वर्तमान कम्प्यूटर प्रणाली को उन्नत बनाने के लिए एक योजना तैयार की है।

2.4.5 भारतीय जनसंचार संस्थान ने ऑफसेट प्रिंटिंग सुविधाओं के पूर्णतः परिचालन के लिए आवश्यक प्रबन्ध किए हैं। डी.टी.पी. प्रणाली के लिए आवश्यक साफ्टवेअर भी खरीदा जा रहा है। स्टूडियो और निर्माण सुविधाओं को आधुनिक बनाने की प्रक्रिया भी जारी है। समुचित मरम्मत और देखरेख सुविधाओं और पर्याप्त स्टाफ के प्रबंध भी किए जा रहे हैं।

2.4.6 लोधी रोड में सूचना भवन के दूसरे और तीसरे चरण का निर्माण कार्य पूरा हो गया है और कुछ मीडिया इकाइयों को इन परिसरों में स्थानांतरित कर दिया गया है।

2.4.7 गीत और नाटक प्रभाग ने वर्ष के दौरान संवेदनशील क्षेत्रों में अपनी गतिविधियां बढ़ाने के लिए ठोस उपाय किए। स्थानीय प्रतिभा विशेषकर लोक एवं परंपरागत समूहों की प्रतिभा के उपयोग से स्थानीय बोलियों में प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयास किए गए। गुवाहाटी क्षेत्रीय केन्द्र ने उत्तर-पूर्व के 7 राज्यों में एक भावनात्मक एकता अभियान का आयोजन किया जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम के अलावा विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा शांति मार्च का आयोजन भी किया गया। प्रभाग की ध्वनि और प्रकाश इकाई ने पंजाब, राजस्थान, उत्तर-प्रदेश, आंध्र प्रदेश, जम्मू-कश्मीर में कार्यक्रम आयोजित किए।

2.4.8 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय ने अपने प्रचार अभियान को सुदृढ़ करने के लिए दो प्रेरक कथाचित्रों के 220 प्रिंटों और 100 कैसेटों और 2 फीचर फिल्मों के 11 प्रिंटों का आदेश दिया है जिनकी कीमत 30.5 लाख रुपये है। क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय द्वारा 1992-93 में दस कार्यक्रम आयोजित करने की संभावना है।

फिल्म माध्यम

2.5.1 फिल्म प्रभाग ने एक फिल्म माध्यम संक्षिप्त कथाचित्र का निर्माण कार्य पूरा कर लिया है और 21 अन्य निर्माणाधीन हैं। श्याम-श्वेत प्रिंटों को रंगीन प्रिंटों में बदलने का कार्य जारी है। नई दिल्ली स्थित फिल्म प्रभाग के सभागार का नवीकरण कार्य पूरा हो गया है। बम्बई स्थित फिल्म प्रभाग भवन के तीसरे चरण का प्रारंभिक कार्य जारी है। चार अन्य कम्प्यूटर टर्मिनल स्थापित किए गए हैं। अनुसूचित जाति/जनजाति के उत्थान विषय पर फिल्म प्रभाग ने एक संक्षिप्त कथाचित्र का निर्माण शुरू किया है जिसका नाम है 'मैत्री' की वर्मी में कर्ण-कुन्ती संवाद'। फिल्म प्रभाग की फिल्मों की तालिका को पूरा करने का कार्य भी जारी है

2.5.2 1992-93 के दौरान भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार को उसकी सात योजनाएं जारी रखने के लिए 120 लाख रुपये का बजट अनुदान दिया गया है। ये हैं:- (1) वातानुकूलित फिल्म भंडार, सभागार व प्रशासनिक खंड वाला नया भवन, (2) नॉइट्रेट फिल्मों के विशिष्ट भंडारों का निर्माण और नाइट्रेट फिल्मों का सुरक्षित भंडार में स्थानान्तरण (3) अभिलेखीय फिल्मों (भारतीय और विदेशी) को प्राप्त करना; (4) सहायक फिल्म सामग्री और पुस्तकें, पत्रिकाएं, चित्र आदि प्राप्त करना; (5) अभिलेखीय जानकारी का कम्प्यूटरीकरण करना, (6) सदस्यता के आधार पर अभिलेखीय प्रदर्शन; फिल्म समीक्षा पाठ्यक्रमों, व्याख्यानों, गोष्ठियों और फोटो प्रदर्शनियों का आयोजन करना और (7) भारतीय फिल्म कला की वार्षिक पुस्तिका और अन्य अनुसंधान पत्रों का प्रकाशन करना तथा भारतीय एवं विदेशी फिल्मों के संवाद अन्य भाषाओं में अनुवाद करना। ये सभी योजनाएं कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं

2.5.3 भारतीय बाल फिल्म समिति अब बाल एवं युवा फिल्मों के राष्ट्रीय केन्द्र के नाम से जाना जाता है। इसने दो कथा फिल्में और दो दूरदर्शन धारावाहिक, जो क्रमशः 20 और 8 भागों के हैं, पूरे कर लिए हैं। एक कथा फिल्म, एक लघु फिल्म और एक दूरदर्शन धारावाहिक के आगे के भाग निर्माणाधीन हैं। इसके अलावा तीन कथा फिल्में दूरदर्शन पर दिखाई जा चुकी है। ये केंद्र कई अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सवों में भाग ले चुका है।

2.5.4 फिल्म समारोह निदेशालय ने भारत और विदेशों में दो विशेष फिल्म समारोह आयोजित किए और सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत 8 फिल्म समारोहों का भारत में और 6 का विदेशों में आयोजन किया। निदेशालय ने 6 भारतीय फिल्म सप्ताहों का विदेशों में और 6 विदेशी फिल्म सप्ताहों का भारत में आयोजन किया। 1992 में राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित किया गया। भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह-93 का आयोजन 10 से 20 जनवरी तक दिल्ली में किया गया। भारतीय फिल्म झांकी के लिए 20 कथा और 10 गैर-कथा फिल्मों के अन्य भाषाओं में अनुवाद के साथ प्रिंट तैयार किए गए। सिरीफोर्ट फिल्मोत्सव परिसर के अभ्यास हाल को मिनी थियेटर में बदलने का कार्य पूरा कर लिया गया और भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 93 में भारतीय फिल्म झांकी की फिल्मों का इसमें प्रदर्शन किया गया।

2.5.5 1992-93 के दौरान राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा दूरदर्शन और अन्य एजेंसियों के साथ 17 फिल्मों का निर्माण/सहनिर्माण करने की आशा है। 1992-93 के दौरान करीब 180 फिल्मों के आयात/वीडियो प्रदर्शन अधिकार प्राप्त किए जाने की आशा है। वर्ष के दौरान चार थियेटरों के निर्माण के लिए ऋण दिए जाने की आशा है। निगम द्वारा 120 फिल्मों के सीधे निर्यात का लक्ष्य प्राप्त कर लिए जाने की आशा है। निगम का वर्ष के दौरान 35 एम.एम. की 100 फिल्मों और 16 एम.एम. की 75 फिल्मों के संवाद अन्य भाषाओं में अनुवाद करने का भी प्रस्ताव है.

2.5.6 केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड ने भी 1992-93 के दौरान अपनी गतिविधियां जारी रखीं। विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों में मूल सुविधाओं को बढ़ाया जा रहा है। केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड, बम्बई में कम्प्यूटरीकरण के लिए एक विस्तृत योजना तैयार की गई है और इसका कार्यान्वयन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र को सौंपा गया है।

2.5.7 भारतीय फिल्म और दूरदर्शन संस्थान, पुणे ने निर्देशन विभाग के लिए दो टेलीविजन और दो वी.सी.आर लिए और छायांकन विभाग के लिए एनामारफिक फाइन्डर प्राप्त किया। संस्थान ने स्टडर रिकार्डर और एम्पलीफायर/स्पीकर प्रणाली भी प्राप्त की प्रशीतन संयंत्र और 35 एम.एम. प्रोसेसिंग मशीन का नवीकरण किया गया है। इसके अलावा प्रयोगशाला के लिए 3-1 एच पी सेंटीफ्यूगल पम्प, फिल्म प्रिंटर आदि भी लिए गए हैं। मरम्मत विभाग के लिए ऐरीफ्लेक्स कैमरा व आसिलोस्कोप के फालतू हिस्से-पुर्जे खरीदे गए हैं और प्रोजेक्शन विभाग के लिए 35 एम.एम. प्रोजेक्टर प्राप्त किया गया है. इलेक्ट्रानिक माध्यमों में हो रहे नए-नए तकनीकी विकासों के अनुरूप नए पाठ्यक्रम शुरू करने और प्रशिक्षण क्षमता में वृद्धि करने की बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है कि कलकत्ता में भी फिल्म व टेलीविजन संस्थान खोला जाएगा

दूरदर्शन

2.6 वर्ष 1993-94 के लिए दूरदर्शन के लक्ष्यों में पटना, शिमला, इटानगर, कलकत्ता (दूसरा चैनल), मद्रास (दूसरा चैनल) में स्टूडियो परियोजनाओं और जम्मू, सिलिगुड़ी में कार्यक्रम निर्माण सुविधा केन्द्र को पूरा करना है. 1993-94 के लक्ष्यों में जैसलमेर (सीमा क्षेत्र प्रसारण सुविधा के अधीन) में उच्च शक्ति (10 किलोवाट) टेलीविजन ट्रांसमीटर, लेह, गंगटोक, लुंगलई, मोकोकचुंग और चुराचांदपुर में उच्च शक्ति (एक किलोवाट) टेलीविजन ट्रांसमीटर लगाना भी शामिल है। इसके अलावा इस वित्तीय वर्ष में 58 कम शक्ति/बहुत कम शक्ति के टेलीविजन ट्रांसमीटर लगाने का भी लक्ष्य रखा गया है। जबलपुर के उच्च शक्ति ट्रांसमीटर की क्षमता 1 किलोवाट से 10 किलोवाट बढ़ाने और जैसलमेर व रामेश्वरम में उच्च शक्ति ट्रांसमीटर टेलीविजन टावर को पूरा करना भी 1993-94 के लिए निर्धारित किया गया है। विविध योजनाओं के अंतर्गत जालंधर, चुराचांदपुर, लुंगलई, जबलपुर, मोकोकचुंग, इटानगर और पोर्ट ब्लेअर में कर्मचारी आवासों के निर्माण कार्य को पूरा करना शामिल है।

आकाशवाणी

2.7. 1993-94 की वार्षिक योजना में जिन लक्ष्यों को पूरा करने का विचार है उसमें शामिल हैं: 10 पूर्ण रेडियो स्टेशनों, दो रिले केन्द्रों, 6 मीडियम वेव ट्रांसमीटरों, 6 वी एच एफ (एफ एम) ट्रांसमीटरों की स्थापना और 6 मीडियम वेव ट्रांसमीटरों और 3 शार्ट वेव ट्रांसमीटरों की क्षमता में वृद्धि करना. पांच स्टूडियो/सहायक स्टूडियो के नवीनीकरण का भी प्रावधान किया गया है

सूचना माध्यम

2.8.1 पत्र सूचना कार्यालय की संचार व्यवस्था के आधुनिकीकरण का प्रस्ताव है ताकि कार्यालय के लिए समन्वित प्रणाली उपलब्ध करायी जा सके. 1993-94 के दौरान विभिन्न कार्यालयों के लिए टेलीफोटो रिसीवर, कम्प्यूटर प्रणाली और साफ्टवेयर पैकेज खरीदने का प्रस्ताव है।

2.8.2 प्रकाशन विभाग का गुवाहाटी और शिलांग में बिक्री एम्पोरियम और अहमदाबाद में बिक्री काउंटर खोलने का प्रस्ताव

है। प्रभाग का योजना पत्रिका को उड़िया भाषा में निकालने का भी प्रस्ताव है।

2.8.3 1993-94 की वार्षिक योजना में विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय का विकासात्मक प्रचार कार्यक्रम के लिए 30 लाख रुपये के खर्च का प्रस्ताव है।

2.8.4 फोटो प्रभाग अपनी रंगीन इकाइयों के आधुनिकीकरण के लिए नवीनतम तकनीक प्राप्त करेगा। एक कम्प्यूटरीकृत फोटो डाटा बैंक प्रणाली भी प्राप्त करने का प्रस्ताव है जिसमें एक मुख्य कम्प्यूटर एकक तथा तीन/चार टर्मिनल लगाए जाएंगे

2.8.5 गीत और नाटक प्रभाग का 1993-94 के दौरान 206 ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है। रांची कार्यालय, मध्य प्रदेश, बिहार और उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में समूहों द्वारा 600 कार्यक्रम आयोजित करेगा। सीमावर्ती व अशांत क्षेत्रों में विशेष प्रचार अभियान आयोजित किए जाएंगे।

2.8.6 क्षेत्रीय प्रचार विभाग द्वारा राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण, साम्प्रदायिक सद्भाव इत्यादि विषयों पर फिल्में/वृत्तचित्र खरीदने का प्रस्ताव है। इसका अपने क्षेत्रीय कार्यालयों का कम्प्यूटरीकरण करने का भी प्रस्ताव है।

2.8.7 सूचना भवन के चौथे चरण का निर्माण कार्य शुरू करने का प्रस्ताव है।

2.8.8 भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक का 1993-94 के दौरान अपने कलकत्ता क्षेत्रीय कार्यालय को कम्प्यूटर द्वारा मुख्यालय से जोड़ने का प्रस्ताव है।

2.8.9 मुख्य सचिवालय का वेतन एवं लेखा कार्यालय को मंत्रालय की बढ़ती हुई गतिविधियों के कारण सुदृढ़ बनाने का प्रस्ताव है। दूसरे राष्ट्रीय चैनल को चलाने के लिए एक संयुक्त क्षेत्र की कम्पनी में इक्विटी पूंजी में अंशदान का प्रावधान भी रखा गया है

2.8.10 भारतीय जनसंचार संस्थान का भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए होस्टल का निर्माण शुरू करने का प्रस्ताव है प्रिंटिंग प्रेस का आधुनिकीकरण, जनसंचार सूचना बैंक व मीडिया पुस्तकालय की स्थापना व रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता सुविधाओं के आधुनिकीकरण और विस्तार का भी प्रस्ताव है।

फिल्म माध्यम

2.9.1 फिल्म प्रभाग का खास तौर पर ग्रामीण दर्शकों के लिए 16 एम.एम. के विशेष संक्षिप्त कथाचित्र बनाने का प्रस्ताव है। इसके अलावा श्याम-श्वेत प्रिंटों की जगह रंगीन प्रिंट लिए जाएंगे सिनेमा उपकरणों को बदला और बढ़ाया जाएगा और बम्बई में फिल्म प्रभाग भवन के तीसरे चरण के निर्माण का कार्य शुरू किया जाएगा।

2.9.2 राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार फिल्मों के रख-रखाव के लिए विशेष भंडारों का निर्माण करेगा तथा भारतीय एवं विदेशी अभिलेखीय फिल्में आदि प्राप्त करेगा

2.9.3 भारतीय फिल्म और दूरदर्शन संस्थान, पुणे का विभिन्न विभागों के लिए नई मशीनें और उपकरण प्राप्त करने का प्रस्ताव है।

2.9.4 1993-94 के दौरान कलकत्ता में फिल्म और दूरदर्शन संस्थान की स्थापना के लिए, जमीन को समतल बनाने और इसके विकास कार्य को पूरा करने तथा भवन निर्माण का कार्य शुरू करने की योजना है।

2.9.5 भारतीय बाल व युवा फिल्म समिति बच्चों के लिए संक्षिप्त कथाचित्र तथा लघु फिल्में बनाएगी। इसकी सामान्य गतिविधियों के अंतर्गत डबिंग और सब-टाइटलिंग का कार्य भी आगे बढ़ाया जाएगा। निर्माण सुविधाओं में वृद्धि और आधुनिकीकरण के अलावा विदेशी फिल्में भी खरीदी जाएंगी अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव के आयोजन का भी प्रस्ताव है।

2.9.6 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा 14 अच्छी फिल्में स्वयं अथवा दूरदर्शन और विदेशी निर्माताओं के साथ सह-निर्माण के आधार पर बनाने का प्रस्ताव है। इसके अलावा लगभग दस फिल्मों के लिए ऋण दिये जाएंगे। निगम, वर्ष के दौरान 10 नए थियेटरों के निर्माण के लिए ऋण उपलब्ध कराएगा अनुमान है कि 120 कथा फिल्में आयात की जाएंगी तथा 80 वीडियो फिल्मों के प्रदर्शन अधिकार लिए जाएंगे।

2.9.7 केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड कुछ उपकरणों की खरीद के अलावा अपने बम्बई मुख्यालय तथा अपने क्षेत्रीय कार्यालयों की गतिविधियां जारी रखेगा

2.9.8 फिल्म समितियों को अपनी योजनाबद्ध गतिविधियों के लिए सहायता अनुदान देने का प्रावधान भी रखा गया है।

2.9.9 फिल्म महोत्सव निदेशालय द्वारा भारत और विदेशों में पांच/छः फिल्म सप्ताह आयोजित करने का प्रस्ताव है। दो विशेष फिल्म समारोह विदेशों में भी आयोजित किए जाएंगे। यह विदेशों के लगभग 45 फिल्म समारोहों में भी भाग लेगा। 'भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव- 1994' जनवरी, 1994 में होगा। 'भारतीय फिल्म झांकी के सब टाइटल वाले प्रिंट तथा अन्य उत्कृष्ट फिल्में तैयार की जाएंगी सिरी फोर्ट में फिल्मोत्सव परिसर में भी कुछ काम (संयोजन और परिवर्तन सहित) किया जाएगा।

अध्याय 3

संगठन

मुख्य सचिवालय

3.1 मंत्रालय के मुख्य सचिवालय का प्रमुख सचिव होता है। उसकी सहायता के लिए दो अपर सचिव और तीन संयुक्त सचिव होते हैं। इसके अलावा मंत्रालय की विभिन्न शाखाओं में निदेशक/उप-सचिव स्तर के 11 अधिकारी, अवर सचिव श्रेणी के 16 अधिकारी, 41 अन्य राजपत्रित अधिकारी तथा 275 अराजपत्रित कर्मचारी भी कार्यरत हैं। मंत्रालय का संगठन संबंधी चार्ट परिशिष्ट-1 में दिया गया है।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति

3.2.1 अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों को मंत्रालय के अंतर्गत सेवाओं और पदों में उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए सरकार की नीति और आदेशों के अनुपालन का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। मंत्रालय ने प्रयास किया कि अधीनस्थ विभिन्न सेवाओं और पदों में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षित स्थान कम से कम खाली रहें। उन प्रयासों के जरिये मंत्रालय और इसके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में एक जनवरी 1992 को कुल कर्मचारियों की तुलना में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के कर्मचारियों का प्रतिशत बढ़कर इस प्रकार हो गया है:-

	वर्ग-क	वर्ग-ख	वर्ग-ग	वर्ग घ
अनुसूचित जाति	10.01	13.38	16.48	32.8
अनुसूचित जनजाति	4.16	3.61	6.68	10.02

3.2.2 मंत्रालय ने 1991-92 में सीधी भर्ती कोटे में अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए आरक्षित खाली पड़े स्थानों को भरने के लिए विशेष भर्ती अभियान चलाए। 1992 में चलाए गए विशेष भर्ती अभियानों के दौरान सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में इन वर्गों के लिए आरक्षित अधिकतम खाली स्थान भर लिए गए हैं।

3.2.3 आरक्षण संबंधी आदेशों को लागू करने के काम की देखरेख तथा इसमें तालमेल के लिए मंत्रालय में समन्वय अधिकारी की निगरानी में एक सेल कार्य कर रहा है। मंत्रालय के उप-सचिव और मुख्य सतर्कता अधिकारी समन्वय अधिकारी के रूप में काम करते हैं। मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत आने वाले संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक उपक्रमों में आरक्षण के लिए रोस्टर बनाए गए हैं।

3.2.4 अनुसूचित जातियों और जनजातियों के अधिकारियों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत देश में तथा विदेशों में प्रशिक्षण देने पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। मंत्रालयों को सेवाओं में आरक्षण के बारे में जानकारी देने वाले पाठ्यक्रमों के महत्व की पूर्ण जानकारी है। जब भी सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबंध संस्थान द्वारा पाठ्यक्रम शुरू करने की सूचना दी जाती है, मंत्रालय कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए अवश्य वहां भेजता है।

3.2.5 मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आने वाली स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में भी अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के लिए आरक्षण नीति पर अमल हो रहा है। इन संस्थाओं/उपक्रमों में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, भारतीय जन संचार संस्थान, भारतीय प्रेस परिषद और राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र शामिल हैं।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग

3.3.1 मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति राजभाषा विभाग और केन्द्रीय हिन्दी समिति द्वारा निर्धारित नीतियों के अनुसार हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सलाह देती है। इस वर्ष समिति की 4 बैठकें

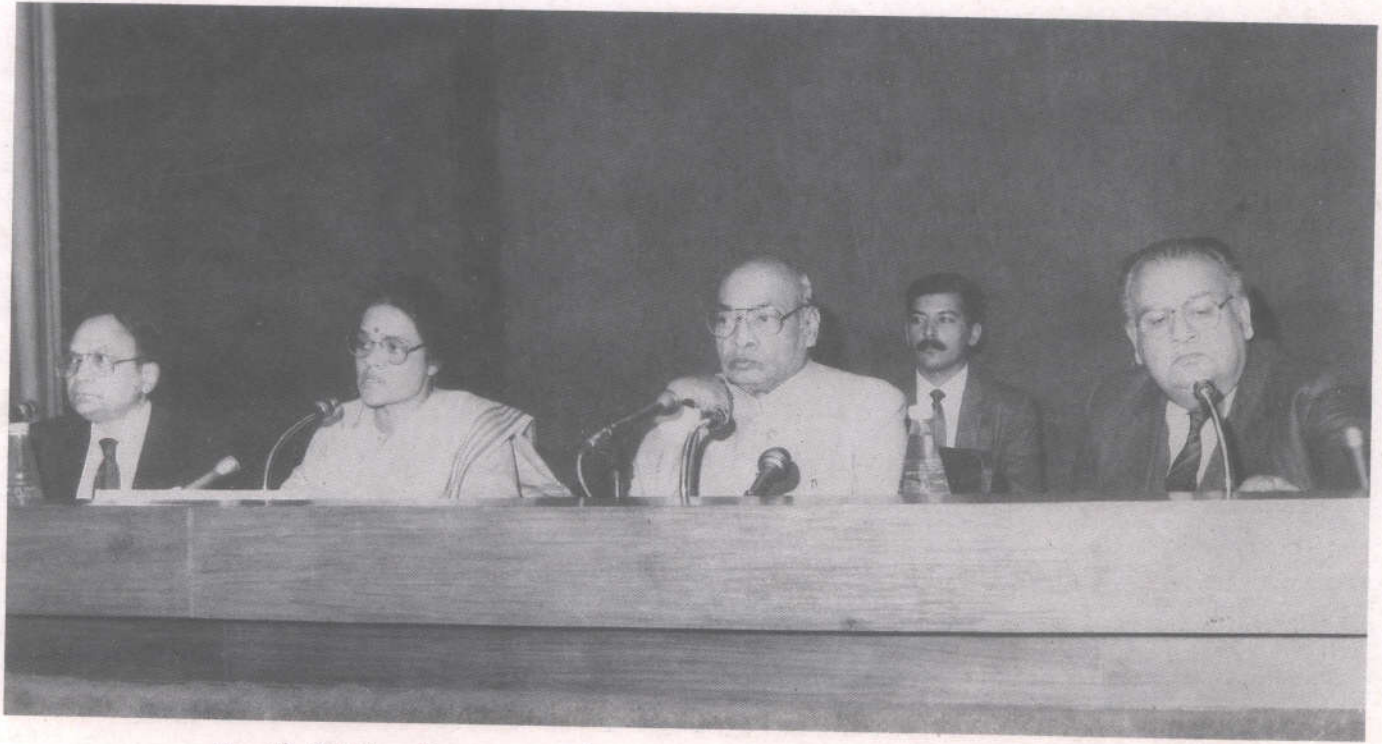

प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव सूचना और प्रसारण मंत्रालय की एक उच्च-स्तरीय बैठक में भाग लेते हुए

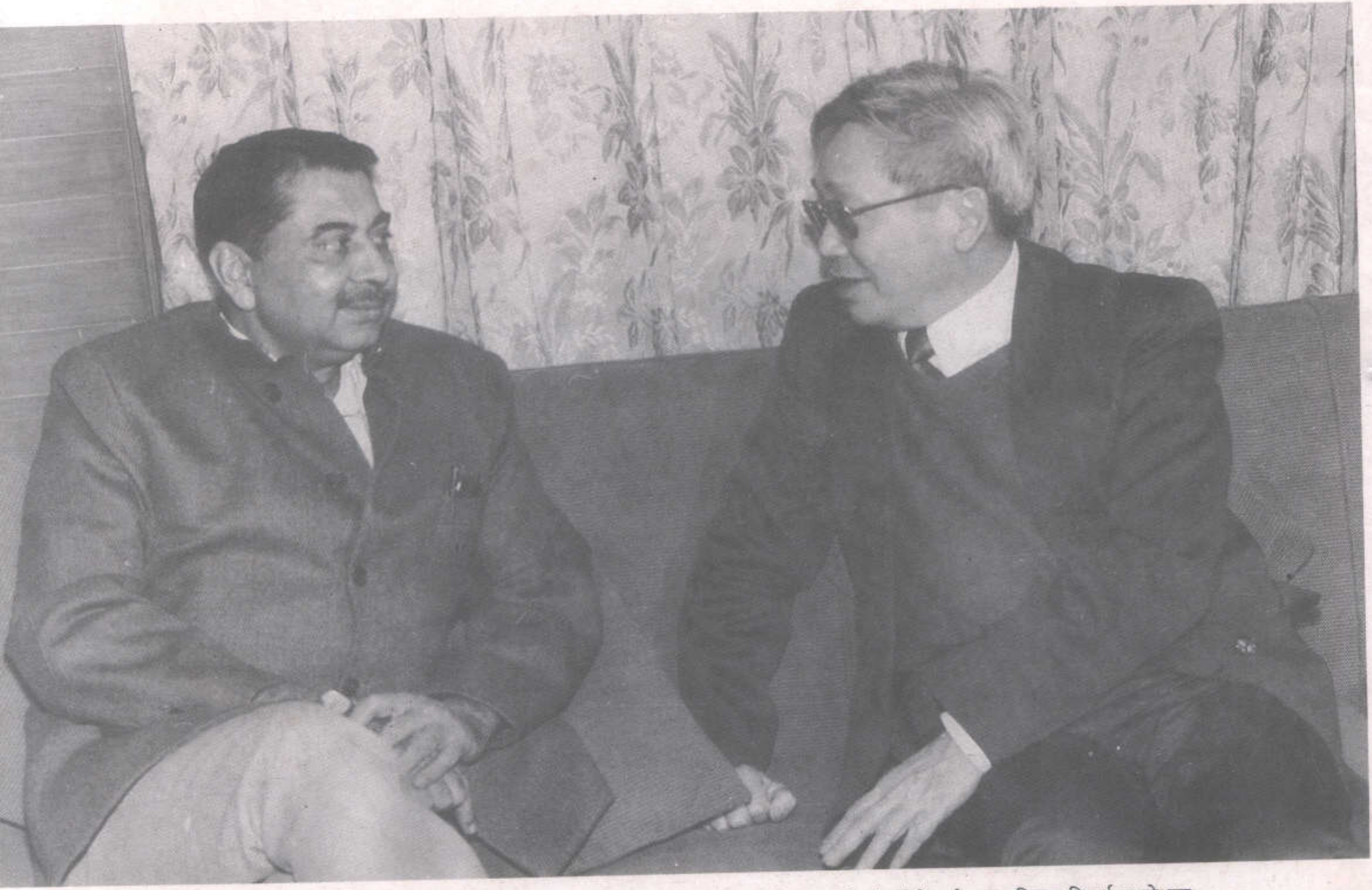

सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री श्री के.पी. सिंह देव चीन के रेडियो, फिल्म एवं टेलीविजन मंत्री श्री झीसेंग के साथ विचार-विमर्श करते हुए, नई दिल्ली, 2 फरवरी, 1993

सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री श्री के.पी. सिंह देव उज्बेकिस्तान के टेलीविजन और रेडियो मंत्री श्री हैतबाव से विचार-विमर्श करते हुए, नई दिल्ली, 20 जनवरी, 1993

सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा इस्लामी गणराज्य ईरान के श्री मोहम्मद हाशमी के साथ रेडियो और टेलीविजन के क्षेत्र
में सहयोग के लिए ज्ञापन समझौते पर हस्ताक्षर के बाद दस्तावेजों का आदान-प्रदान करते हुए, नई दिल्ली, 21 अक्तूबर, 1992

हुईं। समिति के सदस्यों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए बहुमूल्य सुझाव दिए।

3.3.2 मंत्रालय और इसके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा क्रियान्वयन समितियां भी काम कर रही हैं। इन समितियों ने समय-समय पर अपनी बैठकों में अपने-अपने कार्यालयों में सरकारी कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए किये जा रहे कार्य की समीक्षा की. इसकी रिपोर्ट पर मंत्रालय में विचार किया गया और सुधार के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए. इस वर्ष मंत्रालय की राजभाषा क्रियान्वयन समिति की तीन बैठकें हुईं।

3.3.3 संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति ने मंत्रालय के दस कार्यालयों का दौरा किया और हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में मिली सफलता की समीक्षा की। मंत्रालय की ओर से मुख्यालय का एक वरिष्ठ अधिकारी निरीक्षण के दौरान साथ था समिति की टिप्पणियों के आधार पर आवश्यक कार्रवाई की गई।

3.3.4 सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रचलन को बढ़ावा देने के लिए 14 से 22 सितंबर 1992 तक मंत्रालय में हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इस दौरान हिन्दी टंकण, निबंध लेखन, टिप्पण तथा प्रारूप लेखन और अनुवाद की प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वालों को प्रशस्ति पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

3.3.5 राजभाषा नियम (संघ के कार्य में राजभाषा का इस्तेमाल) 1976 के नियम 10(4) के अनुसार मंत्रालय के मुख्य सचिवालय सहित अधिसूचित कार्यालयों की संख्या अब 357 हो गई है. इन अधिसूचित कार्यालयों में 80 प्रतिशत या इससे अधिक कर्मचारी हिन्दी की कामचलाऊ जानकारी हासिल कर चुके हैं.

3.3.6 सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के इस्तेमाल में प्रगति का जायजा लेने के लिए विभिन्न मीडिया इकाइयों के कई कार्यालयों का मुआयना किया गया। इन कार्यालयों में निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों को दूर करने का आग्रह किया गया. हिन्दी प्रयोग और हिन्दी टिप्पण तथा आशुलिपि में प्रशिक्षण की गति बढ़ाने के लिए माध्यम इकाइयों से पत्राचार पाठ्यक्रम के लिए कर्मचारियों को नामित करने का आग्रह किया गया.

आंतरिक कार्य अध्ययन दल

3.4 (1) कार्यदल द्वारा मुख्य सचिवालय तथा माध्यम इकाइयों में इस्तेमाल होने वाले प्रपत्रों की समीक्षा, प्रक्रियाओं के सरलीकरण, अधिकारों को सौंपने, जवाबदेही तय करने तथा लोक शिकायतों के समाधान की दिशा में विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

(2) कार्यालय प्रक्रिया की नियमावली में निर्धारित संगठन तथा कार्यविधि (ओ.एण्ड. एम) प्रावधानों के बारे में 1992-93 के दौरान मुख्य सचिवालय के अनुभागों तथा माध्यम इकाइयों में लागू किए जाने के लिए एक कार्य योजना तैयार की गई है।

(3) मंत्रालय में संगठन तथा कार्यविधि संस्कृति विकसित करने के उद्देश्य से ओ.एण्ड.एम अधिकारी की अध्यक्षता में त्रैमासिक बैठकें आयोजित करने की जो परम्परा पिछले वर्ष शुरू की गई थी वह इस वर्ष भी जारी रही।

(4) दिसम्बर 1992 तक संगठन व कार्यविधि के दृष्टिकोण से मुख्य सचिवालय के 16 अनुभागों में वार्षिक निरीक्षण किया गया।

(5) मुख्य सचिवालय तथा माध्यम इकाइयों में तीन महीनों में 10 दिन के लिए फाइलों का रिकार्ड तैयार करने, उनकी जांच करने तथा अनावश्यक फाइलों को नष्ट करने के विशेष अभियान चलाने के कार्यक्रम तैयार किए गए है। दिसम्बर 1992 तक चलाए गए तीन विशेष अभियानों के दौरान 31,954 फाइलों के रिकार्ड तैयार किए गए, 31,532 की जांच की गई तथा 19,733 फाइलें नष्ट की गईं

(6) दिसम्बर 1992 तक 8 कार्य मूल्यांकन अध्ययन किए गए। इससे 1,79,364 रुपये की प्रत्यक्ष/एहतियाती बचत की जा सकी.

विभागीय लेखा

3.5 सरकारी लेखों (सिविल) के विभागीकरण की योजना लागू किए जाने के फलस्वरूप पहली अक्टूबर 1976 से सूचना और प्रसारण मंत्रालय के मुख्य लेखा अधिकारी का कार्यालय अस्तित्व में आया। इस योजना के अंतर्गत मंत्रालय का सचिव मुख्य लेखा अधिकारी होता है और अतिरिक्त सचिव (वित्तीय सलाहकार) वित्तीय परामर्श तथा लेखा संबंधी कामकाज देखता है। मुख्य लेखा नियंत्रक मंत्रालय के लेखा संगठन का प्रशासनिक तथा लेखा संबंधी मुखिया होता है, जिसके दायित्व इस प्रकार हैं:

क. मंत्रालय के लेखे का महालेखा नियंत्रक द्वारा निर्धारित विधि से संकलन करना।

ख. सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा नियंत्रित अनुदान मांगों के वार्षिक विनियोजन लेखे तैयार करना, केन्द्र सरकार के वित्त लेखों (सिविल) से संबंधित लेनदेन और सामग्री का ब्यौरा महालेखा नियंत्रक को भेजना।

ग. स्वायत्त संस्थाओं, समाचार एजेंसियों और निगमों को ऋण और अनुदान देना

घ. वेतन और लेखा अधिकारियों और मीडिया अधिकारियों को लेखा नियंत्रण के बारे में तकनीकी सलाह देना।

ड. देश भर में मंत्रालय के 567 आहरण और भुगतान अधिकारियों के वित्तीय लेनदेन की निगरानी करना।

2. मुख्य लेखा नियंत्रक इन कार्यों को चार उप लेखा नियंत्रकों और 18 वेतन और लेखा अधिकारियों के माध्यम से पूरा कराता है जिनके कार्यालय दिल्ली (7), कलकत्ता (3), बम्बई (3) , मद्रास (3), लखनऊ (1), और गुवाहाटी (1) में हैं।

3. इस संगठन की एक विशेषता है कि मंत्रालय और इससे संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के करीब 6000 राजपत्रित अधिकारियों के वेतन और भत्ते का भुगतान इसी संगठन के माध्यम से किया जाता है। यह कार्य राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र की सहायता से कम्प्यूटरों द्वारा किया जाता है। यह काम नई दिल्ली में 34 लेखा नियंत्रक (इरला) द्वारा किया जाता है।

4. इस वर्ष (अक्तूबर 1992 तक) वेतन और लेखा अधिकारी (इरला) ने 1,97,583 बिलों को निपटाया जिनमें से 51,551 राजपत्रित अधिकारियों के बिल थे। इसके अलावा सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों के पेंशन के 836 मामले और भविष्य निधि के अंतिम भुगतान के 620 मामले भी निपटाये गए। वेतन और लेखा कार्यालय ने सदस्य कर्मचारियों को भविष्य निधि खातों से संबंधित 35,533 वार्षिक विवरण भी भेजे।

5. मुख्य लेखा नियंत्रक के अधीन आंतरिक लेखा परीक्षण संगठन भी काम करता है। यह संगठन यह देखने के लिए कार्यालयों के प्रारम्भिक लेखों की जांच करता है कि लेखा तथा वित्तीय मामलों से संबंधित नियमों, विनियमों, प्रणालियों व प्रक्रियाओं का सभी कार्यालयों में सही ढंग से पालन किया जाए।

सतर्कता

3.6.1 संगठनात्मक ढांचा

मंत्रालय का सतर्कता तंत्र मंत्रालय के सचिव की देखरेख में काम करता है। इस काम में एक संयुक्त सचिव, मुख्य सतर्कता अधिकारी, एक अवर सचिव तथा अन्य अधीनस्थ कर्मचारी उनकी सहायता करते हैं।

मंत्रालय के अधीनस्थ एवं सम्बद्ध कार्यालयों की सतर्कता इकाइयों के मुखिया सतर्कता अधिकारी होते हैं, परन्तु सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों तथा पंजीकृत सोसाइटियों की सतर्कता इकाइयां उनके अपने अधिकारी की देखरेख में काम करती हैं। सम्बद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों व पंजीकृत सोसाइटियों की सतर्कता गतिविधियों का समन्वय मंत्रालय के सतर्कता अधिकारी करते हैं।

2. शिकायत समाधान तंत्र

मंत्रालय में एक विशेष शिकायत समाधान तंत्र काम कर रहा है। संयुक्त सचिव (पी एण्ड एफ) को शिकायत निदेशक बनाया गया है। माध्यम इकाइयों में भी कर्मचारी शिकायत अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। निर्धारित समय पर कर्मचारी तथा आम लोग इन अधिकारियों से मिल कर अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। ऐसे मामले निपटाए जाने की प्रगति पर बराबर नजर रखी जाती है।

3. एहतियाती सतर्कता

भ्रष्टाचार की संभावनाओं को कम करने के उद्देश्य से प्रक्रियाओं को सरल बनाने के प्रयास वर्ष भर जारी रहे। संदेहास्पद आचरण वाले व्यक्तियों पर बराबर नजर रखी गई। संवेदनशील पदों पर नियुक्त कर्मचारियों के जल्दी-जल्दी तबादले किए जाते रहे। नियमों तथा प्रक्रियाओं का सही पालन कराने की दृष्टि से वरिष्ठ अधिकारी जांच करते रहे। वर्ष के दौरान 64 नियमित तथा 17 आकस्मिक छापे मारे गए। 17 ऐसे लोगों की पहचान की गई है, जिन पर नजर रखने की आवश्यकता है।

4. दंडात्मक सतर्कता

अप्रैल से दिसम्बर 1992 की अवधि में विभिन्न स्रोतों से मंत्रालय को 242 शिकायतें मिलीं। इनका अध्ययन किया गया और 115 मामलों में प्रारम्भिक जांच के आदेश दिए गए। इनमें से 15 मामले केन्द्रीय जांच ब्यूरो को सौंपे गए। 40 मामलों की प्रारम्भिक जांच की रिपोर्ट वर्ष के दौरान प्राप्त हुई। 10 मामलों में बड़े दंड के लिए तथा 4 मामलों में छोटे दंड के लिए नियमित विभागीय कार्रवाई शुरू की गई। 9 मामलों में बड़े दंड तथा 3 मामलों में छोटे दंड के फैसले सुनाए गए। 13 कर्मचारियों को निलंबित किया गया और 6 कर्मचारियों को प्रशासनिक चेतावनियां जारी की गईं।

निलम्बित कर्मचारियों की कुल संख्या 21 है। इनमें से 10 मुख्य सचिवालय के और 11 व्यक्ति माध्यम इकाइयों के हैं।

अध्याय 4

आकाशवाणी

4.1.1 आकाशवाणी ने सार्क पर्यावरण वर्ष के बारे में विस्तृत प्रचार-प्रसार किया। लोगों में इस समस्या के महत्व के संबंध में जागरूकता पैदा करने और इस चुनौती का सामना करने की दिशा में उठाये गये कदमों की जानकारी देने के लिए कई कार्यक्रम प्रसारित किये गये।

4.1.2 राष्ट्रीय एकता, आपसी सद्‌भाव, भाईचारे और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा देने के लिए आकाशवाणी ने कार्यक्रमों का प्रसारण जारी रखा। साम्प्रदायिक सद्‌भावना और अहिंसा का पाठ सिखाने वाले सूफी संतों के जीवन और शिक्षा पर आधारित कार्यक्रमों के प्रसारण पर विशेष बल दिया गया।

4.1.3 समाचार सेवा प्रभाग ने जिन महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में प्रमुखता से प्रसारण किए, उनमें राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति के चुनाव, सरकार द्वारा घोषित नए आर्थिक उपाय, संशोधित सार्वजनिक वितरण प्रणाली, भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती के वर्ष भर चलने वाले समारोह और हरिद्वार में अर्द्धकुंभ शामिल थे।

4.1.4 दो प्रकाशन - 'ए स्टाइल बुक' और 'द स्टोरी ऑफ न्यूजसर्विसेस डिवीजन' तैयार करके प्रकाशित किए गए तथा समाचार प्रभाग के संपादकों, संवाददाताओं और अन्य संपादकीय स्टाफ के उपयोग और मार्गदर्शन के लिए जारी किए गए। इन प्रकाशनों से समाचार सेवा प्रभाग के संपादकीय स्टाफ की चिर-प्रतीक्षित और कामकाज संबंधी आवश्यकताएं पूरी हुई हैं।

4.1.5 आकाशवाणी अब 38 घंटे 45 मिनट की कुल अवधि के 285 समाचार बुलेटिन प्रतिदिन प्रसारित कर रहा है। इनमें से घरेलू सेवा के 12 घंटे 5 मिनट की अवधि के 88 बुलेटिन और 41 प्रादेशिक समाचार एकांशों से 17 घंटे 41 मिनट की अवधि में 132 बुलेटिन प्रसारित होते हैं। विदेश प्रसारण सेवा में 8 घंटे 59 मिनट की अवधि के 65 बुलेटिन प्रतिदिन प्रसारित होते हैं।

नेटवर्क

4.2.1 आकाशवाणी के प्रसारण केन्द्रों की कुल संख्या अब 149 हो गई है जिनमें से 141 पूर्ण केन्द्र, 3 रिले केन्द्र, 2 सहायक केन्द्र और 3 विविध भारती केन्द्र हैं। इसके 141 मीडियम वेव ट्रांसमीटर, 43 शार्टवेव ट्रांसमीटर और 62 एफ. एम. ट्रांसमीटर हैं। रेडियो कार्यक्रम इस समय देश के 86.1 प्रतिशत इलाके और 96.2 प्रतिशत आबादी तक पहुंचते हैं।

4.2.2 आकाशवाणी ने इनसेट 1 डी उपग्रह के द्वारा अपने कई रिले कार्यक्रमों के लिए रेडियो नेटवर्क की स्थापना की है। दूरसंचार विभाग के सिकंदराबाद स्थित भूकेंद्र के जरिए दिल्ली से 6 चैनलों को जोड़ने की सुविधा उपलब्ध है। बंबई, कलकत्ता और मद्रास में इनसेट - 1 डी उपग्रह के जरिए दिल्ली से निश्चित समय के लिए एक चैनल से प्रादेशिक कार्यक्रमों के प्रसारण की सुविधा है। आकाशवाणी के सभी केन्द्र 6 चैनल वाले रिसीवर टर्मिनलों से सुसज्जित हैं, जिनकी सहायता से दिल्ली से प्रसारित केन्द्रीय कार्यक्रमों को प्राप्त किया जाता है।

4.2.3 इसके अलावा इनसेट - 2 ए उपग्रह के जरिए आकाशवाणी दिल्ली के साथ 4 चैनलों को जोड़ने की सुविधा भी उपलब्ध है। दिल्ली समेत आकाशवाणी के 17 केन्द्रों में इस सेवा की रिसीविंग प्रणाली उपलब्ध है।

4.2.4 छठी योजना में प्रायोगिक योजना के रूप में 6 स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र शुरू करने का कार्यक्रम बनाया गया था। इसमें से 5 शुरू किए जा चुके हैं। छठे को सातवीं योजना में रखा गया है। सातवीं योजना में स्थानीय केन्द्रों के विस्तार के लिए 73 स्थानीय आकाशवाणी केन्द्रों के विस्तार का लक्ष्य रखा गया। इनमें से 43 केन्द्र शुरू किए जा चुके हैं। 11 तकनीकी रूप से तैयार हैं और 7 केन्द्र 1993 तक तैयार हो जाएंगे। बाकी पर विभिन्न स्तरों पर कार्य

चल रहा है। स्थानीय केन्द्र, क्षेत्र विशेष को दृष्टि में रखकर बनाये जाते हैं और इनमें स्थानीय लोगों की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है।

समाचार सेवा प्रभाग

4.3.1 डॉ० शंकर दयाल शर्मा को 25.7.92 को भारत के 9वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ दिलाई गई। आकाशवाणी ने अपने समाचार बुलेटिनों में नामांकन भरे जाने से लेकर राष्ट्रपति चुनाव की सारी प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। डॉ० शंकर दयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण के पश्चात् उनका संबोधन 20.45 के हिन्दी और 21.00 बजे के अंग्रेजी के बुलेटिनों में उनकी आवाज में प्रसारित किया गया। इसी तरह श्री के. आर. नारायणन के उपराष्ट्रपति चुने जाने के बारे में व्यापक विवरण दिया गया।

4.3.2 भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती पर वर्ष भर चले समारोह तथा स्वतंत्रता आंदोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए संसद के दोनों सदनों के संयुक्त रूप से बुलाए गए विशेष अधिवेशन के बारे में समाचार बुलेटिनों में विस्तृत जानकारी दी गई। इस अवसर पर राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा के संदेश को उनकी आवाज में समाचार बुलेटिनों में प्रसारित किया गया। दिल्ली में लाल किला और देश के अन्य भागों में जो समारोह आयोजित किए गए और जिनमें प्रधानमंत्री और अन्य नेताओं ने भाषण दिए, इनकी भी कवरेज की गई।

4.3.3 अयोध्या मसले से संबंधित घटनाओं, रामजन्म भूमि - बाबरी मस्जिद विवाद को जल्दी हल किए जाने के बारे में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी समाचार बुलेटिनों में दी गई। श्रोताओं को अयोध्या विवाद के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देने के लिए समाचार सेवा प्रभाग ने विभिन्न कार्यक्रमों को प्रसारित किया। इस उद्देश्य से एक वरिष्ठ संवाददाता को लखनऊ में नियुक्त किया गया। इसके अलावा प्रतिभूति घोटाले और इस पर रिजर्व बैंक की रिपोर्ट तथा सरकार द्वारा इस पर की गई त्वरित कार्रवाई प्रतिभूति घोटाले की जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति की स्थापना और इसके अध्यक्ष श्री राम निवास मिर्धा द्वारा दी गई जानकारी को समाचार प्रसारणों में विशेष महत्व दिया गया। अन्य पिछड़ी जातियों के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण संबंधी उच्चतम न्यायालय के निर्णय और हरिद्वार में अर्द्ध-कुंभ मेला तथा केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा इसके लिए किए गए प्रबंधों के बारे में भी समाचार दिए गए।

4.3.4 राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन की चीन यात्रा और प्रधान मंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हा राव की ब्राजील, जापान, इंडोनेशिया, फ्रांस, नेपाल और सेनेगल की यात्राओं की समुचित कवरेज की गई आकाशवाणी के विशेष संवाददाता राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की प्रत्येक विदेश यात्रा में उनके साथ गए। मारीशस के राष्ट्रपति सर वीरास्वामी और श्रीलंका के राष्ट्रपति और सार्क के अध्यक्ष श्री प्रेमदासा जैसी विदेशी हस्तियों की भारत यात्रा की भी समुचित कवरेज की गई।

4.3.5 आकाशवाणी ने समाचार और समाचारों पर आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से पंजाब, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवादी गतिविधियों पर नियंत्रण पाने के सरकार के प्रयासों की जानकारी देने का क्रम जारी रखा। सर्वदलीय संसदीय शिष्टमंडल की जम्मू-कश्मीर की यात्रा, नियंत्रण रेखा पर घटनाओं और सांसदों तथा जम्मू-कश्मीर के पूर्व विधायकों की घाटी में राजनीतिक प्रक्रिया शीघ्र शुरू करने संबंधी वार्ता के समाचार भी विस्तार से दिए गए।

4.3.6 अंतर्राष्ट्रीय स्तर की जिन घटनाओं के समाचारों को प्रसारित किया गया, उनमें पाकिस्तान और अफगानिस्तान के घटनाचक्र, अमरीकी राष्ट्रपति का चुनाव, फिलीस्तीनी मुक्ति संगठन के अध्यक्ष यासर अराफात के एक विमान दुर्घटना में बाल-बाल बचने, ब्रिटेन के आम चुनाव, संयुक्त राष्ट्र की देखरेख में इराक के सबसे बड़े परमाणु संयंत्र को समाप्त करने, पर्यावरण पर रियो-दे-जानेइरो में 185 देशों की बैठक, चैकोस्लोवाकिया का चेक और स्लोवाक दो राष्ट्रों में विभाजन, जकार्ता में 10वां गुट निरपेक्ष सम्मेलन, थाईलैंड में नई संसद के चुनाव के लिए मतदान, पाकिस्तान में अभूतपूर्व बाढ़, पश्चिम एशिया शांति वार्ता, कुवैत में मतदान, मिस्र में भूकम्प, कोलम्बो में एक बम विस्फोट में श्रीलंका के नौसेना अध्यक्ष की हत्या और अम्सटर्डम के नजदीक आबादी वाले क्षेत्र में इस्रायली परिवहन विमान दुर्घटना में 200 लोगों की मृत्यु के समाचार शामिल हैं।

4.3.7 भूतपूर्व उपराष्ट्रपति मोहम्मद हिदायतुल्ला, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री जेड. आर. अंसारी, वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी और गांधीवादी नेता श्री अच्युत पटवर्धन तथा भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष और सांसद डॉ० बलदेव प्रकाश के निधन के समाचार उनके जीवन वृत्त सहित प्रसारित किए गए। भारतीय सिनेमा के स्तंभ श्री सत्यजीत राय, खेल प्रशासक राजा भालिंदर सिंह, अभिनेत्री कानन देवी, फिल्म अभिनेता अमजद खान और हिन्दुस्तानी संगीत के सुप्रसिद्ध गायक मल्लिकार्जुन मंसूर के निधन के समाचार, शोक संदेशों सहित समाचार बुलेटिनों में प्रसारित किए गए।

4.3.8 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं के विस्तृत रूप से समाचार प्रसारित किए गए। इनमें डेविस कप, महिलाओं और पुरुषों की विंबलडन टेनिस प्रतियोगिता, महिलाओं और पुरुषों की फ्रेंच ओपन टेनिस प्रतियोगिता, बार्सीलोना में 25वें ग्रीष्मकालीन ओलिम्पिक, दलीप ट्राफी, पेशेवर विश्व बिलियर्ड प्रतियोगिता, ड्यूरंड कप फुटबाल, एशियन टेबल टेनिस प्रतियोगिता, ऐतिहासिक भारत - दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टेस्ट मैच, आस्ट्रेलिया - श्रीलंका टेस्ट श्रृंखला व पाकिस्तान और इंग्लैंड के बीच क्रिकेट टेस्ट मैच शामिल हैं।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की नई दिल्ली में बैठक

आकाशवाणी संगीत सम्मेलन

भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे के नए भवन में स्टेनबेक टेबिल

4.3.9 संसद के सत्रों के दौरान संसद की प्रतिदिन की कार्यवाही की जानकारी 'संसद समीक्षा' और इस सप्ताह संसद में (सत्र के दौरान शनिवार को) जैसे कार्यक्रमों के अंतर्गत हिन्दी और अंग्रेजी में साथ-साथ प्रसारित की गई।

4.3.10 लोक रुचि का एक साप्ताहिक समाचार बुलेटिन दिल्ली से प्रत्येक रविवार को प्रसारित किया जाता है। आकाशवाणी के 13 क्षेत्रीय समाचार एकक भी क्षेत्रीय भाषाओं में ऐसे समाचार बुलेटिन प्रसारित करते हैं।

4.3.11 करेंट अफेयर्स, चर्चा का विषय है, स्पॉट लाइट, सामयिकी, तब्सरा, समाचार प्रभात और मार्निंग न्यूज़ में समीक्षाओं, न्यूज़ रील और समाचार दर्शन जैसे समाचार-आधारित कार्यक्रमों में अयोध्या समस्या, साम्प्रदायिक सद्भाव, पंजाब, जम्मू-कश्मीर और असम की स्थिति, सरकार द्वारा घोषित नए आर्थिक उपाय, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, पैट्रोलियम और रसायनिक उत्पादों की कीमतों में वृद्धि, अनुसूचित जाति/जन जाति के सांवैधानिक अधिकार, प्रतिभूति घोटाला, भारतीय वायुसेना की हीरक जयंती, अमरीका में चुनाव, कुपोषण से निपटने के उपाय, झारखंड समस्या, जनसंख्या समस्या, भूमि सुधार और ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गयी।

4.3.12 नई आर्थिक नीति और सुधार, राजस्थान के बाड़मेर में 1 जनवरी, 1992 को प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई सार्वजनिक वितरण प्रणाली और इसकी उपलब्धियों को भी समाचारों और समाचार आधारित कार्यक्रमों में राष्ट्रीय और 40 क्षेत्रीय समाचार केन्द्रों से प्रसारित किया गया। क्षेत्रीय समाचार एककों तथा अन्य स्थानों में नियुक्त समाचार संपादकों/सहायक समाचार संपादकों और संवाददाताओं को 1992 के दौरान तिरुअनन्तपुरम, बंबई और गुवाहाटी में तीन कार्यशालाओं में भेजा गया जिससे कि क्षेत्रीय समाचार एककों के समाचार बुलेटिनों में नीतियों और अन्य बातों के बारे में समाचार विवरण और उनके स्तर में सुधार लाया जा सके। यह महसूस किया गया कि क्षेत्रीय समाचार एककों से भी कार्यक्रमों और नीतियों के गहन प्रचार के लिए समाचार-आधारित कार्यक्रमों का अच्छी तरह से प्रयोग किया जा सकता है। इसके अंतर्गत इस वर्ष अन्य 6 समाचार एककों ने समाचार समीक्षा कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया है। इससे समाचार - समीक्षा प्रसारित करने वाले केन्द्रों की संख्या बढ़ कर 18 हो गई है, जो पिछले वर्ष 12 थी।

4.3.13 'नए नियुक्त अधिकारियों' और अन्य अधिकारियों के लिए समाचार सेवा प्रभाग में वर्ष भर सेवाकाल प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं। भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली में अधिकारियों को समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भेजने के अलावा समाचार सेवा प्रभाग स्वयं भी नव-नियुक्त अधिकारियों के लिए संक्षिप्त प्रशिक्षण तथा अन्य अधिकारियों के लिए नवीकरण/पुनर्वीक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता है। ऐसा ही छः दिन का एक प्रशिक्षण थामसन फाउंडेशन लंदन के सहयोग से अगस्त, 1992 में आयोजित किया गया। ब्रिटिश संचार विशेषज्ञ श्री इ. ए. ओवन ने समाचार सेवा प्रभाग में 24 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 1992 तक 'घटनास्थल से रिपोर्टिंग' विषय पर एक कार्यशाला का संचालन किया जिसमें 20 अधिकारियों ने भाग लिया। इनमें से 7 क्षेत्रीय समाचार एककों से थे।

4.3.14 इस समय आकाशवाणी के 101 पूर्णकालिक संवाददाता भारत में तथा 7 संवाददाता विदेशों में हैं। इसके अलावा 246 अंशकालिक संवाददाता हैं जो समाचार सेवा प्रभाग और इसके प्रादेशिक समाचार एककों के लिए कार्य कर रहे हैं। फरवरी, 1992 से इनका मासिक शुल्क 250 रु. से बढ़ाकर 500 रु. प्रतिमाह कर दिया गया है। एक प्रातःकालीन कोंकणी बुलेटिन जो पहले बंबई से प्रसारित होता था, अब 4 अप्रैल, 1992 से पणजी से शुरू कर दिया गया है। आकाशवाणी पी. टी. आई., यू. एन. आई. और इनकी हिन्दी सेवाओं "भाषा" और 'वार्ता' से समाचार लेता है।

घरेलू सेवायें

4.4.1 राष्ट्रीय चैनल 18 मई, 1988 को शुरू किया गया था। इस समय इस सेवा के प्रसारण देश की 64 प्रतिशत आबादी तक पहुंच रहे हैं। कलकत्ता के नजदीक मोगरा में एक मैगावाट ट्रांसमीटर के लग जाने से पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में श्रोताओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। इसके राष्ट्रीय चैनल के प्रसारण के लिए नागपुर में 1 मैगावाट ट्रांसमीटर और दिल्ली में 10 किलोवाट ट्रांसमीटर की स्थापना की गई है। भिन्न दिशाओं में इन दो ट्रांसमीटरों को लगाने का उद्देश्य रेडियो कार्यक्रमों को दूर-दराज के क्षेत्रों तथा ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाना है। इस कार्यक्रम में उच्चकोटि के हिन्दुस्तानी, कर्नाटक और पश्चिमी संगीत, खोजपूर्ण रिपोर्ट, पत्रिका कार्यक्रम, नाटक, दैनिक खेल रिपोर्ट, वित्तीय समीक्षा और एक दैनिक उर्दू कार्यक्रम 'मंजर' शामिल हैं। इसके अलावा विविध कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है जिसमें लोगों, स्थानों, विषयों और संगीत के बारे में कार्यक्रम शामिल किए जाते हैं।

4.4.2 आकाशवाणी ने भारतीय संगीत - शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक और आदिवासी संगीत तथा पश्चिमी संगीत के प्रति लोगों में जागरुकता और रुचि पैदा करने में भारी योगदान दिया है। कुल प्रसारण का 40 प्रतिशत भाग संगीत के कार्यक्रमों का होता है। संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम प्रत्येक शनिवार को प्रसारित किया जाता है। रेडियो संगीत सम्मेलन सभाओं में प्रसिद्ध कलाकारों और नयी प्रतिभाओं को भी शामिल किया जाता है। प्रत्येक रविवार को क्षेत्रीय प्रसारणों में उदीयमान कलाकारों को शामिल किया जाता है।

4.4.3 इस वर्ष का आकाशवाणी संगीत सम्मेलन अपने क्रम में 38 वां था। इसकी देश के विभिन्न भागों में 141 सभाएं हिन्दुस्तानी

और 10 सभाएं कर्नाटक संगीत की हुई तथा इनमें 157 जाने-माने और प्रसिद्ध कलाकारों ने भाग लिया। इस सम्मेलन की एक विशेषता यह थी कि इसकी कुछ सभाएं, कुरुक्षेत्र, संबलपुर, दरभंगा, कांचीपुरम, तंजावुर, सलेम, वारंगल जैसे छोटे शहरों में की गई राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए कर्नाटक संगीत की तीन सभाएं उत्तर में तथा हिन्दुस्तानी संगीत की तीन सभाएं दक्षिण में आयोजित की गईं।

4.4.4 आकाशवाणी युवा वर्ग में नई प्रतिभाओं की खोज के लिए प्रत्येक वर्ष संगीत प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। इस वर्ष 43 कलाकारों का चयन किया गया और उन्हें सम्मानित किया गया।

4.4.5 वाद्यवृन्द के नाम से दो राष्ट्रीय आर्केस्ट्रा के दो एकक दिल्ली और मद्रास में कार्य कर रहे हैं। पारंपरिक राग, लोक धुनों और अन्य रचनाओं को लेकर हुए वाद्यवृन्द प्रयोगों को अभूतपूर्व माना जा रहा है। आकाशवाणी द्वारा दो प्रमुख संगीत समारोहों— त्यागराज व तानसेन समारोह को राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया गया।

4.4.6 आकाशवाणी संग्रहालय में विभिन्न केन्द्रों से शास्त्रीय, लोक और आदिवासी संगीत सामग्री लगातार भेजी जाती है। ये कार्यक्रम अन्य केन्द्रों को भी भेजे जाते हैं।

4.4.7 लोक और सुगम संगीत के कार्यक्रम के राष्ट्रीय प्रसारण किए जाते हैं जिससे विभिन्न क्षेत्रों के संगीत को देश के दूर-दराज के श्रोताओं में लोकप्रिय बनाया जा सके।

4.4.8 गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर आकाशवाणी सर्वभाषा कवि सम्मेलन प्रसारित करता है जिसका हिन्दी रूपांतर राष्ट्रीय नेटवर्क पर तथा क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद प्रादेशिक केन्द्रों से प्रसारित किए जाते हैं। इस वर्ष दिल्ली में विभिन्न भारतीय भाषाओं के 16 जाने-माने कवियों ने सर्वभाषा कवि सम्मेलन में भाग लिया।

खेल प्रसारण

4.4.9 आकाशवाणी के कार्यक्रमों में खेल प्रसारण का प्रमुख स्थान है क्योंकि खेल प्रसारणों को बड़ी संख्या में लोग सुनते हैं। इन खेल प्रसारणों में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं की जानकारी देने और खासकर युवाओं में खेल के प्रति दिलचस्पी पैदा करने में मदद मिलती है।

4.4.10 खेलों तथा खेल प्रतियोगिताओं के संबंध में श्रोताओं तक निरंतर जानकारी पहुंचाने की दृष्टि से आकाशवाणी से निश्चित समय पर नियमित खेल कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इनमें प्रतिदिन हिन्दी और अंग्रेजी में पांच-पांच मिनट के खेल समाचार बुलेटिन, 15 मिनट की अंग्रेजी में साप्ताहिक स्पोर्ट न्यूज़ रील और हिन्दी तथा अंग्रेजी में तीस मिनट की मासिक खेल पत्रिका कार्यक्रम शामिल हैं। इनसे देश में खेलकूद को लोकप्रिय बनाने में मदद मिलती है।

4.4.11 अप्रैल-दिसम्बर, 1992 के दौरान आकाशवाणी ने बार्सीलोना ओलम्पिक, एशिया कप फुटबाल, विंबलडन डेविस कप और अंतर्राष्ट्रीय वालीबाल प्रतियोगिताओं की जानकारी राष्ट्रीय नेटवर्क पर देने के उपाय किए। सभी प्रमुख खेल आयोजनों और विभिन्न खेलों की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आंखों देखा हाल, विवरण, टिप्पणियां और भेंटवार्ताएं प्रसारित की गईं

4.4.12 अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय खेल आयोजनों जैसे ओलम्पिक, एशियाई खेल, रोफ खेल, विश्व कप हाकी, विश्व कप क्रिकेट आदि के प्रसारणों के साथ-साथ आकाशवाणी से खो-खो, कबड्डी आदि परंपरागत खेलों का आंखों देखा हाल प्रसारित करके उन्हें देश के युवकों में लोकप्रिय बनाने तथा खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है।

4.4.13 रेडियो नाटक, आकाशवाणी के लोकप्रिय कार्यक्रमों में से हैं हाल के सर्वेक्षण के अनुसार संगीत और समाचारों के बाद आकाशवाणी पर नाटक बहुत बड़ी संख्या के सुने जाते हैं. आकाशवाणी के करीब 80 केन्द्र सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में नाटकों का प्रसारण करते हैं

4.4.14 प्रत्येक माह के चौथे बृहस्पतिवार को नाटकों का अखिल भारतीय कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है और इसे सभी हिन्दी केन्द्र रिले करते हैं उसी समय इसका क्षेत्रीय भाषाओं में रूपांतरण संबद्ध केन्द्रों द्वारा प्रसारित किया जाता है। प्रत्येक माह में महानिदेशालय के केन्द्रीय नाटक एकांश में 30 मिनट की अवधि के आदर्श रेडियो नाटक तैयार किए जाते हैं इनका फिर 30 केन्द्रों से बारी-बारी प्रसारण होता है आलेख का चयन आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों पर तैयार किए गए विशेष निमाही नाटकों, आकाशवाणी पुरस्कार प्राप्त नाटकों, प्रसिद्ध उपन्यासों, लघु कहानियों और थियेटर नाटकों आदि के रूपांतरणों से किया जाता है। श्रोताओं को विभिन्न भाषाओं की विभिन्न कथावस्तुओं की जानकारी देने का प्रयास किया जाता है और विभिन्न क्षेत्रों की महान रचनाओं से अवगत कराया जाता है। नाटकों में वर्तमान सामाजिक आर्थिक विषयों और सरकार द्वारा उठाए गए विकास कार्यक्रमों को भी प्रस्तुत किया जाता है

4.4.15 देश भर में नाटक प्रतिभाओं को रेडियो नाटक लिखने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष रेडियो नाटक लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जाती है यह प्रतियोगिता 19 भाषाओं में आयोजित की जाती है और प्रत्येक भाषा में तीन श्रेष्ठ नाट्य रचनाओं और एक हास्य नाटक को अतिरिक्त पुरस्कार दिया जाता

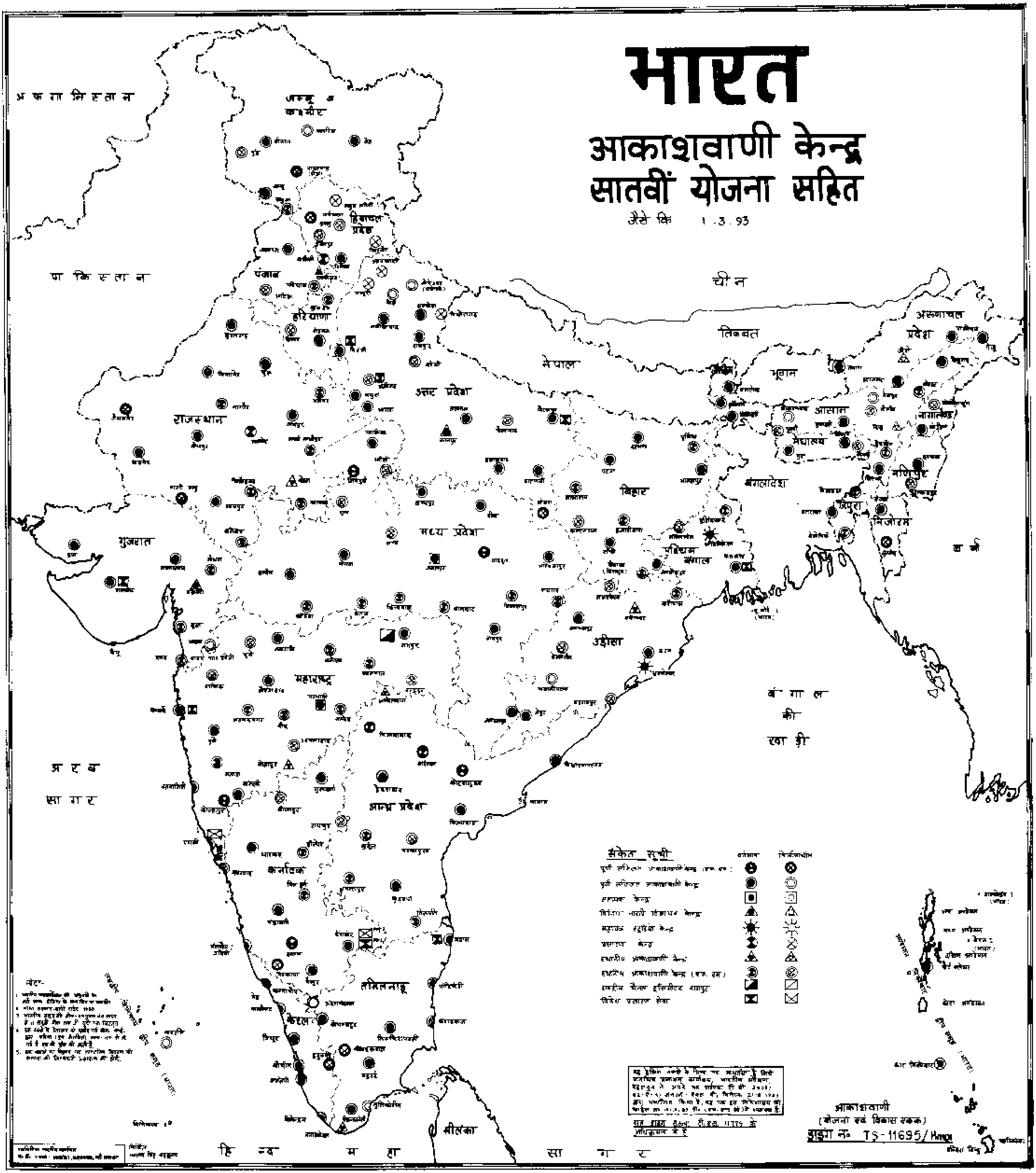

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्र के आधार पर

है। सभी पुरस्कार प्राप्त नाटकों को अधिक से अधिक श्रोताओं तक पहुंचाने के लिए उनका हिन्दी और अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाता है।

4.4.16 श्रोताओं को रचनात्मक संदेश देने के लिए हास्य बहुत प्रभावी है। स्वस्थ मनोरंजन और जागृति उत्पन्न करने के लिए केन्द्रों को रेडियो नाटकों में अच्छे हास्य नाटक शामिल करने के लिए कहा गया है। प्रत्येक वर्ष आमंत्रित श्रोताओं के सामने 'हास्य तरंग' नामक एक हास्य कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में यह कार्यक्रम बड़ा लोकप्रिय हुआ है। इस कार्यक्रम का आयोजन फरवरी, 1993 में किया गया। इसमें आमंत्रित श्रोताओं के सामने विभिन्न केन्द्रों से हास्य कलाकार अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे।

4.4.17 दक्षिण क्षेत्र में नाटक प्रभाग अधिकारियों के लिए 2 और 3 मई, 1992 को आकाशवाणी बंगलौर में रेडियो नाटक पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। इसमें प्रमुख नाटककारों और पुराने प्रसारण विशेषज्ञों ने रेडियो नाटकों के निर्माण के विभिन्न पहलुओं और रेडियो को मल्टी चैनल टी वी, वीडियो और केबल टी वी की चुनौतियों पर अपने विचार प्रकट किए। रेडियो नाटकों के स्तर को सुधारने और तेजी से विकसित हो रहे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को ध्यान में रखते हुए विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी संगोष्ठियां की जा रही हैं।

परिवार कल्याण

4.4.18 आकाशवाणी करीब-करीब सभी केन्द्रों से परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रसारित करता है। आकाशवाणी के 22 केन्द्रों पर पूर्ण परिवार कल्याण सेल हैं जिनमें एक कार्यक्रम अधिकारी, एक ट्रांसमीशन एक्सीक्यूटिव (आलेख) और एक फील्ड रिपोर्टर हैं। 14 केन्द्रों पर एक-एक फील्ड रिपोर्टर उपलब्ध है। आकाशवाणी केन्द्रों से प्रतिमाह 8,500 से अधिक परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। ये कार्यक्रम सामान्य और विशेष श्रोताओं के कार्यक्रमों में प्रसारित होते हैं। छोटे और सुखी परिवार के महत्व पर विशेष रूप से बल दिया जाता है। आकाशवाणी स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग के छोटे और सुखी परिवार के अभियान को प्रचार सहायता उपलब्ध कराता है। इसके अलावा एड्स, तपेदिक, यौन रोग, दूषित पानी से होने वाली बीमारियों, मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम आदि विषयों पर भी परिवार कल्याण कार्यक्रमों के अंतर्गत कार्यक्रम प्रसारित करता है। प्रत्येक केन्द्र सप्ताह में एक बार 15 मिनट की अवधि का 'हैल्थ फोरम' कार्यक्रम प्रसारित करता है। इसमें डॉक्टरों को आमंत्रित किया जाता है जो श्रोताओं को आम बीमारियों और पोषण के बारे में जानकारी देते हैं। परिवार कल्याण श्रृंखला के अंतर्गत बालिका के महत्व पर भी कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। यूनिसेफ के सहयोग से 'मां और बच्चे का स्वास्थ्य कार्यक्रम' का प्रसारण भी शुरू किया गया है। परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रसारण भी शुरू किया गया है। परिवार कल्याण कार्यक्रम देश की सभी बोलियों व भाषाओं में प्रसारित होते हैं। प्रत्येक वर्ष परिवार कल्याण पर सबसे अच्छे कार्यक्रम को आकाशवाणी का वार्षिक पुरस्कार दिया जाता है। केन्द्रों को परिवार कल्याण के सभी विषयों पर विभिन्न कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए प्रेरित किया जाता है और तिमाही में एक बार प्रत्येक केन्द्र से अन्य कार्यक्रमों के अलावा एक नाटक भी प्रसारित किया जाता है। आकाशवाणी के परिवार कल्याण एककों की परिवार कल्याण सलाहकार समितियां हैं जो समय-समय पर कार्यक्रम के मामलों पर मार्गदर्शन करती है। परिवार कल्याण मंत्रालय का स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो आकाशवाणी के संपर्क में रहता है। समय-समय पर संदर्भ सामग्री व विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध कराता है।

युववाणी सेवा

4.4.19 युवाओं के लिए दिल्ली, जम्मू, श्रीनगर, कलकत्ता और हैदराबाद केन्द्रों से युववाणी कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। यह कार्यक्रम 15 से 30 वर्ष के युवाओं को अपनी समस्याओं तथा देश की समस्याओं के प्रति मुक्त भाव से अपनी बात कहने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इस बात का प्रयास किया जाता है कि युवाओं को देश के अन्य भागों के जीवन, संस्कृति और परंपराओं की जानकारी दी जाए। युववाणी सेवा से साहित्य, नाटक और संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रतिभाओं को सामने लाने में सहायता मिली हैं। इससे आकाशवाणी के अन्य वर्गों के कार्यक्रमों के लिए भी प्रतिभाएं उपलब्ध हुई हैं। युववाणी सेवाओं के अतिरिक्त अधिकतर केन्द्र अपने मुख्य चैनल से भी युवाओं के लिए कार्यक्रम प्रसारित करते हैं

4.4.20 वृद्ध लोगों के लिए 17 राज्यों की राजधानियों में आकाशवाणी केन्द्रों से हर सप्ताह 30 मिनट की अवधि के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में उनकी रुचि के विषयों जैसे स्वास्थ्य देखभाल, पेंशन समस्या, कानूनी सलाह, कर भुगतान, श्रेष्ठ रचनाओं का पाठ, ताजा समाचार, वृद्ध लोगों के लिए गृह/विश्राम गृह, पुराने मशहूर गीत, हास्य कार्यक्रम, गपशप और बीते दिनों के किस्से शामिल किये जाते हैं।

4.4.21 सप्ताह में 2 से 4 दिनों तक 20 से 30 मिनट की अवधि के लिए या फिर केन्द्रों की आवश्यकता के अनुसार प्रतिदिन कारखाना मजदूरों के लिए आकाशवाणी के कई केन्द्रों से क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। इस कार्यक्रम में लघु उद्योग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में कल्याणकारी योजनाओं, श्रम कानून, मजदूर संघ, न्यूनतम मजदूरी, प्रदूषण की रोकथाम, औद्योगिक कचरे के निपटान और देश में कारखानों की समस्याएं और संभावनाएं जैसे विषयों को शामिल किया जाता है। आकाशवाणी के केन्द्रों द्वारा

कामगारों/मजदूरों के लिए मनोरंजक कार्यक्रम, विभिन्न उद्योगों पर रेडियोवृत्त, उद्योग समाचार, नए गैर-पारंपरिक उद्योगों जैसे विषयों पर भी प्रसारण किया जाता है।

4.4.22 आकाशवाणी के सामान्य और विशेष आमंत्रित श्रोताओं के सम्मुख कार्यक्रमों में सरकार की नई आर्थिक नीति को भी विस्तार से प्रसारित किया जा रहा है।

कृषि एवं गृह

4.4.23 आकाशवाणी के 92 केन्द्रों के अलावा अन्य स्थानीय केन्द्रों से भी कृषि एवं गृह कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। कृषि एवं गृह एकक में एक कृषि रेडियो अधिकारी जो कृषि संचार प्रणाली का विशेषज्ञ है, एक ट्रांसमीशन एक्सीक्यूटिव (आलेख) और एक/दो कृषि रेडियो रिपोर्टर जिन्हें अब ट्रांसमीशन एक्सीक्यूटिव (कृषि एवं गृह) कहते हैं, होते हैं। कृषि एवं गृह कार्यक्रम प्रतिदिन प्रसारित होते हैं और इनकी अवधि 40-60 मिनट की होती है। कृषि एवं गृह कार्यक्रम दो-तीन बार प्रसारित होते हैं जैसे सुबह, दोपहर और शाम की सेवाओं में।

4.4.24 प्रातःकालीन सेवा कार्यक्रम 'किसान बुलेटिन' के नाम से होते हैं। इस कार्यक्रम में उपयोगी कृषि सूचना, मौसम संबंधी सूचना और मंडी मूल्य शामिल होते हैं। दोपहर और शाम के कार्यक्रमों में बैंकों और ग्रामीण उद्योगों सहित ग्रामीण विकास संगठनों के बारे में प्रसारण किया जाता है। कृषि एवं गृह कार्यक्रमों में ग्रामीण महिलाओं और बच्चों के विषयों को भी शामिल किया जाता है।

4.4.25 कृषि एवं गृह कार्यक्रमों के 40 प्रतिशत कार्यक्रम क्षेत्र आधारित होते हैं और इन्हें गांवों में रिकार्ड किया जाता है। आकाशवाणी के हर केन्द्र से सप्ताह में एक बार ग्रामीण भाइयों के पत्रों के जवाब विशेषज्ञों द्वारा या रेडियो स्टाफ द्वारा विशेषज्ञों से मशवरे के बाद दिए जाते हैं।

शैक्षिक कार्यक्रम

बाल विकास प्रयोग रेडियो (चीयर)

4.5.1 चीयर — रेडियो द्वारा बाल विकास प्रयोग नामक एक नया कार्यक्रम महिला एवं बाल विकास विभाग, एन सी ई आर टी और आकाशवाणी द्वारा संयुक्त रूप से 2 अक्तूबर, 1992 को शुरु किया गया था। स्कूल पूर्व के 3-6 वर्ष के बच्चों के लिए यह एक विशिष्ट कार्यक्रम है।

4.5.2 सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के बच्चों को जो आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में आंगनवाड़ी में रह रहे हैं उनको लक्ष्य करके ये कार्यक्रम बनाए जाते हैं। इनका रविवार को छोड़ कर प्रतिदिन विशाखापट्टनम, कटक, लखनऊ और रोहतक से एक वर्ष से प्रसारण हो रहा है। इन कार्यक्रमों की श्रृंखला में इन केन्द्रों द्वारा स्वतंत्र रूप से एक समान विषय पर चिलकापलुकुल्लु, कलिका, फुलबगिया और किलकारी नाम से प्रसारण किया जाता है। बच्चे ये कार्यक्रम टू-इन-वन सेटों व महिला और बाल विकास विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गये रिकार्डरों के माध्यम से सुनते हैं। इस प्रायोगिक प्रसारण से लाखों बच्चों को लाभ होने का अनुमान है।

4.5.3 आकाशवाणी ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए भी प्रायोगिक तौर पर प्रसारण शुरू किए हैं। ये कार्यक्रम फिलहाल 1 जनवरी, 1992 से बंबई और हैदराबाद केन्द्रों से प्रसारित किए जा रहे हैं। इन प्रसारणों के बारे में एक सर्वेक्षण किया जा रहा है।

विज्ञापन सेवा

4.6.1 लोकप्रिय सेवा 'विविध भारती' के अंतर्गत बंबई तथा मद्रास स्थित दो शार्ट वेव ट्रांसमीटरों सहित 32 केन्द्रों से प्रतिदिन 13 घंटे 15 मिनट और अवकाश वाले दिनों में 13 घंटे 45 मिनट तक श्रोताओं का मनोरंजन किया जाता है। हालांकि विविध भारती के कार्यक्रमों का मुख्य आकर्षण हिन्दी का फिल्मी तथा गैर-फिल्मी सुगम संगीत है, किंतु इसके अलावा प्रसारित हास्य नाटिकाएं, लघु नाटक तथा रूपक और वार्ताएं भी लोकप्रिय हैं

4.6.2 विविध भारती चैनल पर विज्ञापन प्रसारण नवम्बर, 1967 से प्रारंभ हुआ इस चैनल पर विज्ञापनों द्वारा प्राप्त राजस्व वर्ष-प्रतिवर्ष बढ़ता जा रहा है। वर्ष 1991-92 में केवल विविध भारती से 34.89 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। राजस्व को और अधिक बढ़ाने के लिए विज्ञापन सेवा प्राथमिक चैनलों के सीमित कार्यक्रमों में विभिन्न चरणों में शुरू की गई। 1991-92 में और 6 केन्द्रों के प्राथमिक चैनलों पर विज्ञापन सेवा शुरू कर दी गई है। विविध भारती के 30 केन्द्रों के अलावा आकाशवाणी के कुल 60 केन्द्रों से विज्ञापन प्रसारित किए जाते हैं। वर्ष 1991-92 के दौरान विविध भारती तथा प्राथमिक चैनलों पर प्रसारित विज्ञापनों से 52.73 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में अर्जित राजस्व से 13.41 करोड़ रुपये अधिक है। (परिशिष्ट चार)

विदेश सेवा प्रभाग

4.7.1 आकाशवाणी का विदेश सेवा प्रभाग भारत तथा अन्य देशों के बीच सम्पर्क सूत्र का काम करता है, विशेष रूप से उन देशों से जहां भारतीय मूल के लोगों के अधिक होने से भारत का हित जुड़ा हुआ है। यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के मामलों पर भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। ये प्रसारण 24 भाषाओं में होते हैं जिनकी कुल अवधि प्रतिदिन 71 घंटे है इन 24 भाषाओं में 16

विदेशी और 8 भारतीय भाषाएं हैं। विदेश सेवा प्रभाग के प्रसारण दिन-रात चलते हैं।

4.7.2 विदेशी प्रसारणों में अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर भारतीय दृष्टिकोण के अलावा भारतीय दर्शन के बहुमुखी आयामों, चिन्तन, संस्कृति, परंपरा और विरासत को प्रस्तुत किया जाता है। विदेश सेवा प्रभाग विश्व में भारत की छवि व साख को बनाने के लिए एक प्रकार से सांस्कृतिक राजदूत का कार्य करता है।

4.7.3 इन कार्यक्रमों में समाचार बुलेटिन, सामयिक विषयों पर वार्ताएं और भारतीय समाचार पत्रों की समीक्षाएं जैसे मिले-जुले कार्यक्रम होते हैं। साथ ही न्यूज रील, खेल और साहित्य पर पत्रिका कार्यक्रम, वार्ताएं और सामाजिक - आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विषयों पर बातचीत और चर्चाएं, विकास गतिविधियों, महत्वपूर्ण घटनाओं और संस्थानों, भारत के विभिन्न क्षेत्रों के शास्त्रीय, लोक और आधुनिक संगीत, कार्यक्रम के मुख्य हिस्से हैं। हर शनिवार की संयुक्त राष्ट्र के समाचार विश्व के विभिन्न भागों के लिए प्रसारित किये जाते हैं।

4.7.4 विदेश सेवा प्रभाग करीब एक सौ देशों को द्विपक्षीय आदान-प्रदान के आधार पर संगीत तथा अन्य कार्यक्रमों की रिकार्डिंग उपलब्ध कराता है।

4.7.5 यह प्रभाग स्वतंत्र रूप से अंग्रेजी में एक मासिक कार्यक्रम पत्रिका 'इंडिया कॉलिंग' भी प्रकाशित करता है। इसमें विदेश सेवा के प्रसारण कार्यक्रमों की अग्रिम जानकारी दी जाती है। यह पत्रिका विदेश स्थित श्रोताओं को मुफ्त भेजी जाती है। इसमें चुनी हुई वार्ताएं, श्रोताओं के पत्र तथा अन्य जानकारी रहती हैं। इसके साथ पश्तो, स्वाहिली, तिब्बती, अरबी, बर्मी, चीनी, फारसी, नेपाली, फ्रांसीसी तथा इंडोनेशियाई आदि 10 भाषाओं में त्रैमासिक फोल्डर भी प्रकाशित किए जाते हैं।

आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार

4.8 आकाशवाणी द्वारा हर कैलेंडर वर्ष में विभिन्न विषयों पर विभिन्न रूपों में उत्कृष्ट प्रसारणों पर पुरस्कार दिया जाता है। ये नाटक, रेडियो वृत्त, रूपक, संगीत कार्यक्रम, अभिनव कार्यक्रम, परिवार कल्याण और युववाणी कार्यक्रम के लिए दिए जाते हैं। राष्ट्रीय एकता पर कार्यक्रम के लिए विशेष लासा कौल पुरस्कार और उल्लेखनीय समाचारों के लिए वर्ष का संवाददाता पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं। सामयिक विषयों पर रेडियो वृत्तों के लिए विशेष पुरस्कार दिए जाते हैं. विभिन्न प्रादेशिक केन्द्रों पर बच्चों के लिए समूह गान प्रतियोगिताएं कराई जाती हैं। एक पुरस्कार आकाशवाणी के सर्वोत्तम विज्ञापन प्रसारण सेवा केन्द्र के लिए दिया जाता है। अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहन देने के लिए भी तकनीकी उत्कृष्टता पुरस्कार दिए जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ स्थापित और सर्वोत्तम देखभाल वाले केन्द्रों को भी पुरस्कार दिए जाते हैं।

आकाशवाणी कार्यक्रम संग्रहालय

4.9 आकाशवाणी के कार्यक्रम संग्रहालय में वर्ष 1992 के दौरान विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की 300 घंटे की रिकार्डिंग प्राप्त हुई। इसमें शास्त्रीय व लोक संगीत, रूपक, नाटक, पुरस्कृत कार्यक्रम, सुगम संगीत, स्वाधीनता सेनानियों के संस्मरण, रेडियो आत्मकथा योजना के अंतर्गत प्रख्यात साहित्यकारों से भेंटवार्ताएं, स्मारक भाषण इत्यादि शामिल हैं. संग्रहालय में कुल रिकार्डिंग अब 17,590 घंटे की उपलब्ध है। इसमें से 95 प्रतिशत को दस्तावेजी बनाकर कंप्यूटर में संग्रहित कर दिया गया है। संग्रहालय सामग्री में से अनेक प्रख्यात कलाकारों के एल पी रिकार्ड/कैसेट जारी किए जा चुके हैं। इनमें उस्ताद फैयाज खान, डी.के. पट्टमनल, टी. चौडय्या, उस्ताद निसार हुसैन खान, पंडित राम चतुर मलिक, उस्ताद जियाउद्दीन खान डागर, पंडित पन्नालाल घोष, उस्ताद हाफिज अली खान, अलातूर बंधु व जी.एन. बालासुब्रमण्यम शामिल हैं।

अनुलेखन एकक

4.10 अनुलेखन एकक ने राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के भाषणों की 190 अनुलिपियां प्राप्त कीं और सरकारी कार्यालयों व विभिन्न मीडिया एककों में उपयोग के लिए आलेख उपलब्ध कराए।

कार्यक्रम आदान-प्रदान एकक

4.11 लंदन में नेहरू संग्रहालय के लिए व सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अन्तर्गत विदेशी प्रसारण एजेंसियों के लिए हाल में 75 घंटे के कार्यक्रमों की रिकार्डिंग भेजी गयी. संस्कृत माध्यम में 26 संस्कृत पाठों की नवनिर्मित श्रृंखला आकाशवाणी के केन्द्रों को भेजी गयी।

कर्मचारी प्रशिक्षण

4.12.1 दिल्ली में स्थित कार्यक्रम कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान की छः क्षेत्रीय शाखाएं हैदराबाद, शिलांग, अहमदाबाद, लखनऊ, कटक व तिरुअनंतपुरम में हैं. यह संस्थान सेवारत कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने वाला प्रमुख संस्थान है. इसमें कार्यक्रम नियोजन, निर्माण, प्रस्तुति, प्रबंधन व प्रशासन का प्रशिक्षण दिया जाता है। फिलहाल छः क्षेत्रीय शाखाओं में से तीन-हैदराबाद, तिरुअनंतपुरम, शिलांग शाखाएं ही काम कर रही हैं.

4.12.2 दिल्ली स्थित कार्यक्रम कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान ने अप्रैल से दिसम्बर, 1992 तक 28 प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए। जनवरी से मार्च, 93 के बीच 10 पाठ्यक्रम चलाने का कार्यक्रम था।

श्रोता अनुसंधान एकक

14.13 यह एकक आकाशवाणी के विज्ञापन प्रसारण सेवा व विदेश सेवा प्रभाग सहित समस्त विभागों के लिए अनुसंधान व प्रतिक्रिया की जानकारी एकत्र करने का काम करता है। यह एकक श्रोताओं की संख्या व वर्गों, कार्यक्रमों के स्तर के बारे में श्रोताओं की प्रतिक्रिया व लक्षित श्रोताओं पर कार्यक्रमों के प्रभाव के आकलन संबंधी जानकारी प्रदान करता है। इस अध्ययन से कार्यक्रम नियोजन, प्रसारण समय, कार्यक्रम के स्तर में सुधार व नीति-निर्धारण में सहायता मिलती हैं। यह एकक आकाशवाणी निदेशालय व केन्द्रों के लिए संदर्भ जानकारी व आंकड़े भी उपलब्ध कराता है। इस एकक के अंतर्गत विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों पर 43 श्रोता अनुसंधान एकांश हैं व क्षेत्रीय केन्द्रों पर छः चलती-फिरती इकाइयां हैं ये हैं दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, शिलांग, इलाहाबाद व मद्रास। बंबई में विज्ञापन प्रसारण सेवा के लिए एक पृथक इकाई है। वर्ष 1992-93 के दौरान श्रोता अनुसंधान एककों ने 29 स्थानों पर दो बार में नयी आर्थिक नीति के बारे में व्यापक सर्वेक्षण पूरे किए

अनुसंधान विभाग

4.14.1 आकाशवाणी व दूरदर्शन का अनुसंधान विभाग प्रसारण सेवाओं के वैज्ञानिक नियोजन के लिए मीडियम/उच्च फ्रीक्वेंसी (एच. एफ.) अति उच्च फ्रीक्वेंसी (वी. एच. एफ.)/अत्यंत उच्च फ्रीक्वेंसी (यू. एच. एफ.)/माइक्रोवेव फ्रीक्वेंसी बैंडों के बारे में अध्ययन करता है। यह आकाशवाणी व दूरदर्शन को उनके प्रसारणों को आधुनिक व स्तरीय बनाने के लिए तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान करता है। यह विभाग अति-आधुनिक उपकरण/प्रणाली के स्वदेशी विकास के लिए भी तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करता है

4.14.2 संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से सातवीं योजना में प्रसारण में डिजिटल तकनीक के लिए एक केंद्र (सी. डी. टी. बी.) की स्थापना की गयी और इसके अंतर्गत विकास कार्यों के संचालन के लिए डिजिटल प्रसारण के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित 5 विशिष्ट ग्रुप व 17 विशेषज्ञ हैं। केंद्र ने निम्नलिखित प्रणालियां विकसित की हैं जिनका उपयोग प्रसारण तंत्र में किया जा रहा है:

क) रेडियो टेक्स्ट/एस सी ए ट्रांसमिशन के लिए एन कोडर/डीकोडर

ख) एल पी टी वी व एफ एम ट्रांसमीटरों के लिए रिमोट कंट्रोल व टेलीमीटरी प्रणाली

ग) पी सी आधारित मौसम ग्राफिक प्रणाली

घ) पुराने ग्रामोफोन रिकार्डों व टेपों की घरघराहट रोकने की प्रणाली। इसके आधार पर आकाशवाणी के नियोजन व विकास एकक में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से एक राष्ट्रीय श्रव्य संग्रहालय केंद्र की स्थापना की गयी है

4.14.3 आठवीं योजना में भारत सरकार की राजकोषीय सहायता के अलावा केंद्र को आत्म-निर्भरता के लिए विभिन्न विकास कार्य चलाने के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम से भी लगभग 15 लाख डालर की सहायता मिलने की संभावना है

4.14.4 आकाशवाणी के समाचार ट्रांसमिशन के लिए भी नेटवर्क ग्रुप ने कंप्यूटरीकृत समाचार प्रसारण प्रणाली विकसित की। उपग्रह ग्रुप व संवर्धन ग्रुप ने विभिन्न स्थलों वाले एच एफ ट्रांसमीटरों के एक साथ ट्रांसमिशन का सफलता से परीक्षण किया। संवर्धन ग्रुप ने वी एच एफ यू एच एफ, एफ एम व टी वी प्लानिंग के लिए भी साफ्टवेयर तैयार किया जिसके लिए वित्तीय सहायता एशिया ब्राडकास्टिंग यूनियन से मिली थी।

4.14.5 श्रव्य कार्यक्रमों को सुनने व विश्लेषण करने के लिए एकाउस्टिक ग्रुप ने एक स्टीरियोफोनिक रिकार्डिंग स्टूडियो व संदर्भ श्रवण कक्ष का डिजाइन बनाकर उन्हें चालू किया। प्रोटोटाइप एकक ने विभिन्न अनुसंधान व विकास माडलों के सैंपल यूनिट तैयार किए और माइक्रो प्रोसेसर पर आधारित इलेक्ट्रानिक सर्किटों के उपयोग से देश में टी.वी. कार्यक्रम की पहुंच वाले क्षेत्रों का मानचित्र भी तैयार किया।

विविध

4.15.1 समुद्र तटवर्ती अनेक इलाके समुद्री तूफान से प्रभावित हुए थे और इन क्षेत्रों के आकाशवाणी केंद्रों ने दिन-रात मौसम संबंधी चेतावनी देने के लिए प्रसारण जारी रखे

4.15.2 वैज्ञानिक व प्रायोगिक विकास के अनुरूप आकाशवाणी ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से सम्पर्क बनाए रखा इनमें ए आई बी डी, आई टी यू, ए बी यू, ई बी यू शामिल हैं। इनके सम्मेलनों, गोष्ठियों, कार्यशालाओं आदि में आकाशवाणी ने भाग लिया। वर्ष की सर्वाधिक महत्वपूर्ण गतिविधि थी— स्पेन में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासनिक रेडियो सम्मेलन जिसमें प्रसारण उपग्रह सेवा के लिए फ्रीक्वेंसी बैंड आवंटित किए गए व उच्च फ्रीक्वेंसी प्रसारण के लिए अतिरिक्त आवंटन भी किए गए।

4.15.3 इस वर्ष का पटेल स्मारक भाषण सुप्रसिद्ध न्यायविद श्री नानी पालखीवाला ने दिया इसके लिए उन्होंने 'सरदार पटेल की निरंतर सार्थकता' विषय को चुना। यह भाषण बंबई में 30-10-92 को आमंत्रित श्रोताओं के सम्मुख दिया गया और से 1-11-92 को राष्ट्रीय प्रसारण में प्रसारित किया गया। डा. राजेंद्र प्रसाद स्मारक भाषण, 1992 संसद सदस्य श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने भोपाल में नवंबर, 1992 में आमंत्रित श्रोताओं के सम्मुख दिया। इसका विषय था: 'सेक्युलरवाद: भारतीय परिकल्पना.' यह भाषण आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित किया गया।

4.15.4 आकाशवाणी ने संसद के मानसून अधिवेशन से लोकसभा व राज्यसभा में प्रश्नोत्तर काल की कार्यवाही का प्रसारण आरंभ किया।

4.15.5 पिछले वर्षों की तरह, आकाशवाणी ने इस वर्ष भी ननकाना साहब, पाकिस्तान में सिखों के पवित्र तीर्थस्थल से गुरु नानक के जयंती समारोह का आंखों देखा हाल प्रसारित किया।

4.15.6 सरकार ने 1990 में सीधी भर्ती के लिए विभिन्न सेवाओं में अनुसूचित जातियों/जनजातियों के लिए खाली पड़े पद भरने के लिए विशेष भर्ती अभियान चलाया है। तीसरा विशेष भर्ती अभियान इस वर्ष चलाया गया। अब तक इसके अंतर्गत अनुसूचित जातियों के लिए 97 पद व अनुसूचित जनजातियों के लिए 56 पद भरे जा चुके हैं.

दूरदर्शन

नेटवर्क

5.1.1 दूरदर्शन अपने 24 कार्यक्रम निर्माण केन्द्रों और अलग-अलग शक्ति के 541 ट्रान्समीटरों की सहायता से देश के लगभग 82.4 प्रतिशत लोगों तक अपने कार्यक्रम पहुंचा रहा है और यह विश्व के प्रमुख टेलीविजन संगठनों में गिना जाने लगा है। दूरदर्शन के ट्रान्समीटरों का ब्योरा इस प्रकार है:-

1.	उच्च शक्ति के ट्रान्समीटर	66
2.	कम शक्ति के ट्रान्समीटर	372
3.	बहुत कम शक्ति के ट्रान्समीटर	80
4.	ट्रान्सपोजर	23

देश के चार महानगरों — दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में इस समय दूसरे चैनल की टेलीविजन सेवा उपलब्ध है

5.1.2 1992-93 के दौरान (जनवरी 1993 तक) दूरदर्शन ने भोपाल, भुवनेश्वर और अगरतला में तीन स्टूडियो केन्द्र, पांडिचेरी में एक कार्यक्रम उत्पादन सुविधा केन्द्र (पी.जी.एफ.) और विभिन्न शक्ति के 18 ट्रान्समीटर चालू किए, जो इस प्रकार हैं:-

अ.	उच्च शक्ति के ट्रान्समीटर	तिरुपति, जगदलपुर, जबलपुर, (अंतरिम व्यवस्था) और बरेली।
ब.	कम शक्ति के ट्रान्समीटर	पुरी, वल्लभनगर, मयूरम, एलान्डू, करणपुर, रायसिंहनगर, कोन्टाई, कोटपुतली और नागपट्टनम
स.	बहुत कम शक्ति के ट्रान्समीटर	किलहोन्ग्न, द्रास, जांकू और तिनसोगम
द.	ट्रान्सपोजर	औरंगाबाद।

पोर्ट ब्लेयर और बरेली में कार्यक्रम उत्पादन सुविधा केन्द्रों को स्थापित करने का काम पूरा कर लिया गया है इसके अतिरिक्त धारवाड़ में उच्च शक्ति का टेलीविजन ट्रान्समीटर और सुजानगढ़ (राजस्थान), भीमावरम (आन्ध्रप्रदेश), झाड़ग्राम (पं. बंगाल), पुरुलिया (पं. बंगाल) और खंभात (गुजरात) में कम शक्ति के टेलीविजन ट्रान्समीटर तथा मालदा (प. बंगाल) में बहुत कम क्षमता का टेलीविजन ट्रान्समीटर चालू किए जाने के लिए तैयार है। 1992-93 की शेष अवधि के दौरान बाड़मेर (अन्तरिम व्यवस्था), भुज (अंतरिम व्यवस्था), बूंदी, शिमला, कालीकट (अंतरिम व्यवस्था) में 5 उच्च क्षमता के टेलीविजन ट्रान्समीटरों को लगाने का काम पूरा किया जाना है आइजोल में स्टूडियो केन्द्र बनाने का काम भी पूरा हो जाने की आशा है।

5.1.3 दूरदर्शन ने 1993-94 के लिए जो लक्ष्य रखे हैं उनमें 6 उच्च शक्ति के ट्रान्समीटरों का चालू किया जाना शामिल है। इन में से जैसलमेर (10 किलोवाट), गंगटोक (एक किलोवाट), लुंगलेई (एक किलोवाट), मोकोकचुंग (एक किलोवाट), लेह (1 किलोवाट), चुराचांदपुर (1 किलोवाट) में एक ट्रान्समीटर, कम शक्ति के 38 ट्रान्समीटर, बहुत कम शक्ति के 20 ट्रान्समीटर और दो ट्रान्सपोजरों का चालू किया जाना शामिल है इसके अलावा ईटानगर, शिमला और पटना में स्टूडियो केन्द्र परियोजना, मद्रास और कलकत्ता में सेकेन्ड चैनल के स्टूडियो, सिलीगुड़ी और जम्मू में कार्यक्रम उत्पादन सुविधा केन्द्रों तथा जयपुर और भोपाल में उपग्रह अपलिंक कायम करने का लक्ष्य रखा गया है राजस्थान और मध्य प्रदेश में क्षेत्रीय टेलीविजन सेवाएं शुरू करने के लिए जयपुर और भोपाल में उपग्रह पर आधारित अपलिंक का इस्तेमाल किया जाएगा।

उपग्रह सेवा

5.2.1 दूरदर्शन विश्व के उन इने-गिने प्रतिष्ठानों में एक है जो राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सेवाओं के प्रसारण के लिए अपने ही देश में निर्मित उपग्रहों का उपयोग करते हैं। संपूर्ण नेटवर्क 'इन्सेट' के जरिए जुड़ा हुआ है आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा,

कर्नाटक, तमिलनाडु और गुजरात में उपग्रह पर आधारित क्षेत्रीय सेवाएं चल रही हैं। प्रादेशिक सेवा के लिए निर्धारित समय के दौरान इन केन्द्रों से तैयार कार्यक्रमों को रिले करने के लिए उपग्रह के जरिए संबद्ध राज्यों की राजधानियों में दूरदर्शन केन्द्रों से इन राज्यों के टेलीविजन ट्रान्समीटरों को जोड़ दिया जाता है। उपरोक्त के अलावा असम में उच्चशक्ति और कम शक्ति के ट्रान्समीटरों को 15 मिनट की सीमित अवधि के लिए दूरदर्शन केन्द्र, गुवाहाटी से जोड़ दिया जाता है ताकि असमिया समाचार बुलेटिनों को रिले किया जा सके माइक्रोवेव से जुड़ी क्षेत्रीय टेलीविजन सेवा इस समय पंजाब, केरल और उत्तर प्रदेश में उपलब्ध है।

5.2.2 उपग्रह पर आधारित क्षेत्रीय टेलीविजन सेवा गुजरात में शुरू हो गई है। कलकत्ता में उपग्रह अपलिंक सुविधा चालू हो गई है। अनन्तपुर में टेलीविजन ट्रान्समीटर की शक्ति एक किलोवाट से बढ़ाकर दस किलोवाट कर दी गई है. इन ट्रान्समीटरों के प्रसारण क्षेत्र के दायरे में प्रादेशिक टेलीविजन सेवा के प्रसार के लिए कानपुर, इलाहाबाद और वाराणसी में उच्च शक्ति के टेलीविजन केन्द्रों तथा दूरदर्शन केन्द्र, लखनऊ के बीच माइक्रोवेव सम्पर्क कायम किया गया है. असम में जब तक स्टूडियो केन्द्र चालू नहीं हो जाते, तब तक के लिए स्थानीय महत्व के आधे घंटे के कार्यक्रमों को रिले करने के वास्ते सिल्चर और डिब्रूगढ़ में उच्च शक्ति के ट्रान्समीटर केन्द्रों पर प्लेबैक सुविधा शुरू की गयी है

राष्ट्रीय कार्यक्रम

5.3.1 दिसम्बर 1992 के अन्त तक दूरदर्शन शाम 8.40 से रात 11.30 तक राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा था हर बुधवार को पुरस्कार प्राप्त/पुरानी श्रेष्ट फिल्मों तथा हर शुक्रवार को देर रात/कला फिल्मों को प्रसारित करने के लिए प्रसारण का समय रात 11.30 से आगे बढ़ा दिया जाता था। सामायिक रुचि के कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए भी कभी-कभी प्रसारण समय बढ़ाया गया है। मुख्य समय यानी प्राइम टाइम पर धारावाहिक प्रसारणों के अलावा राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित किए जाने वाले अन्य कार्यक्रमों में हिन्दी और अंग्रेजी में सामयिक विषयों पर कार्यक्रम जैसे फोकस, परख, कल्चरल मैग्जीन, संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रम और क्षेत्रीय सुगम तथा लोकसंगीत के कार्यक्रम, नृत्य/बैले/ अंग्रेजी के धारावाहिक, वृत्त चित्र, नयी आर्थिक नीति, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, परिवार कल्याण, पर्यावरण, विकास कार्यक्रम, क्विज, टेली-फिल्म, कवि सम्मेलन और मुशायरे तथा टी.वी. शो आदि कार्यक्रम शामिल है।

5.3.2 दूरदर्शन ने 1.1.1993 से राष्ट्रीय कार्यक्रमों, राष्ट्रीय नेटवर्क कार्यक्रमों के प्रसारण की संशोधित पद्धति शुरू की है। राष्ट्रीय कार्यक्रम अब शाम 8.30 पर शुरू होता है और रात 11.30 तक जारी रहता है। अब रात 8.30 से 9.45 के बीच (जिस समय सबसे अधिक दर्शक टेलीविजन देखने के लिए मौजूद रहते हैं)। एक घंटे का मनोरंजन कार्यक्रम, अंग्रेजी धारावाहिक, विज्ञान पत्रिका कार्यक्रम, क्विज कार्यक्रम आदि शामिल किए गए हैं। दोपहर के बाद भी नेटवर्क प्रसारण का समय बढ़ा दिया गया है

प्रातः प्रसारण

5.4 प्रातः प्रसारण 23 फरवरी 1987 से शुरू किया गया था; उस समय इसकी अवधि 45 मिनट की होती थी अब रविवार को छोड़कर (उस दिन केवल 75 मिनट का प्रसारण होता है) सप्ताह के अन्य सभी दिनों 110 मिनट का प्रसारण किया जाता है प्रसारण में आमतौर पर स्किट, हल्के फुल्के धारावाहिक, विशिष्ट व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार, लघु वृत्त चित्र, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, सुगम संगीत और आर्थिक मनोरंजन कार्यक्रमों के अलावा गीत और नृत्य पर आधारित कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं इसके अलावा ताजे आर्थिक मसलों पर आर्थिक पत्रिका कार्यक्रम भी प्रसारित किया जाता है। सुबह 7 बजे हिन्दी में और 8 15 पर अंग्रेजी में 15-15 मिनट के दो समाचार बुलेटिन भी प्रसारित किए जाते हैं।

अपराह्न प्रसारण

5.5 शुरू में हर रविवार को अपराह्न प्रसारण होता था; बाद में इसे हर शनिवार को भी प्रसारित किया जाने लगा. 26 जनवरी 1989 से सप्ताह के सभी दिन दोपहर बाद का प्रसारण होने लगा। रविवारीय सेवा दोपहर बाद एक बज कर 15 मिनट पर मूक और बधिरों के लिए समाचार बुलेटिन से शुरू होती है। तत्पश्चात प्रादेशिक भाषा में वृत्त चित्र प्रसारित किया जाता है। शनिवार को प्रसारण का समय अपराह्न 2 बजे से 4.30 तक और अन्य दिनों अपराह्न 2 बजे से 3.10 के बीच होता था। प्रसारण मुख्यतया उन बच्चों, महिलाओं और अन्य बुजुर्ग लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखकर प्रसारित किए जाते हैं, जो आम तौर पर इस समय घर पर होते हैं, ये कार्यक्रम बातचीत की शैली में और समेकित रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। जनवरी 1993 से अपराह्न प्रसारण का समय बढ़ा कर 4 बजे तक कर दिया गया है। सप्ताह में चार दिन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं मंगलवार को हिन्दी में वृत्त चित्र तथा शनिवार को शाम 5 बजे तक खेल कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है।

सांध्य प्रसारण

5.6 शाम 8.30 बजे तक का समय प्रादेशिक केन्द्रों के प्रयोग के लिए निर्धारित किया गया है, जिसमें वे सम्बद्ध प्रादेशिक भाषाओं में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। हिन्दी और अंग्रेजी में मुख्य समाचार बुलेटिन क्रमशः रात 8.30 और 9.45 पर प्रसारित किए जाते हैं। अंग्रेजी समाचार के तुरन्त बाद, यदि संसद का अधिवेशन

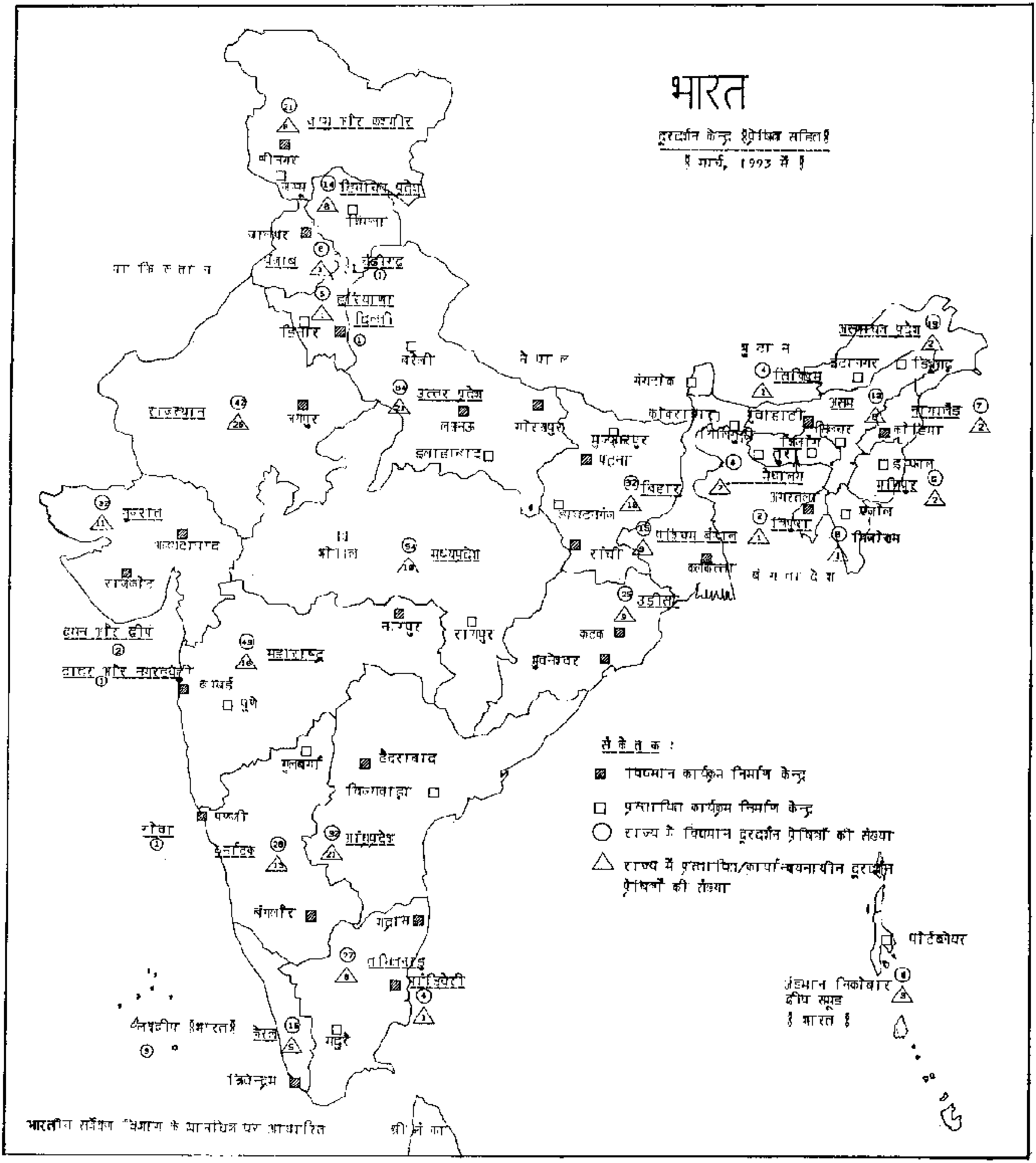

भारत
दूरदर्शन केन्द्र (प्रेषित्र सहित)
(मार्च, 1993 में)
संकेतक :
विद्यमान कार्यक्रम निर्माण केन्द्र
प्रस्तावित कार्यक्रम निर्माण केन्द्र
राज्य में विद्यमान दूरदर्शन प्रेषित्रों की संख्या
राज्य में प्रस्तावित/कार्यान्वयनाधीन दूरदर्शन प्रेषित्रों की संख्या
जम्मू और कश्मीर
श्रीनगर
हिमाचल प्रदेश
शिमला
पंजाब
चंडीगढ़
हरियाणा
दिल्ली
हिसार
बरेली
नेपाल
पाकिस्तान
राजस्थान
जयपुर
उत्तर प्रदेश
लखनऊ
गोरखपुर
इलाहाबाद
मुजफ्फरपुर
पटना
बिहार
रांची
गुजरात
अहमदाबाद
राजकोट
भोपाल
मध्यप्रदेश
पश्चिम बंगाल
कलकत्ता
उड़ीसा
कटक
भुवनेश्वर
नागपुर
रायपुर
महाराष्ट्र
बम्बई
पुणे
दमन और दीव
दादर और नगरहवेली
गुलबर्गा
हैदराबाद
विजयवाड़ा
पणजी
गोवा
कर्नाटक
आंध्रप्रदेश
बंगलौर
मद्रास
तमिलनाडु
पांडिचेरी
मदुरै
केरल
त्रिवेन्द्रम
लक्षद्वीप (भारत)
श्रीलंका
सिक्किम
गंगटोक
भूटान
अरुणाचल प्रदेश
असम
गुवाहाटी
सिलचर
शिलांग
मेघालय
नागालैंड
कोहिमा
इम्फाल
मणिपुर
अगरतला
त्रिपुरा
मिजोरम
बंगलादेश
पोर्टब्लेयर
अंडमान निकोबार द्वीप समूह (भारत)
भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्र पर आधारित

चल रहा हो तो रात 10 बजे संसद समाचार प्रसारित किये जाते हैं। अंग्रेजी में 10 मिनट तक 'टूडे इन पार्लियामेन्ट' रात 10.40 पर प्रसारित किया जाता है।

समाचार तथा सामयिक विषय

5.7 समाचार तथा सामयिक विषय दूरदर्शन कार्यक्रमों का एक प्रमुख हिस्सा है। दर्शकों को पर्याप्त तथ्यपरक तथा सही सूचना उपलब्ध कराने के लिए लगातार प्रयास किए जाते हैं। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में ही साढ़े सात-साढ़े सात मिनट के प्रतिदिन दो समाचार बुलेटिन क्रमशः अपराह्न दो बजे और तीन बजे प्रसारित किए जाते थे। अब इनका समय बढ़ा कर 10-10 मिनट कर दिया गया है। हिन्दी और अंग्रेजी में मुख्य समाचार बुलेटिनों का समय 1.1.1993 से बदल कर क्रमशः रात 8.30 और 9.45 कर दिया गया है। जब कि पहले यह समय हिन्दी में रात 8.45 और अंग्रेजी में रात 9.30 होता था। संसद समाचार अब रात 10 बजे प्रसारित किया जाता है और अंग्रेजी में 'टूडे इन पार्लियामेन्ट' रात 10.40 पर प्रसारित होता है। 10 मिनट की अवधि का यह कार्यक्रम तभी प्रसारित होता है जब संसद का सत्र चल रहा हो। दूरदर्शन केन्द्र दिल्ली, हैदराबाद, लखनऊ और पटना से मई 1992 से तथा अगस्त 1992 से कलकत्ता से 5-5 मिनट के उर्दू समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन केन्द्र, गुवाहाटी ने भी 19-11-1992 से असमिया में अतिरिक्त प्रातःकालीन समाचार बुलेटिन शुरू किया है। इस समय कार्यक्रम तैयार करने की सुविधा वाले दूरदर्शन के केवल 14 केन्द्रों से सम्बद्ध प्रादेशिक भाषाओं में समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन केन्द्र श्रीनगर, अब दूरदर्शन केन्द्र जम्मू द्वारा तैयार किए गए प्रादेशिक समाचार प्रस्तुत करता है। प्रादेशिक समाचार बुलेटिन की अवधि 15-15 मिनट की होती है। बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में मैट्रो चैनल पर 10-10 मिनट के समाचार बुलेटिन प्रादेशिक भाषाओं में प्रसारित किए जाते हैं।

प्रायोजित कार्यक्रम

5.8 प्रायोजित कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत प्रोड्यूसर को कार्यक्रमों की उत्पादन लागत को वहन करना पड़ता है। इसके अलावा उसे समय-समय पर तैयार किए गए स्वीकृत रेट कार्ड के अनुसार दूरदर्शन को शुल्क अदा करना पड़ता है। उसके बदले में प्रोड्यूसर/प्रायोजक को कर-मुक्त विज्ञापन समय प्राप्त होता है। जैसा कि दूरदर्शन द्वारा विज्ञापन संदेशों के प्रसारण के लिए निर्धारित है लेकिन इसके लिए अग्रिम स्वीकृति आवश्यक है।

विज्ञापन

5.9.1 दूरदर्शन पर विज्ञापन सेवा 1976 में शुरू की गयी। राष्ट्रीय नेटवर्क और 4 मेट्रो चैनलों के अलावा विज्ञापन और प्रायोजित कार्यक्रम 11 केन्द्रों से प्रसारित किए जाते हैं:-

1.	दिल्ली चैनल	I और II
2.	कलकत्ता चैनल	I और II
3.	मद्रास चैनल	I और II
4.	बम्बई चैनल	I और II
5.	हैदराबाद	
6.	बंगलौर	
7.	जालन्धर	
8.	लखनऊ	
9.	श्रीनगर	
10.	त्रिवेन्द्रम	
11.	अहमदाबाद	

5.9.2 दूरदर्शन वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए विज्ञापन प्रसारित करता है। विज्ञापनों को व्यापारिक विज्ञापन आचार संहिता के अनुसार ही स्वीकार किया जाता है। सिगरेटों, तंबाकू से तैयार चीजों, मादक पदार्थों, शराब तथा अन्य नशीले पदार्थों, गहनों और पान मसालों के विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते।

5.9.3 विज्ञापनों से दूरदर्शन की आय में निरन्तर वृद्धि होती गयी है। पिछले दो वर्षों में हुई कुल आमदनी इस प्रकार है:

1991 — 286.10 करोड़

1992 — 354.69 करोड़

विशेष अभियान

5.10.1 दूरदर्शन अपनी स्थापना के समय से सामाजिक महत्व के सन्देशों, विकास गतिविधियों, राष्ट्रीय एकता आदि के कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है। इन दिनों दूरदर्शन परिवार कल्याण, बीस-सूत्री कार्यक्रम, मादक पदार्थों को रोकने के अभियान, टीकाकरण, स्वास्थ्य और एड्स, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में युवाओं की भागीदारी, महिलाओं की स्थिति, मद्य-निषेध, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, उपभोक्ता संरक्षण, प्रौद्योगिकी मिशन, अस्पृश्यता निवारण, लघु बचत, ऊर्जा संरक्षण, अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए 15- सूत्री कार्यक्रम, नए आर्थिक उपायों, सार्वजनिक वितरण प्रणाली आदि से सम्बद्ध संदेशों को नियमित रूप से प्रसारित करता है।

5.10.2 दूरदर्शन अन्य मंत्रालयों के सहयोग से प्रौढ़ साक्षरता, बाल श्रमिक, आयकर, अग्नि-शमन, पेट्रोल संरक्षण, पर्यावरण आदि जैसे क्षेत्रों के लिए संयुक्त रूप से कार्यनीति तैयार करता है।

5.10.3 दूरदर्शन ने असम, जम्मू-कश्मीर और पंजाब के बारे में विशेष सूचना अभियान चलाया, ताकि इन इलाकों की विकास

गतिविधियों को पेश किया जा सके और साम्प्रदायिक सद्भाव तथा राष्ट्रीय एकता की भावनाओं को प्रस्तुत किया जा सके।

ग्रामीण कार्यक्रम

5.11.1 दूरदर्शन के सभी केन्द्र अपने सामान्य कार्यक्रमों में गांव में रहने वाले श्रोताओं के लाभ के लिए अपने सेवा क्षेत्र में नियमित रूप से कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। इन कार्यक्रमों में ग्रामीण रुचि के अनुसार मनोरंजक बातों को शामिल करने के अलावा विकास के कई अन्य पहलुओं को भी सम्मिलित किया जाता है जैसे-परिवार कल्याण परियोजनाएं, सामुदायिक विकास, पशु-पालन, व्यावहारिक साक्षरता आदि। लेकिन मुख्य जोर कृषि पर दिया जाता है।

5.11.2 दूरदर्शन के प्रत्येक केन्द्र की एक ग्रामीण कार्यक्रम सलाहकार समिति होती है। इस समिति में राज्यों के सम्बद्ध विभागों के कर्मचारी, कृषि विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं के विशेषज्ञ, प्रगतिशील किसान सदस्य के रूप में शामिल होते हैं।। समिति ग्रामीण कार्यक्रमों और अन्य सम्बद्ध मामलों की तिमाही सूची को अंतिम रूप देने में केन्द्र को सलाह देती है।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम

5.12 प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम दूरदर्शन प्रसारण का एक महत्वपूर्ण अंग है। ग्रामीण युवकों, महिलाओं और औद्योगिक श्रमिकों जैसे खास वर्ग के दर्शकों के लिए तैयार किए गए कार्यक्रम मुख्य रूप से इसमें शामिल किए जाते हैं। ये कार्यक्रम मूलतः अनौपचारिक होते हैं और प्रौढ़ शिक्षा से सीधे जुड़े होते हैं। कुछ क्षेत्रों में पूर्ण साक्षरता हासिल करने के बारे में कार्यक्रम दूरदर्शन से प्रदर्शित किए गए। 'चौराहा' नामक एक प्रौढ़ शिक्षा धारावाहिक सप्ताह में 5 दिन दोपहर की सभा में प्रसारित किया गया। इसे शाम को दिल्ली तथा एल.पी. टी. से भी प्रसारित किया गया।

सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम

5.13 बच्चों के लिए कार्यक्रमों के अलावा उपेक्षित तथा बेसहारा, उत्पीड़ित तथा शोषित बच्चों, बाल श्रमिकों, किशोरों, और नशीले पदार्थों की लत वाले बच्चों तथा विकलांगों, अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाले बच्चों और बालिकाओं के साथ भेदभाव के व्यवहार के बारे में भी जागरूकता पैदा करने के लिए कार्यक्रमों में जोर दिया गया। दूरदर्शन द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों में शिशुओं की मृत्यु, बीमारी तथा कुपोषण की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया और बच्चों की देखभाल, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता, पोषाहार, टीकाकरण, दो बच्चों के जन्म के बीच अन्तर रखने, परिवार कल्याण, शिशुओं और बढ़ते हुए बच्चों की अन्य आवश्यकताओं से सम्बद्ध कार्यक्रमों को निर्दिष्ट समय पर प्रसारित किया गया।

शैक्षिक कार्यक्रम

5.14.1 दूरदर्शन से आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे 6 राज्यों के चुने हुए तीन जिला समूहों में प्राथमिक स्कूल के बच्चों के लिए शैक्षिक टेलीविजन सेवा के अन्तर्गत प्रसारण पूर्ववत जारी रहा। उपग्रह की सेवा प्राप्त इन 6 राज्यों में केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान यानी सी.आई.ई.टी. और राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (एस.आई.ई.टी) द्वारा कार्यक्रम तैयार किए गए। शैक्षिक टी.वी. कार्यक्रम आम तौर पर ज्ञानवर्द्धक होते हैं, वे स्कूली पाठ्यक्रम पर आधारित नहीं होते। हर भाषा में शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रमों की अवधि 45 मिनट होती है। प्राइमरी स्कूल के बच्चों के लिए 4 से 8 वर्ष तथा 9 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए अलग-अलग कार्यक्रम होते हैं। शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम केवल निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित नहीं होते, इनमें विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के साथ सामान्य दिलचस्पी वाले सभी विषय शामिल किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य प्रत्यक्ष शिक्षण पर जोर देने, केवल पाठ्यक्रमों तक सीमित रहने वाले दृष्टिकोण से अलग हटाने और कक्षा में पुस्तकों के भार को कम करने का है। सप्ताह में हर शनिवार को प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के मार्गनिर्देश तथा प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं।

5.14.2 स्कूल टेलीविजन कार्यक्रम निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार किए जाते हैं। उन्हें दिल्ली, बम्बई, मद्रास और श्रीनगर के दूरदर्शन केन्द्रों पर सम्बद्ध राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के शिक्षा अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करके तैयार किया जाता है। प्रत्येक सप्ताह इन कार्यक्रमों की संख्या हर केन्द्र से 2 से 5 तक होती है।

5.14.3 विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए दूरदर्शन उच्च शिक्षा से सम्बद्ध ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम एक घंटे के लिए प्रसारित करता है जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तैयार करता है। राष्ट्रीय नेटवर्क पर यह दिन में एक बजे से 2 बजे तक प्रसारित किया जाता है और पुनः शाम 4 बजे से 5 बजे तक इन कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय के सहायक शिक्षा कार्यक्रम प्रायोगिक आधार पर हर सप्ताह सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को प्रातः 6.30 से 7 बजे तक प्रसारित किए जाते थे। जनवरी 1993 से इनके प्रसारण का समय बदलकर प्रातः 6.25 से 6.55 तक कर दिया गया है।

युवा कार्यक्रम

5.15 दूरदर्शन युवाओं के लिए कार्यक्रमों का प्रसारण पूर्ववत जारी रखे हुए है। ये कार्यक्रम परिचर्चा, भेंट वार्ता, वाद-विवाद, क्विज, नाटक तथा खेल और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय खेल

कार्यक्रमों के लिए प्रस्तुत किए जाते है। इन कार्यक्रमों में स्वास्थ्य के स्तर, शिक्षा के मानदंड, बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों को भी ध्यान में रखा गया। मादक पदार्थों तथा मद्य निषेध के बारे में भी अनेक कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित किए गए। शराब पीने तथा नशीले पदार्थों की लत की बुराइयों के बारे में भी नियमित रूप से कार्यक्रम दिखाए गए। विभिन्न विभागों में सेवा के अवसरों के बारे में जानकारी देने के लिए रोजगार समाचार नियमित रूप से प्रसारित किया गया। शिक्षित युवाओं के लिए बैंकों द्वारा ऋण सुविधाओं और रोजगार के अन्य अवसरों के बारे में परिचर्चाएं भी प्रसारित की गयीं।

विज्ञान कार्यक्रम

5.16 दूरदर्शन केन्द्रों से विज्ञान के विकास से सम्बद्ध अनेक गतिविधियों के कार्यक्रमों को प्रसारित किया गया। प्रख्यात वैज्ञानिकों, संस्थाओं एवं प्रयोगशालाओं के बारे में कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विज्ञान से संबंधित 'क्विज' कार्यक्रम को युवा लोग बहुत पसन्द करते हैं। कई केन्द्रों से बच्चों के लिए भी विज्ञान कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में भी विज्ञान पर कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। टर्निंग प्वाइंट-दूरदर्शन-टाइम्स, टी.वी. टाइम्स जैसे विज्ञान पत्रिका के सह-निर्मित कार्यक्रमों में भारतीय विज्ञान और टेक्नोलाजी पर विशेष जोर दिया गया और इसे जनवरी 1993 से साप्ताहिक कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया गया

कथा चित्र और फिल्मों पर आधारित कार्यक्रम

5.17 1 जनवरी 1993 से राष्ट्रीय नेटवर्क पर कथा चित्रों तथा फिल्मों पर आधारित कार्यक्रमों के प्रसारण मामले में निम्नलिखित पद्धति अपनायी गयी:

कथा चित्र

रविवार	I	प्रादेशिक कथा चित्र-अपराह्न 1.30
	II	हिन्दी कथा चित्र सांय 5.30
सोमवार		टेली-फिल्म-रात 10.30
मंगलवार		हिंदी कथा चित्र-अपराह्न 2.10
बुधवार		पुरस्कार विजेता कथाचित्र पुरानी उत्कृष्ट/अंग्रेजी फिल्में -रात 10.30
शुक्रवार		देर रात तक चलने वाली फीचर फिल्म-रात 10.30
शनिवार		हिंदी कथा-चित्र-सायं 5.30

मेट्रो-समय

5.18 26 जनवरी 1993 से दिल्ली, बम्बई, मद्रास और कलकत्ता में मेट्रो चैनल पर एक घंटे का मनोरंजन कार्यक्रम रात 8 बजे से 9 बजे तक निर्धारित किया गया। इसे 'मेट्रो आवर' का नाम दिया गया। आधे-आधे घंटे के दो 'स्लॉट' निजी निर्माताओं को अपने कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए निर्धारित किए गए।

खेल

5.19.1 दूरदर्शन खेलों को उच्च प्राथमिकता दे रहा है। जनवरी से दिसम्बर 1992 के दौरान लगभग 60 खेल प्रसारण सीधे किए गए। इन विभिन्न खेल कार्यक्रमों में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम शामिल किए गए। राष्ट्रीय खेल पत्रिका 'वर्ल्ड ऑफ स्पोर्ट्स' शीर्षक साप्ताहिक कार्यक्रम में अनेक खेल कार्यक्रमों को प्रसारित किया गया यह प्रतिदिन दोपहर बाद हर रविवार को प्रसारित किया जाता है। दूरदर्शन ने बार्सीलोना ओलम्पिक 1992 को व्यापक रूप से प्रसारित किया। खेलों का आंखों देखा हाल तथा उसकी रिकार्डिंग लगभग 110 घंटे दिखायी गयी आंखों देखा हाल में उद्घाटन और समापन समारोह और फुटबाल, वालीबाल बैडमिन्टन तथा महिलाओं के सिंगल्स टेनिस के सेमी फाइनल तथा फाइनल मुकाबले शामिल हैं। जिमनास्टिक, एथलीटिक, नौकायन, साइकिल चालन, घुड़सवारी, तीरंदाजी और नौका चालन जैसे खेलों के अलावा विभिन्न चैनलों पर दूरदर्शन पर इन्हें सीधे दिखाया गया।

5.19.2 दूरदर्शन ने 15 फरवरी 1993 से एक घंटे का कार्यक्रम शुरू किया। मेट्रो चैनल पर 'स्पोर्ट्स आवर' शीर्षक शाम 6.30 से 7.30 तक (सोमवार से शुक्रवार) दिखाया गया। इसके अलावा 1 मार्च 1993 से सभी प्रादेशिक केन्द्रों से प्राइमरी चैनल पर आधे घंटे का खेल कार्यक्रम सप्ताह में चार बार भी शुरू हुआ।

विपणन

5.20 चालू वर्ष के लिए अनुमानित अर्जित आय 2,50,000 अमरीकी डालर होगी अंतर्राष्ट्रीय विपणन द्वारा वर्ष के दौरान आशा है कि दूरदर्शन की कार्यक्रम विनिमय इकाई वीडियो कापी आदि के लिए कार्यक्रमों तथा तकनीकी शुल्कों की बिक्री के जरिए संस्थाओं तथा व्यक्तियों को सेवा उपलब्ध करके 20 लाख रुपए कमा लेगी।

सह-निर्माण

5.21.1 विदेशी संगठनों तथा सरकार के साथ कार्यक्रमों के आदान-प्रदान और सांस्कृतिक समझौते को मजबूत बनाने के लिए दूरदर्शन ने आपसी सहमति के आधार पर फिल्मों और कार्यक्रमों के सह निर्माण का कार्य शुरू किया है।

5.21.2 दूरदर्शन और सी.सी.टी.वी., चीन मिल कर 'बोधि धर्म' और 'चुवान चुवांग' पर फिल्में मिलकर बना रहे हैं। 'बोधि धर्म' महान भारतीय विचारक और दार्शनिक पर बनायी जा रही है, एक भारतीय राजकुमार जिसने बौद्ध धर्म अपना लिया था और जो 'झेन' के प्रथम धर्माध्यक्ष थे। एक लघु फिल्म/फीचर फिल्म को 'लास्टिंग लिंक,' को 'भारत में चीन' पूर्वावलोकन में 28 नवम्बर 1992 को प्रदर्शित किया गया।

5.21.3 1992 के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय सह-निर्माण के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम प्रसारित किए गए:

1. ताजमहल	जर्मनी के ट्रॉन्सटेल और भारत के दूरदर्शन ने मिलकर तैयार किया है।
2. 'बट आई हैव प्रामिजेज टू कीप'	पंडित जवाहरलाल नेहरू के जीवन पर आधारित फिल्म जिसे अमरीका के श्री कैनेथ ग्रिफिथ और भारतीय दूरदर्शन ने मिलकर तैयार किया है।
3. बोधि धर्म	40 मिनट का वृत्त चित्र शीर्षक "दि लास्टिंग लिंक' और सी.सी.टी.वी चीन, दूरदर्शन भारत की सह-निर्मिति। (दो घंटे की इसके आगे की फिल्म 1993 में बनायी जा रही है)

विशेष कार्यक्रम

'भारत छोड़ो आन्दोलन' का स्वर्ण जयंती समारोह।

5.22.1 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के स्वर्ण जयंती समारोहों के अवसर पर 8 अगस्त 1992 को विशेष रूप से आयोजित संसद के संयुक्त अधिवेशन का सीधा प्रसारण किया गया। संसद का यह संयुक्त अधिवेशन 9 अगस्त 1992 को बम्बई में ग्वालिया टैंक पर विशेष समारोह के रूप में आयोजित किया गया था। राष्ट्रीय नेटवर्क पर तथा दूरदर्शन के सभी केन्द्रों से 'भारत छोड़ो आन्दोलन' पर विशेष कार्यक्रम तथा फिल्में साल भर प्रसारित की गयीं।

डाक्टर बी.आर. आम्बेडकर पर कार्यक्रम

5.22.2 डाक्टर बी.आर. आम्बेडकर के शताब्दी समारोह के सिलसिले में एक कथा चित्र 'बालक आम्बेडकर' और डाक्टर बी. आर. आम्बेडकर पर एक जीवन वृत्त धारावाहिक दूरदर्शन द्वारा आलोच्य वर्ष में प्रसारित किया गया। इसके अतिरिक्त आलोच्य वर्ष में दूरदर्शन के सभी केन्द्रों से विशेष कार्यक्रम जैसे नाटक, कथा चित्र, परिचर्चाएं, क्विज और वृत्त चित्र आदि प्रसारित किए गए।

श्री लाल बहादुर शास्त्री पर कार्यक्रम

5.22.3 श्री लाल बहादुर शास्त्री के जीवन तथा उपलब्धियों पर 8 खंडों का धारावाहिक 'धरती के लाल' आलोच्य वर्ष के दौरान राष्ट्रीय नेटवर्क पर मुख्य समय के दौरान दूरदर्शन से प्रसारित किया गया।

कार्यक्रम सलाहकार समितियां

5.23 दूरदर्शन केन्द्र दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, त्रिवेन्द्रम, श्रीनगर, जालन्धर, कटक, जयपुर, गुवाहाटी, लखनऊ, अहमदाबाद और हैदराबाद ने नृत्य, लोककला और संस्कृति, महिलाओं, विज्ञान, फिल्म, थिएटर, खेल, साहित्य, अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों, भाषाई अल्पसंख्यकों (केन्द्रों के कार्यक्रमों की भाषा के सन्दर्भ में) के क्षेत्रों में विभिन्न विधाओं के विशेषज्ञों को कार्यक्रम सलाहकार समितियों में शामिल किया गया.

दर्शक अनुसंधान

5.24 आलोच्य वर्ष के दौरान दूरदर्शन के दर्शक अनुसंधान एकक ने निम्नलिखित प्रमुख सर्वेक्षण किए:

अ. केबल और स्टार टेलीविजन के दर्शकों की संख्या तथा उनका प्रभाव

ब. बधिर लोगों के लिए समाचार कार्यक्रम की उपयोगिता।

स. उत्तर पूर्व क्षेत्र में टेलीविजन दर्शकों की स्थिति।

द. बिम्बलडन और ओलम्पिक के बारे में सर्वेक्षण।

दर्शकों से एक लाख से अधिक पत्र प्राप्त हुए, जिनमें कार्यक्रमों में सुधार के लिए सुझाव दिए गए, जिनका दर्शक अनुसंधान एकक ने विश्लेषण भी किया.

अध्याय 6

फिल्में

फिल्म प्रभाग

6.1.1 फिल्म प्रभाग भारत सरकार का फिल्म माध्यम से संबंधित प्रमुख संगठन है। इसका मुख्यालय बम्बई में है। अपने 44 वर्षों के इतिहास में फिल्म प्रभाग ने भारत में वृत्तचित्र आंदोलन के उद्‌भव और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। प्रभाग ने कई प्रतिभाशाली फिल्मकार तैयार किए हैं। इसने विभिन्न विषयों पर कई फिल्में बनवायी हैं। प्रभाग सिनेमाघरों को नियमित रूप से वृत्तचित्र सप्लाई करता है। समय के साथ-साथ फिल्म प्रभाग का विस्तार हुआ है और आज यह विश्व में सर्वाधिक लघु फिल्म निर्माता प्रतिष्ठानों में से है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन -यूनेस्को-ने इसे कनाडा के नेशनल फिल्म बोर्ड, स्वीडन के फिल्म इन्स्टीट्यूट, ब्रिटिश फिल्म इन्स्टीट्यूट, फ्रांस के सेंटर नेशनल द ला सिनेमाग्राफिक और पोलैण्ड की राष्ट्रीयकृत फिल्म इंडस्ट्री के समकक्ष रखा है।

6.1.2 फिल्म प्रभाग का उद्देश्य और लक्ष्य लोगों को फिल्म जैसे सशक्त माध्यम के जरिए शिक्षित और प्रेरित करना है, जिससे राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रम को लागू करने में उन्हें सक्रिय रूप से भागीदार बनाया जा सके। प्रभाग देश-विदेश के लोगों के सामने भारत और यहां के लोगों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की छवि प्रस्तुत करता है। भारत में वृत्तचित्र आंदोलन के विकास को बढ़ावा देने में प्रभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निर्माण

6.2.1 फिल्म प्रभाग के मुख्यालय बम्बई के अलावा दिल्ली, कलकत्ता और बंगलौर में तीन फिल्म केन्द्र हैं। फिल्म प्रभाग हर साल जो फिल्में बनाता है उनमें से साठ प्रतिशत उसके अपने निर्देशकों और प्रोड्यूसरों द्वारा बनायी जाती हैं। प्रभाग के निर्माण खंड के चार अनुभाग हैं : (1) वृत्त चित्र, (2) समाचार पत्रिका (3) ग्रामीण दर्शकों के लिए विशेष रूप से बनायी गयी छोटी फीचर फिल्में, और (4) एनीमेशन फिल्में।

6.2.2 फिल्म प्रभाग विभिन्न विषयों पर वृत्तचित्र बनाता है। इनमें कृषि, कला, वास्तुशिल्प, उद्योग, अंतर्राष्ट्रीय मामले, खाद्य-सामग्री, उत्सव-समारोह, स्वास्थ्य-चिकित्सा, आवास, विज्ञान और टेक्नोलाजी, खेल, व्यापार और वाणिज्य, परिवहन, जनजाति-कल्याण, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता जैसे विविध विषय शामिल हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रभाग ने मानव जीवन की गतिविधियों और प्रयासों के सभी पहलुओं को सम्मिलित किया।

6.2.3 वृत्तचित्र के क्षेत्र में व्यक्तिगत प्रतिभाओं को बढ़ावा देने और देश में वृत्तचित्र आंदोलन को सशक्त बनाने के लिए फिल्म प्रभाग अपने निर्माण कार्यक्रम के तहत बनने वाली चालीस प्रतिशत फिल्में अपने विभिन्न केन्द्रों के जरिए स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं से बनवाता है।

6.2.4 अपने सामान्य निर्माण कार्यक्रम के अलावा फिल्म प्रभाग भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को भी वृत्तचित्र बनाने में सहायता प्रदान करता है।

6.2.5 प्रभाग के समाचार दर्शन एकांश के दायरे में राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की राजधानियों सहित सभी प्रमुख नगर और शहर शामिल हैं. प्रभाग हर पखवाड़े एक समाचार पत्रिका तैयार करता है और संग्रहणीय सामग्री का संकलन करता है। कमेन्टरी अनुभाग अंग्रेजी और हिन्दी में बनी फिल्मों का 14 भारतीय भाषाओं में रूपांतरण करता है। जब कभी जरूरत होती है विदेशी भाषाओं में भी फिल्मों का रूपान्तरण किया जाता है।

6.2.6 प्रभाग का कार्टून फिल्म एकांश वृत्तचित्रों और समाचार पत्रिकाओं के लिए एनीमेशन चित्र तैयार करता है। अब इसके पास

कठपुतली फिल्म बनाने की भी सुविधा उपलब्ध है। उसने एनीमेशन फिल्मों के बनाने में विश्व भर में मान्यता प्राप्त की है।

6.2.7 फिल्म प्रभाग का दिल्ली एकांश कृषि और सहकारिता मंत्रालय तथा परिवार कल्याण विभाग के लिए शिक्षाप्रद और प्रेरक फिल्में भी बनाता है। एकांश ऑडिटोरियम सह फिल्म लाइब्रेरी, पूर्वावलोकन थियेटर, ध्वनि रिकार्डिंग थियेटर तथा सादी (श्वेत-श्याम) फिल्मों के निर्माण संबंधी प्रयोगशाला से सुसज्जित है। प्रभाग के नई दिल्ली स्थित कार्यालय 'एग्रीफैप' एकक के संबंध में सचिवों की समिति ने एकक को लगभग तीन वर्ष की अवधि में चरणबद्ध तरीके से समेटने की सिफारिश की है।

6.2.8 रक्षा फिल्म खंड सेना की प्रशिक्षण संबंधी फिल्मों की आवश्यकताएं पूरी करता है।

क्षेत्रीय केन्द्र

6.3.1 फिल्म प्रभाग के कलकत्ता और बंगलौर स्थित क्षेत्रीय केन्द्र गांवों से संबंधित विषयों पर एक-एक घंटे की 16 एम.एम. की छोटी फिल्में बनाते हैं। इस तरह की फिल्में किसी कथानक पर आधारित होती हैं जिनका उद्देश्य परिवार कल्याण और साम्प्रदायिक सद्भाव जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर संदेश प्रचारित करना या दहेज, बंधुआ मजदूरी और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों पर लोगों का ध्यान केन्द्रित करना है।

6.3.2 तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगला, असमिया, उड़िया तथा पूर्वोत्तर और दक्षिण क्षेत्र की कई भाषाओं और बोलियों में बनने वाली इन फिल्मों में क्षेत्रीय और भाषा संबंधी विशिष्टता बनाए रखने के लिए लेखन और अभिनय के लिए स्थानीय प्रतिभाओं का उपयोग किया जाता है। इस तरह की फिल्मों ने समाज पर अपनी छाप छोड़ी है। गांवों के लोगों में सामाजिक-आर्थिक न्याय दिलाने के कार्यक्रमों से जागरुकता बढ़ी है।

वितरण खण्ड

6.4.1 सिनेमाघरों और चलते-फिरते सिनेमाघरों की संख्या में लगातार वृद्धि से फिल्म प्रभाग के वितरण खण्ड का भी विस्तार हुआ है। अब इसके दस शाखा कार्यालय हैं। ये बम्बई, नागपुर, लखनऊ, कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, विजयवाड़ा, बंगलौर, मदुरई और तिरुअनंतपुरम में स्थित हैं। फिल्म प्रभाग की फिल्में प्रदर्शित करने वाले सिनेमाघरों में कितनी वृद्धि हुई है, इसका अनुमान उनकी संख्या में हुई वृद्धि से लगाया जा सकता है। 1952 में सिनेमाघरों और चलते-फिरते सिनेमाघरों की संख्या 3,348 थी जो 1992 में बढ़कर 12,798 हो गई है।

6.4.2 सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 के अंतर्गत सिनेमाघरों को लाइसेंस इस शर्त पर दिए जाते हैं कि इनमें प्रत्येक फिल्म शो में अधिकतम 609.60 मीटर लम्बाई की प्रमाणित डाक्यूमेंट्री/समाचार पत्रिका फिल्म प्रदर्शित की जाएगी। इसके लिए फिल्म प्रभाग देश के सभी सिनेमाघरों में प्रदर्शन के लिए हर सप्ताह वृत्तचित्रों और समाचार पत्रिका फिल्मों के 906 प्रिन्ट 15 भाषाओं में जारी कर रहा है। इन फिल्मों को एक-एक सप्ताह के लिए हर सिनेमाघर में बदल-बदल कर प्रदर्शित किया जाता है और यह प्रदर्शन तब तक जारी रहता है जब तक देश के सभी 12,798 सिनेमाघरों में ये दिखा नहीं लिए जाते। अनुमान है कि हर सप्ताह करीब 9-10 करोड़ दर्शक इन सिनेमाघरों में इन फिल्मों को देखते हैं। इनमें से सीमांत क्षेत्रों और संघ शासित क्षेत्र अण्डमान निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप जैसे सुदूर इलाकों के लगभग पांच से छः लाख तक दर्शक प्रति सप्ताह इन फिल्मों को देखते हैं।

6.4.3 फिल्म प्रभाग अपनी फिल्मों (16 मिलीमीटर) के प्रिन्ट क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय तथा केन्द्र और राज्य सरकारों के विभागों की चलती-फिरती इकाइयों को देता है। ये इकाइयां हर सप्ताह करीब चार से पांच करोड़ दर्शकों को ये फिल्में दिखाती हैं। वीडियो फिल्मों के जरिये अब दर्शकों के बहुत बड़े वर्ग तक पहुंचने की संभावनाएं बढ़ गई हैं।

6.4.4 उपर्युक्त माध्यमों के अलावा फिल्म प्रभाग के वृत्तचित्र दूरदर्शन के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत भी प्रदर्शित किए जा रहे हैं। 1992-93 में प्रभाग ने अपनी 19 फिल्में दूरदर्शन को प्रदर्शन के लिए दी हैं।

6.4.5 देश भर में कई शैक्षिक संस्थाएं तथा सामाजिक संगठन प्रभाग के दस वितरण शाखा कार्यालयों की फिल्म लाइब्रेरी से डाक्यूमेंटरी फिल्में उधार लेते हैं।

6.4.6 फिल्म प्रभाग की फिल्मों के वीडियो कैसेट तथा फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित फिल्में, गैर-व्यावसायिक उपयोग के लिए रेलवे, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, केन्द्र और राज्य सरकारों के विभागों, शैक्षिक संस्थाओं और आम लोगों को बेचे जाते हैं। अप्रैल से नवम्बर, 1992 के दौरान प्रभाग को गैर-व्यावसायिक प्रदर्शन के लिए फिल्मों के 2,283 कैसेटों की बिक्री से 3.77 लाख रुपए की आमदनी हुई।

6.4.7 विदेश मंत्रालय का विदेश प्रचार-प्रभाग फिल्म प्रभाग के वृत्तचित्रों का चुनाव करता है तथा इनके प्रिन्ट विदेशों में भारतीय दूतावासों को भेजता है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और कुछ निजी एजेंसियां भी विदेशों में ऐसी फिल्मों के वितरण की व्यवस्था करती है। प्रभाग की फिल्मों को रायल्टी अदा करने पर विदेशों में टेलीविजन और वीडियो नेटवर्क पर भी व्यावसायिक रूप से दिखाया जा सकता है।

फिल्म समारोह

6.5.1 प्रभाग बम्बई में वृत्तचित्रों, ऐनीमेशन और लघु फिल्मों के एक-एक साल के अंतर से होने वाले अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के आयोजन की व्यवस्था करता है। इसके लिए प्रभाग दुनिया भर में वृत्तचित्र, ऐनीमेशन फिल्म और लघु फिल्म के निर्माण से जुड़े सभी व्यक्तियों तथा संगठनों से सम्पर्क रखता है।

6.5.2 बम्बई में वृत्तचित्रों और लघु फिल्मों का दूसरा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह फरवरी, 1992 में आयोजित किया गया। इस समारोह में कुछ नए विषयों को शामिल करके इसका विस्तार किया गया। इस बार एनीमेशन फिल्मों का अलग से एक खण्ड बनाया गया था और पुरस्कारों की संख्या भी बढ़ा दी गई थी। प्रतियोगिता और गैर-प्रतियोगिता खण्डों के अलावा समारोह का एक खण्ड अंतर्राष्ट्रीय फिल्म बाजार का भी था जिसमें विदेशी खरीदारों को फिल्में बेची गई।

6.5.3 फिल्म प्रभाग की शैक्षिक और सूचनात्मक फिल्मों के बारे में बेहतर जानकारी देने और इनके उपयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रभाग ने राज्य सरकारों के सहयोग से राज्यों की राजधानियों में समय-समय पर वृत्तचित्रों का समारोह आयोजित किया। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लेने के साथ-साथ फिल्म प्रभाग ने आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और केरल सरकारों द्वारा आयोजित समारोहों के लिए भी अपनी फिल्में भेजीं। वर्ष 1992 के दौरान फिल्म प्रभाग ने 21 समारोहों में हिस्सा लिया और अनेक पुरस्कार प्राप्त किए।

6.6.1 1992 में अप्रैल से नवम्बर तक फिल्म प्रभाग ने 59 वृत्तचित्रों/लघु फिल्मों और छोटी फीचर फिल्मों की 73 रीलें बनाईं। इनमें से 40 फिल्में (104 रीलें) प्रभाग ने स्वयं बनाईं और 14 फिल्में (9 रीलें) स्वतंत्र रूप से फिल्म बनाने वाले प्रोड्यूसरों से बनवाईं। पांच फिल्में (9 रीलें) स्वतंत्र निर्माताओं से खरीदी गईं। इस दौरान प्रभाग ने 16 समाचार पत्रिका फिल्में भी बनाईं

6.6.2 प्रभाग ने सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, अस्पृश्यता निवारण, दहेज, नशाबंदी, परिवार कल्याण कार्यक्रम और महिलाओं की स्थिति के बारे में राष्ट्रीय अभियान के दौरान अपने वृत्तचित्रों और समाचार पत्रिका फिल्मों के जरिये प्रचार में लगातार मदद दी। परिवार कल्याण कार्यक्रमों पर फिल्में बनाकर इस अभियान को गतिशील बनाया गया।

6.6.3 प्रभाग ने 'जर्नी थ्रू दें यूनीवर्स' नामक 15 कड़ियों के एक धारावाहिक का सफलतापूर्वक निर्माण किया. इस फिल्म का निर्माण एक चुनौती थी, क्योंकि इसमें वांछित परिणामों की प्राप्ति के लिए विशेष तकनीक और ऐनीमेशन की जरूरत थी। रोजमर्रा के जीवन में साक्षरता के महत्व के बारे में 'अक्षर गाथा' नामक एक फिल्म बनाई। भारत के स्वाधीनता संग्राम पर भी प्रभाग फिल्मों का निर्माण करता है। अप्रैल से नवम्बर, 1992 के दौरान प्रभाग ने एक वृत्तचित्र "स्वतंत्रता संग्राम में उड़ीसा की भूमिका" पूरा किया। इसके अलावा स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न राज्यों की भूमिकाओं के बारे में तीन और फिल्मों का निर्माण कार्य चल रहा है। डॉ. के.एम.मुंशी, स्व. श्री वी.के. कृष्णमेनन और श्री के.डी. मालवीय की जीवनी से संबंधित फिल्मों का निर्माण कार्य पूरा किया गया। अन्य 41 महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन वृत्तों पर फिल्में निर्माणाधीन हैं।

6.6.4 सरकार की नई आर्थिक और औद्योगिक नीतियों तथा संशोधित सार्वजनिक वितरण प्रणाली और अन्य लाभकारी कार्यक्रमों की उचित जानकारी से लोगों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से फिल्म प्रभाग ने कई विशेष फिल्मों का निर्माण शुरू किया है। इन विषयों पर 11 फिल्में बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था जिनमें पांच फिल्में नवम्बर, 1992 तक पूरी की जा चुकी हैं। पैट्रोलियम पदार्थों में वृद्धि के कारणों की विस्तार से जानकारी देने के उद्देश्य से फिल्म प्रभाग ने 'अवर ड्यूटी' श्रृंखला के तहत पांच क्विकीज (छोटी फिल्में) का निर्माण किया। इनमें से दो फिल्मों का सिनेमाघरों में प्रदर्शन हो चुका है। प्रभाग ने गाल हिन्दी फिल्में भी बनाई जिनमें से एक फिल्म 'जय हिन्द' हिन्दी दिवस के अवसर पर दूरदर्शन से प्रसारित की गई।

पुरस्कार और मान्यता

6.7.1 दिसंबर 1992 को खत्म हुए साल के दौरान प्रभाग ने निम्नलिखित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते:

राष्ट्रीय पुरस्कार

फिल्म का नाम	पुरस्कार
1. आनंद भवन	रजत कमल और निर्माता तथा निर्देशक को दस-दस हजार रुपये के नकद पुरस्कार.
2. ऑफ माइन्स एंड मैन	रजत कमल और निर्माता तथा निर्देशक को दस-दस हजार रुपये के नकद पुरस्कार.
3. लास्ट ड्रॉप	ट्रॉफी और निर्माता तथा निर्देशक को ढाई-ढाई हजार रुपये के नकद पुरस्कार (महाराष्ट्र राज्य मराठी फिल्म समारोह)

अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार

फिल्म का नाम	समारोह का नाम	पुरस्कार
1. हिल एग्रीकल्चर-न्यू विस्टाज	चेकोस्लोवाकिया में नित्रा में एग्रो फिल्म-92	यू.एन.,एफ.ए.ओ प्रिया पुरस्कार
2. बायोगैस-ए ब्लैसिंग	लुआसाने, स्विटजरलैंड में ऊर्जा संबंधी फिल्मों का चौथा अंतर्राष्ट्रीय समारोह	लगभग 60,000 रुपये का नकद पुरस्कार

6.7.2 प्रभाग की निम्नलिखित फिल्में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1992 के पैनोरमा खंड में प्रदर्शित करने के लिए चुनी गई:

1. लास्ट ड्रॉप
2. समाचार पत्रिका संख्या-219

राजस्व

6.8 1992 में अप्रैल से नवम्बर तक की अवधि में प्रभाग ने सिनेमाघरों में अपने 18 वृत्तचित्रों, 3 संक्षिप्त फिल्मों और 16 समाचार पत्रिका फिल्मों के 30,433 प्रिंट जारी किये . इसके अलावा प्रभाग ने विभिन्न राज्य सरकारों के 12 वृत्तचित्रों और 24 समाचार दर्शन फिल्मों के 1,569 प्रिंट भी जारी किए। प्रभाग ने भारत और विदेशों में गैर-व्यावसायिक उपयोग के लिए अपनी फिल्मों के 2,283 वीडियो कैसेट और 2,311 प्रिंटों की बिक्री की। इससे उसे 4 करोड़ 27 लाख रुपये की आमदनी हुई। इसमें से 4.17 लाख रुपये फिल्मों के शॉट की बिक्री से प्राप्त हुए। मार्च 1993 तक तीन करोड़ रुपये और आमदनी होने का अनुमान है। क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय को सिनेमाघरों में अतिरिक्त प्रदर्शन के लिए 1,005 प्रिंट और 249 वी. एच.एस. कैसेट भेजे गये।

6.9 वित्त मंत्रालय की निरीक्षक इकाई ने फिल्म प्रभाग के बंबई स्थित मुख्यालय और वितरण शाखा कार्यालयों में प्रशासनिक ढांचे का निरीक्षण किया। कुछ पदों को समाप्त करने कुछ नए पदों को सृजित करने कुछ अन्य पदों को उच्चीकृत करने तथा कुछ का दर्जा कम करने की सिफारिश की गई। निरीक्षण इकाई ने कुछ पदों के सृजन की भी सिफारिश की। प्रभाग के कार्यालयों में कर्मचारियों तथा पदों की व्यवस्था से संबंधित प्रस्ताव मंत्रालय में विचाराधीन है।

फिल्म समारोह निदेशालय

6.10.1 भारत सरकार ने 1973 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत फिल्म समारोह निदेशालय की स्थापना की थी। इसका मुख्य उद्देश्य देश में अच्छे सिनेमा को बढ़ावा देना और विदेशों में भारतीय फिल्मों को लोकप्रिय बनाना था। फिल्म समारोह निदेशालय की गतिविधियों को मोटे तौर पर इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है-

1. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्रदान करना और राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करना।
2. भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित करना।
3. सरकार की ओर से समय-समय पर फिल्मों के विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करना।
4. फिल्मों के प्रिंट इकट्ठा करना और उनका लेखाजोखा रखना।
5. समारोह के भारतीय पैनोरमा खंड के लिए फिल्मों को चुनना।
6. अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में हिस्सा लेना।
7. भारत में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करना।

6.10.2 निदेशालय की गतिविधियों और नीति-निर्धारण के लिए दिशानिर्देश देने का कार्य एक सलाहकार समिति करती है। फिल्म उद्योग और इससे संबंधित विधाओं के राष्ट्रीय स्तर के जाने-माने लोग समिति के सदस्य हैं।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

6.10.3 39 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह के सिलसिले में पुरस्कारों के निर्णायक मंडल ने मार्च 1992 में पुरस्कारों के लिए फिल्मों को देखना शुरू किया। फीचर फिल्मों के निर्णायक मंडल की अध्यक्षता श्री अडूर गोपालकृष्णन ने की और गैर फीचर फिल्मों के निर्णायक मंडल की अध्यक्षता श्री बुद्धदेव दासगुप्त ने की। श्री कमलेश्वर सिनेमा पर उत्कृष्ट लेखन संबंधी निर्णायक मंडल के अध्यक्ष थे। पुरस्कारों के लिए करीब 114 फीचर फिल्में, 107 गैर फीचर फिल्में, 15 पुस्तकें और 28 लेख प्राप्त हुए। स्वर्गीय सत्यजीत राय की बंगला फिल्म 'आगन्तुक' को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार मिला। श्री गौतम बोरा की 'सन्स ऑफ एबोटनी-द मिसिंग' को सर्वश्रेष्ठ गैर-फीचर फिल्म का पुरस्कार मिला। सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का पुरस्कार डाक्टर अरविन्दन वालाचिरा की मलयालम पुस्तक 'अथामनितायुडे पूक्कल' (आत्म निंदा के फूल) को मिला। गौतम कौल को 1991 का सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक चुना गया। दादा साहब फाल्के पुरस्कार महाराष्ट्र के श्री भालजी पेन्ढारकर को दिया गया। पुरस्कार वितरण समारोह के बाद विभिन्न पुरस्कृत फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया।

6.10.4 सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत निदेशालय ने विदेशी फिल्मों के अनेक समारोह आयोजित किए।

यूरोपीय समुदाय के देशों की फिल्मों का चौथा समारोह दिल्ली और कलकत्ता में आयोजित किया गया। इसमें 10 देशों की 14 फीचर फिल्में और 8 छोटी फिल्में दिखाई गई। नई दिल्ली में निर्देशक जेन ट्रोइल की स्वीडिश फिल्मों का समारोह हुआ जिसमें 6 फीचर फिल्में और एक छोटी फिल्म दिखाई गई। इन फिल्मों का समारोह कलकत्ता में भी आयोजित हुआ जहां निर्देशक जेन ट्रोइल और श्रीमती सुजान बेग भी समारोह में शामिल हुए। इन फिल्मों को पुणे के फिल्म और टेलीविजन संस्थान में भी दिखाया गया। सितम्बर, 1991 में जर्मनी में आयोजित भारत महोत्सव के फिल्म खण्ड के अंतर्गत मार्च- अप्रैल, 1992 तक फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। बम्बई, दिल्ली और तिरुअनंतपुरम में स्वीडन की फिल्मों का समारोह आयोजित हुआ जिसमें 8 फिल्में दिखाई गई। दिल्ली में आयोजित हालैण्ड फिल्म सप्ताह में 7 फीचर और 5 छोटी फिल्में प्रदर्शित की गई। मणिपुर और बंगलौर में फ्रेंच सप्ताह के दौरान 11 फिल्में दिखाई गई। दिल्ली में जापानी फिल्म समारोह आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत 5 फिल्में दिखाई गई। इसके अलावा दिल्ली और बम्बई में तुर्की फिल्म समारोह के दौरान 5 फिल्में दिखाई गई। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) देशों की फिल्मों का समारोह भारत के 6 शहरों में आयोजित किया गया।

6.10.5 1992 में निदेशालय ने एशियाई समारोह और एशियाई सिनेमा पर केन्द्रित अन्य समारोहों सहित 55 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में हिस्सा लिया। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण समारोह इस प्रकार हैं:-

1. जापान में फुकुओका अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में फोकस ऑन एशिया '92 2. फुकुओका एशियाई फिल्म समारोह, जापान। 3. सिओल, कोरिया में एशिया पैसेफिक फिल्म शो। 4. कोरिया में गुटनिरपेक्ष और अन्य विकासशील देशों की फिल्मों का प्यांग्यांग फिल्म समारोह। 5. इशीकावा एशियाई फिल्म समारोह, जापान। 6. सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह। 7. हागकांग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह। 8. सेन फ्रांसिस्को में ग्रीष्मकालीन एशियाई फिल्म श्रृंखला। 9. श्रीलंका में दक्षिण एशियाई वृत्तचित्रों और लघु फिल्मों का समारोह। 10. जापान में तोक्यो अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और 11. चीन में चांगचुन फिल्म समारोह।

6.10.6 निदेशालय ने जिन प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रतिनिधि मंडल भेजे, वे इस प्रकार हैं:-

1. कैन्स अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह-फ्रांस 2. सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, सिंगापुर 3. चीन में राजकपूर की फिल्मों का पुनरावलोकन समारोह। 4. लोकार्नो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, स्विटजरलैंड। 5. फुकुओका अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, जापान 6. हाइफा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह — इजराइल और 7. इसीकावा एशियाई फिल्म समारोह, जापान।

एम.टी वासुदेवन नायर की फिल्म 'काडावू' को सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार मिला। 35वें सैनफ्रांसिस्को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में अकीरा कुरोसावा पुरस्कार सत्यजीत राय को प्रदान किया गया। कोरिया में प्यांगयांग में आयोजित गुटनिरपेक्ष और अन्य विकासशील देशों की फिल्मों के तीसरे समारोह में अभिनेत्री शबाना आजमी को 'लिबास' फिल्म में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार तथा मोहीउद्दीन मिर्जा की फिल्म 'लोलाब' ने विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार जीता। 11 वें ताशकन्द अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में अपर्णा सेन को मृणाल सेन की फिल्म 'महापृथ्वी' में उत्कृष्ट अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ट अभिनेत्री का पुरस्कार दिया गया। इस समारोह द्वारा इसी वर्ष से स्थापित राजकपूर पुरस्कार रणधीर कपूर की फिल्म 'हिना' को मिला। ताशकंद समारोह में राजकपूर की फिल्मों का पुनरावलोकन भी प्रस्तुत किया गया। पेरिस में सत्यजीत राय की अंतिम फिल्म 'आगंतुक' ने व्यावसायिक दृष्टि से श्रेष्ट 10 फिल्मों में स्थान पाकर सभी रिकार्ड तोड़े। यह पहली भारतीय फिल्म थी जिसे विदेश में इतनी लोकप्रियता मिली। यह पांच सिनेमाघरों में लगभग पांच हफ्तों तक दिखाई गई और इस तरह श्रेष्ट 20 फिल्मों की श्रेणी में बनी रही। कुमार शाहनी को गैनियम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1992 में 'भावंतरण' फिल्म के लिए 10,000 मार्क का एस.डी. आर. वृत्त चित्र पुरस्कार मिला। सुब्रत मित्र को उत्कृष्ट फिल्म-छायांकन के लिए हवाई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में ईस्टमैन कोडक पुरस्कार दिया गया। ईश्मीकावा, जापान और हवाई में सत्यजीत राय की फिल्मों का पुनरावलोकन समारोह आयोजित किया गया। ब्रिस्बेन और सेनफ्रांसिस्को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सत्यजीत राय की कुछ फिल्मों का प्रदर्शन करके इस महान फिल्मकार को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। स्वर्गीय जी. अरविन्दन की फिल्मों का पुनरावलोकन ब्राजील में हुआ और श्याम बेनेगल की फिल्मों का पुनरावलोकन शिकागो में हुआ। अनवर जमाल द्वारा निर्देशित फिल्म 'भागीरथी की पुकार' को लाउसने, स्विटजरलैंड में 1992 में आयोजित उर्जा संबंधी फिल्मों के अंतर्राष्ट्रीय समारोह में दिखाया गया।

6.10.7 1992 में जुलाई से अक्तूबर के दौरान अमरीका में भारतीय फिल्मों के प्रदर्शन समारोह में 14 फिल्में दिखाई गईं। मंगोलिया और श्रीलंका में भारतीय फिल्म सप्ताह आयोजित किये गये जिनमें छह-छह फिल्में दिखाई गई। मौजाम्बिक, स्वीडन और बहरीन में भी भारतीय फिल्म सप्ताह का आयोजन हुआ और इन देशों में इन समारोहों में सात-सात फिल्में दिखाई गईं। जापान, श्रीलंका और आस्ट्रिया में सत्यजीत राय की फिल्मों का सप्ताह आयोजित हुआ। फ्रांसीसी संगठन 'सिनेमार्थीक फ्रांस' के सहयोग से सत्यजीत राय की फिल्मों का एक समारोह आयोजित किया गया जिसमें उनकी 13 फिल्में भेजी गई

प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव 10 अक्तूबर 1992 को कलकत्ता में भारतीय फिल्म और टेलिविजन संस्थान की आधारशिला रखते हुए। इस अवसर पर सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा, उप मंत्री डा० गिरिजा व्यास तथा पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री श्री ज्योति बसु भी उपस्थित थे

विख्यात फिल्म निर्माता श्री जी.पी. सिप्पी द्वारा सिरी फोर्ट, नई दिल्ली में 10 जनवरी, 1993 को भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह– 93 का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित करते हुए। इस अवसर पर सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा, उप मंत्री डा० गिरिजा व्यास तथा मंत्रालय के सचिव श्री आर.के. भार्गव भी उपस्थित थे

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

6.10.8 23 वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, बंगलौर में 10 से 20 जनवरी, 1992 तक आयोजित किया गया। पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रतियोगिता खंड आयोजित नहीं किया गया। फिल्म समारोह के मुख्य खंड ये थे-

1. विश्व सिनेमा (मुख्य अंतर्राष्ट्रीय खंड)
2. विदेशी फिल्मों का पुनरावलोकन।
3. एक देश/ क्षेत्र के सिनेमा पर केन्द्रित आयोजन।
4. 1991 में भारतीय सिनेमा की झांकी।
5. भारतीय फिल्मों का पुनरावलोकन।
6. आम भारतीय सिनेमा।
7. कन्नड़ सिनेमा का पुनरावलोकन।

समारोह के दौरान भारत सहित करीब 35 देशों की 170 फिल्में प्रदर्शित की गई। समारोह में लगभग 2,500 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। जिनमें से करीब 50-60 विदेशों से आये थे। विदेशी प्रतिनिधियों में लगभग 20 फिल्म निर्माता तथा कलाकार और बंगलौर में विदेशी दूतावासों के 10 प्रतिनिधि शामिल थे। समारोह के दौरान विभिन्न सिनेमाघरों/थियेटरों में फिल्मों के 500 शो आयोजित किए गए। समारोह में फ्रांसिस्को रोसी (इटली) की फिल्मों का पुनरावलोकन, 'कैहीअर्स दू सिनेमा' (फ्रांस) के 40 साल, 'स्वीडन सिनेमा में महिलाएं' और ऐन व्हील (कनाडा) की फिल्मों पर विशेष खंड भी आयोजित किए गए. भारतीय फिल्मों के पुनरावलोकन खंड में बलराज साहनी, जी. अरविन्दन और कर्नाटक की एक मशहूर फिल्मी हस्ती बी.आर. पंथुलु की पांच-पांच फिल्में दिखाई गई। भारतीय सिनेमा 1991 पुस्तक और फिल्म समारोह 92 से संबंधित प्रचार सामग्री प्रकाशित की गई तथा अंग्रेजी, हिन्दी और कन्नड़ में प्रतिदिन फेस्टिवल बुलेटिन निकाले गए।

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह-93

6.10.9 24 वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह-93 दस जनवरी से 20 जनवरी 1993 तक नई दिल्ली में आयोजित किया गया। यह समारोह भी गैर-प्रतियोगी था। लगभग 40 देशों की 150 फिल्मों ने इस समारोह में भाग लिया। दिल्ली के 10 सिनेमाघरों में इन फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। इनमें से 3 सिनेमाघर, प्रेस और प्रतिनिधियों के लिए विशेष रूप से आरक्षित थे।

6.10.10 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1993 के मुख्य खंड ये थे

1. विश्व सिनेमा
2. वियतनामी सिनेमा
3. इटली के निर्देशक 'विटोरियो दि सीका' की फिल्मों का पुनरावलोकन
4. स्वीडन की अभिनेत्री इंग्रिड बर्गमैन की प्रारम्भिक फिल्मों का पुनरावलोकन
5. फ्रांस के फिल्म निर्माता आरगो की फिल्मों को सम्मान।
6. भारतीय पैनोरमा .93
7. मुख्यधारा का भारतीय सिनेमा
8. भारतीय फिल्मों का पुनरावलोकन।

भारत और विदेश से अनेक निर्देशकों/चयनकर्ताओं, अभिनेताओं, अभिनेत्रियों आदि ने समारोह में भाग लिया। लगभग 450 फिल्म समीक्षकों/पत्रकारों और करीब 100 छायाकारों को समारोह के सिलसिले में विशेष प्रत्यायन (एक्रेडिटेशन) प्रदान किया गया। लगभग 3,000 प्रतिनिधियों ने समारोह में अपना पंजीकरण करवाया.

6.10.11 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय पैनोरमा खंड 1978 में शुरू किया गया था। तब से इस खंड के लिए हर साल फिल्मों का चयन किया जाता है। इस साल फीचर फिल्मों के लिए डाक्टर टी. सुब्बारामी की अध्यक्षता में एक चयन समिति गठित की गई जिसने देशभर की 93 फीचर फिल्मों के प्रस्तावों पर चयन के लिए विचार करने के बाद 20 फीचर फिल्मों का चुनाव किया। गैर फीचर फिल्मों के चयन के लिए श्री के. बिक्रम सिंह की अध्यक्षता में गठित समिति ने 57 फिल्में देखने के बाद 11 गैर-फीचर फिल्मों का चयन किया। इनमें 1992 में आयोजित 39 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह की सर्वश्रेष्ट गैर फीचर फिल्में शामिल हैं। इन गैर-फीचर फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1993 के पैनोरमा खंड में दिखाया गया।

राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र

6.11.1 भारतीय बाल चित्र समिति की स्थापना 1955 में की गई थी। अब इसे राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र के नाम से जाना जाता है। हालांकि यह एक स्वायत्त संस्था है लेकिन इस पर सूचना और प्रसारण मंत्रालय का प्रशासनिक नियंत्रण रहता है। इसका उद्देश्य बच्चों को स्वस्थ और साफ मनोरंजन प्रदान करना है। यह केन्द्र सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में 16 एम.एम और 35 एम. एम. की फीचर फिल्मों, छोटी फीचर फिल्मों, छोटी ऐनीमेशन फिल्मों का निर्माण करता है और दो वर्ष में एक बार प्रतियोगिता के आधार वाले अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह का आयोजन करता है.

6.11.2 इस केन्द्र का मुख्यालय बम्बई में है। नई दिल्ली, और मद्रास में समिति के आंचलिक कार्यालय हैं। जानी-मानी फिल्मी हस्ती श्रीमती जया बच्चन राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र की वर्तमान अध्यक्ष हैं।

6.11.3 केन्द्र ने नवम्बर, 1992 तक दो फीचर फिल्में और दो टी.वी. धारावाहिक पूरे किये। इन धारावाहिकों में एक में 20 कड़ियां हैं और दूसरे में 8 कड़ियां। एक फीचर फिल्म 'करामाती कोट', एक लघु फिल्म और एक टी.वी. धारावाहिक निर्माणाधीन है। इसके अलावा, तीन फीचर फिल्मों को दूरदर्शन से अंशों में श्रृंखलाबद्ध रूप से दिखाया गया। केन्द्र द्वारा निर्मित धारावाहिक 'कार्टून शो', 'चमत्कारी टेलीफोन' और 'पोटली बाबा की' दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित किये गये। इन दिनों 'जंग्ल बुक' धारावाहिक प्रत्येक रविवार को दूरदर्शन से राष्ट्रीय नेटवर्क पर दिखाया जाता है।

6.11.4 केन्द्र ने उरुग्वे, काहिरा, रिमोस्की, इसाफान, शंघाई, हवाई और बेलिनजोना (स्विटजरलैण्ड) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोहों में भाग लिया। फिल्म 'अभयम' ने रार्जी, बेलिनजोना में सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म का पुरस्कार जीता। इस फिल्म को 39 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भी पुरस्कृत किया गया। छोटी ऐनीमेशन फिल्म 'बल्लू शाह' को काहिरा में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में कांस्य पदक प्राप्त हुआ। इस फिल्म को 39 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ एनीमेशन फिल्म का पुरस्कार मिला। केन्द्र द्वारा नवम्बर 1992 में 14 से 21 तारीख तक एक बाल मेले का आयोजन भी किया गया। आठवां अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह नवम्बर, 1993 में उदयपुर में होगा।

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार

6.12.1 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का उद्देश्य फिल्मों के क्षेत्र में देश की अमूल्य धरोहर की रक्षा करना, दुनिया की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों का प्रतिनिधि संकलन तैयार करना और देश में फिल्म संबंधी जागरूकता बढ़ाना है।

6.12.2 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का मुख्यालय पुणे में है। बंगलौर, कलकत्ता और तिरुअनंतपुरम में इसके क्षेत्रीय कार्यालय हैं। अभिलेखागार के संग्रह में 12,747 फिल्में हैं। ये हमारी राष्ट्रीय फिल्म धरोहर का करीब पांचवां हिस्सा है। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के पास फिल्मों से संबंधित विषयों पर देश-विदेश के जानेमाने प्रकाशकों की लगभग 20,600 पुस्तकें हैं। इसके अलावा अभिलेखागार फिल्मों से संबंधित पत्र-पत्रिकाएं भी मंगाता है।

6.12.3 इस वर्ष अभिलेखागार ने अपने नये परिसर में कार्य करना शुरू कर दिया है। अभिलेखागार के पास उपलब्ध प्रमुख उपकरणों में व्यूइंग टेबल, प्रोजेक्टर, आर.टी.आई. मशीनें, एफ.आई.सी.ए. बाक्स आदि शामिल है। इन उपकरणों के समुचित उपयोग से अभिलेखागार की कार्यकुशलता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जनवरी-दिसम्बर, 1992 के दौरान अभिलेखागार ने अपने संग्रह में 177 फिल्मों की वृद्धि की। इनमें से 42 नयीं फिल्में थीं और 65 फिल्मों की प्रतिलिपि प्राप्त की गयीं। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार में संग्रहीत विभिन्न प्रकार की सामग्री का ब्यौरा इस प्रकार है:-

मद	31.12.91 को संख्या	जनवरी से दिसंबर 1992 तक प्राप्त	31.12.92 को संख्या
फिल्म	12,570	177	12,747
वीडियो कैसेट	696	179	875
पुस्तकें	20253	351	20604
पत्रिकाएं	152	—	152
पत्रिकाओं के सजिल्द खण्ड	—	388	388
पांडुलिपियां	21075	328	21403
प्री रिकार्ड कैसेट	—	106	106
पैम्फलेट-फोल्डर	7133	122	7255
समाचार कतरनें	118273	12000	130273
स्टिल चित्र	94821	2593	97414
स्लाइड	2820	—	2820
इश्तिहार	5984	151	6135
पुस्तिकाएं	5851	92	5943
डिस्क रिकार्ड	1822	36	1858
आडियो टेप	150	—	150
माइक्रो फिश	42	—	42
माइक्रो फिल्म	1957	—	1957

6.12.4 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार अपनी वितरण लाइब्रेरी के जरिए विभिन्न फिल्म क्लबों, फिल्म सोसाइटियों, फिल्म समीक्षकों, सांस्कृतिक संगठनों और शैक्षिक संस्थाओं को महत्वपूर्ण फिल्में देता है। इस समय अभिलेखागार में 100 संस्थायें पंजीकृत हैं और ये चुनी हुई भारतीय तथा विदेशी फिल्में देखने की सुविधा का लाभ उठा रही हैं। इसके अलावा प्रमुख शहरों में साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक रूप से कार्यक्रम दिखाये जाते हैं।

6.12.5 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण फिल्में उपलब्ध कराता है। स्व. सत्यजीत राय की फिल्म 'कंचनजंघा' को फ्रांस में 'सिनेमाथीक फ्रेनकाइज' के लिए भेजा गया। अडूर गोपालकृष्णन की फिल्म

'कोड्डियेटम' को म्यूनिख फिल्म समारोह के लिए भेजा गया। 'साइलैंट क्लासिक लाइट ऑफ एशिया' को जर्मनी में फिल्म समारोह और बौद्ध सम्मेलन के लिए भेजा गया।

6.12.6 भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार हर साल फिल्मों के मूल्यांकन के लिए एक परिचयात्मक पाठ्यक्रम/कार्यशाला आयोजित करता है। इसका आयोजन भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार तथा फिल्म और टेलीविजन प्रशिक्षण संस्थान, पुणे ने मिलकर किया। इसमें जिन मशहूर फिल्मी हस्तियों ने हिस्सा लिया उनमें बालू महेन्द्रा, कुमार शाहनी, श्याम बेनेगल, गोविंद निहलानी, मणिकौल, अरुण कौल और सुधीर मिश्र शामिल हैं।

6.12.7 अभिलेखागार द्वारा जो महत्वपूर्ण शोध-परियोजनायें पूरी की गई वे हैं 'भारतीय सिनेमा में महिलायें', 'मलयालम सिनेमा में स्टीरियोटाइप', 'हिन्दी फिल्मों में संवाद की भूमिका', 'बंगला सिनेमा के अग्रणी निमाई घोष पर एक रेखाचित्र तथा प्रसिद्ध हिन्दी फिल्म निर्माता विजय भट्ट पर मौखिक इतिहास परियोजना

6.12.8 भारत-फ्रांस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत फ्रांस के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार (पेरिस) के फिल्म लेबोरेटरी विभाग के प्रमुख श्री जीन मिशेल जीनॉट ने भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का दौरा किया। उन्होंने अभिलेखागार के बारे में अपनी एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट में की गई सिफारिशों का कार्यान्वियन कर दिया गया है।

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान

6.13.1 भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान आम आदमी को फिल्म निर्माण की कला और तकनीक के बारे में प्रशिक्षण देता है। इसके अलावा संस्थान दूरदर्शन के अधिकारियों और कर्मचारियों को टेलीविजन के बारे में सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह संस्थान अक्तूबर 1974 में सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के अंतर्गत सोसाइटी के रूप में पंजीकृत किया गया सोसाइटी में फिल्म, टेलीविजन, संचार और संस्कृति के क्षेत्र की जानी मानी हस्तियां, संस्थान के भूतपूर्व विद्यार्थी और मानद सदस्य शामिल हैं।

6.13.2 संस्थान के दो स्कन्ध हैं - फिल्म स्कन्ध और टेलीविजन स्कन्ध। फिल्म स्कन्ध सिनेमा पर डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित करता है। इस पाठ्यक्रम में (1) फिल्म निर्देशन, (2) सिनेमेटोग्राफी, (3) ध्वन्यांकन और ध्वनि इंजीनियरी और (4) फिल्म सम्पादन में विशेषज्ञता की व्यवस्था है पहले तीन पाठ्यक्रम तीन साल के और चौथा दो साल की अवधि का है।

6.13.3 टेलीविजन स्कन्ध दूरदर्शन के हर वर्ग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। बुनियादी पाठ्यक्रम के अलावा विशेष क्षेत्रों में अल्पावधि पाठ्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। संस्थान एशिया प्रशांत प्रसारण विकास संस्थान, कुआलालम्पुर के सहयोग से विशेष पाठ्यक्रम और कार्यशालाएं भी आयोजित करता है। यह सेंटर 'इंटरनेशनल द लायजन डेस इकालेस द सिनेमा एट दे टेलीविजन'' का भी सदस्य है। संस्थान के अध्यापक और विद्यार्थी इस संस्था के कार्यक्रमों में नियमित रूप से हिस्सा लेते हैं। फिल्म स्कन्ध में 100 प्रशिक्षणार्थी हैं, जिनमें से 11 विदेशी हैं।

6.13.4 संस्थान अपने डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों द्वारा निर्मित फिल्मों को विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भेजता है। इस साल संस्थान ने जिन समारोहों में भाग लिया वे हैं— 39 वां राष्ट्रीय फिल्म समारोह, इजरायल का चौथा छात्र अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह (तेल अवीव), जापान में सिनेमा के छात्रों का दूसरा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह (टोक्यो में), पृथ्वी के पर्यावरण से संबंधित फिल्मों का अंतर्राष्ट्रीय समारोह 'अर्थ विजन - 92,' और भारत का 24 वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह। संस्थान के एक छात्र श्री इगो सिंग द्वारा निर्मित फिल्म 'पुनरावृत्ति' को 39 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार दिया गया।

6.13.5 संस्थान के टेलीविजन स्कन्ध ने इस वर्ष दूरदर्शन के कर्मचारियों के लिए 37 वां प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया। इसके अलावा भारतीय सूचना सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए टेलीविजन कार्यक्रमों की प्रारंभिक जानकारी देने वाला एक अल्पकालीन पाठ्यक्रम भी संचालित किया।

6.13.6 पूर्वी क्षेत्र में इस प्रकार के संस्थान की बढ़ती हुई मांग और जरूरत को देखते हुए सरकार ने कलकत्ता में एक और फिल्म और टेलीविजन संस्थान खोलने का निर्णय लिया है। आठवीं पंचवर्षीय योजना में इस कार्य के लिए 29 करोड़ 50 लाख रुपये का प्रावधान रखा गया है। प्रधानमंत्री ने 10 अक्तूबर 1992 को इस संस्थान का शिलान्यास किया। इस परियोजना पर कार्य आरंभ हो चुका है।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

6.14.1 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की स्थापना 11 अप्रैल, 1980 को फिल्म वित्त निगम और भारतीय चलचित्र निर्यात निगम का विलय करके की गई थी राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम का उद्देश्य भारत में सिनेमा के स्तर में सुधार करना और इसकी पहुंच बढ़ाना था देश में फिल्म आंदोलन के सही विकास के लिए निगम फिल्मों से संबंधित कई कार्य करता है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम कम बजट की फिल्मों के निर्माण को बढ़ावा देता है। आज हमारे देश में फिल्म बनाने में आने वाली आर्थिक समस्याओं का एक हल यह हो सकता है कि कम बजट की मगर ऊंचे स्तर की फिल्में बनाई जाएं

6.14.2 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ सहयोग भी करता है। इस कार्यक्रम के तहत एटनबैरो द्वारा निर्देशित 'गांधी', मीरा नायर द्वारा निर्देशित 'सलाम बाम्बे' और 'उन्नी' फिल्म का संयुक्त रूप से निर्माण किया गया। इस वर्ष पामेला रुक्स की 'मिस बेटीज चिल्ड्रन' और केतन मेहता की फिल्म 'माया मेमसाब' भी विदेशी सहयोग से संयुक्त रूप से बनाई गई। 'माया मेमसाब' फिल्म में निगम ने वित्त सहायता की। निगम ने फ्रांस की कंपनी टेक्नीसोनर के साथ संयुक्त रूप से 7 कड़ियों के एक टी० वी० धारावाहिक का भी निर्माण किया।

6.14.3 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दूरदर्शन द्वारा राष्ट्रीय और क्षेत्रीय नेटवर्क पर प्रसारण के लिए अच्छी फीचर फिल्में और टेलीफिल्में मिलकर तैयार की जा रही हैं। ये फिल्में भारत तथा विदेशों में व्यावसायिक और गैर-व्यावसायिक प्रदर्शन के लिए भी उपयोग में लाई जाएंगी। दिसम्बर 1992 तक 21 फिल्में पूरी की जा चुकी हैं या निर्माणाधीन हैं।।

6.14.4 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम जाने-माने निर्देशकों के निर्देशन में अच्छी पटकथा पर आधारित फिल्में बनवाता है। वर्ष 1980-81 में यह योजना शुरू की गई थी। वर्ष 1992-93 के दौरान (दिसम्बर 92 तक) इस योजना के अंतर्गत जिन फिल्मों को पूरा किया गया वे हैं— बुद्धदेव दासगुप्ता की बंगला फिल्म 'ताहदेर कथा', डा० जब्बार पटेल की मराठी फिल्म 'एक होता विदूषक' और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा बनाई गई फिल्म 'दुर्गा' जिसे परिवार कल्याण पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार दिया गया। निगम ने कल्याण मंत्रालय एवं महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रायोजित भारत रत्न डॉ० बाबा साहब आम्बेडकर पर एक फीचर फिल्म का निर्माण शुरू किया। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा निर्मित सत्यजित राय की फिल्म 'आगंतुक को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म और सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के पुरस्कार प्राप्त हुए।

6.14.5 देश में सिनेमाघरों में दर्शकों के लिए सीटों की संख्या बढ़ाने और अच्छी फिल्मों के प्रदर्शन की व्यवस्था करने के लिए राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने सिनेमाघरों के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने की योजना तैयार की और इस पर अमल शुरू किया। इस योजना के तहत बनाए गए 96 सिनेमाघरों में 31 दिसम्बर, 1992 तक फिल्मों का प्रदर्शन शुरू हो गया था।

6.14.6 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम इस समय हर साल 35 से 45 फिल्मों का आयात करता है। अपने गठन के बाद निगम ने 500 फिल्मों का आयात किया है। निगम का यह प्रयास रहा है कि भारतीय दर्शकों को विभिन्न देशों की तरह-तरह की फिल्में देखने का मौका मिले। निगम के सीमित साधनों को देखते हुए पारिवारिक मनोरंजन के लिए उच्च कोटि की व्यावसायिक फिल्में अधिक मंगाने की कोशिश की जाती है। इस वर्ष अप्रैल से फिल्मों के आयात की प्रक्रिया को सरल कर दिया गया है।

6.14.7 1985-86 में पैनोरमा फिल्म समारोहों के देश के प्रमुख केंद्रों में आयोजित करने की योजना शुरू की गई थी। उसे उल्लेखनीय सराहना मिली. पैनोरमा फिल्म समारोहों के साथ-साथ निगम पुनरावलोकन और छोटे स्तर के समारोह भी आयोजित करता है। इन आयोजनों के लिए निगम विभिन्न दूतावासों और फिल्म समारोह निदेशालय से सहयोग लेता है।

6.14.8 राष्ट्रीय फिल्म क्षेत्र की गतिविधियां पूरे वर्ष जारी रहीं। अनेक महत्वपूर्ण पुनरावलोकन समारोहों का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय फिल्म क्षेत्र बंबई में नेहरु केन्द्र और टाटा थियेटर में कार्यरत रहा।

6.14.9 भारत दुनिया के 100 से अधिक देशों को फिल्मों का निर्यात करता है। निगम विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लेता है। भारतीय सिनेमा को बढ़ावा देने के लिये फिल्म निर्माताओं के पास प्रतिनिधि भेजता है। यह अनेक देशों से आए फिल्म खरीदारों की मेजबानी भी करता है। इस वर्ष राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम का निर्यात लक्ष्य 225 लाख रुपये तक पहुंचने की संभावना है।

6.14.10 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने अपने वितरकों के माध्यम से उत्कृष्ट फिल्मों के वीडियो केसेटों की कानूनसम्मत तरीके से बिक्री का कार्य हाथ में लिया है। 250 फिल्मों के वीडियो कैसेट जारी किये जा चुके हैं। भारत में अच्छे सिनेमा की समझ बढ़ाने और देश में अच्छे सिनेमा को बढ़ावा देने के लिये राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम भारत तथा विदेशों की कलात्मक और पुरस्कृत फिल्मों के वीडियो कैसेटों की बिक्री करता है

6.14.11 वीडियो फिल्मों के अनधिकृत प्रदर्शन को रोकने के लिए राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने भारतीय फिल्म उद्योग के सहयोग से वीडियो चोरी रोकने वाली एक संस्था गठित की। इंडियन फेडरेशन अगेन्स्ट कापीराइट थैफ्ट (इनफैक्ट) नाम की यह संस्था कंपनी अधिनियम के तहत कंपनी के रूप में पंजीकृत है।

6.14.12 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के कलकत्ता के फिल्म केन्द्र में फिल्म के निर्माण तथा निर्माण के बाद के कार्यों के लिये बुनियादी सुविधायें उपलब्ध हैं। इन सुविधाओं में 16 मिलीमीटर कैमरा, छायांकन और ध्वन्यांकन का काम साथ-साथ करने वाले टेप रिकार्डर, सम्पादन टेबल, और पुनर्ध्वनि मुद्रण के उपकरण शामिल हैं। इन्हें उचित दर पर किराये पर लिया जा सकता है। फिल्म केन्द्र में 16 मिलीमीटर और 35 मिलीमीटर की फिल्मों के लिए इलैक्ट्रॉनिक माइक्रो प्रोसेसर द्वारा नियंत्रित नवीनतम प्रोजेक्टर लगा है।

6.14.13 बंबई स्थित सबटाइटलिंग केन्द्र अपने आप में पूर्ण इकाई है। यहां सभी तकनीकी सुविधायें एक ही स्थान पर उपलब्ध हैं। अब तक इस इकाई ने 1000 से अधिक फिल्मों को सबटाइटल दिये हैं और इस तरह 4 करोड़ रुपये के बराबर विदेशी मुद्रा बचाने में मदद की है। इस केन्द्र ने बंगलादेश, श्रीलंका और ईरान की कई एजेंसियों के लिए सबटाइटलिंग का काम भी हाथ में लिया है। फिल्म सबटाइटलिंग के अलावा यह केन्द्र यू-मैटिक वीडियो कैसेट्स पर भी सबटाइटल्स की सुविधा प्रदान करता है। इस केन्द्र में अब लो-बैंड और हाई-बैंड पर इलैक्ट्रॉनिक सबटाइटलिंग की सुविधा भी उपलब्ध है।

6.14.14 मद्रास में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के वीडियो केंद्र में विश्व-प्रसिद्ध लो बैंड और हाई बैंड यू-मैटिक वी सी आर की मदद से फिल्मों को कैसेटों में बदलने की सुविधा उपलब्ध है। यहां पर 120 स्लेव वी.सी.आर. की मदद से उच्च गुणवत्ता की फिल्मों की प्रतियां निकालने की व्यवस्था भी मौजूद है। यह केन्द्र फिल्म निर्माताओं को अपनी फिल्मों के बेहतर यूमैटिक कैसेट निकालने की सुविधा उपलब्ध कराता है ताकि वे इन फिल्मों के कैसेटों की विदेशी बाजारों में भी बिक्री कर सकें।

6.14.15 विकास संबंधी अपनी गतिविधियों के अंतर्गत राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम 'सिनेमा इन इंडिया' नाम की विश्लेषण प्रधान व्यापारिक पत्रिका निकालता है।

6.14.16 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने सिनेमा कलाकारों की आर्थिक मदद के लिये एक निधि की स्थापना की है। इस निधि के लिये सर्वप्रथम सर रिचर्ड एटिनबरो द्वारा 10,000 रुपये की राशि दान की गई। इसके साथ सर रिचर्ड के साथ 'गांधी' फिल्म से प्राप्त आय का पांच प्रतिशत हिस्सा सिनेमा कलाकार कल्याण निधि को देने के मामले में लंबे समय से जो विवाद चल रहा था वह अब समाप्त हो गया है। सिनेमा कलाकारों और उनके परिवारों के कल्याण के लिये योजनाएं तैयार की गई हैं और इस समय दो सौ से भी अधिक कलाकार इस निधि से प्रतिमाह आर्थिक सहायता प्राप्त कर रहे हैं।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

6.15.1 भारत में फिल्मों को सार्वजनिक प्रदर्शन की अनुमति देने के लिए सरकार ने सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 के अंतर्गत केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड गठित किया। इसका मुख्यालय बंबई में है। बोर्ड में अध्यक्ष के अलावा गैर-शासकीय सदस्य होते हैं। बोर्ड के नौ क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो बंगलौर, बंबई, कलकत्ता, कटक, दिल्ली, हैदराबाद, मद्रास, तिरुअनन्तपुरम और गुवाहाटी में हैं। फिल्मों के निरीक्षण में इन क्षेत्रीय कार्यालयों को परामर्श मंडल का सहयोग प्राप्त होता है। परामर्श मंडल में विभिन्न क्षेत्रों के महत्वपूर्ण व्यक्ति सदस्य होते हैं। श्री शक्ति सामंत बोर्ड के अध्यक्ष हैं। 1992 के दौरान 836 भारतीय फीचर फिल्मों को प्रमाण-पत्र दिया गया। इनमें 189 हिन्दी फिल्में थीं और 564 (67.46%) फिल्मों को मद्रास, बंगलौर, तिरुअनंतपुरम और हैदराबाद के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा प्रमाण-पत्र दिये गये। 1992 के दौरान प्रमाणित 836 भारतीय फिल्मों का भाषावार ब्यौरा परिशिष्ट - 6 में दिया गया है।

6.15.2 836 भारतीय फीचर फिल्मों में से 611 (73.09 प्रतिशत) को "यू" प्रमाण-पत्र (अप्रतिबंधित सार्वजनिक प्रदर्शन); 88 (10.52 प्रतिशत) को "यू ए" (12 वर्ष से कम आयु के बच्चों को अभिभावक के निर्देश) और 137 (16.39 प्रतिशत) फिल्मों को "ए" (केवल वयस्कों के लिये) प्रमाण-पत्र दिये गये। 80 विदेशी फीचर फिल्मों में से 20 (25 प्रतिशत) को "यू" प्रमाण-पत्र, 12 (15 प्रतिशत) को "यू ए" प्रमाणपत्र और 48 (60 प्रतिशत को) "ए" प्रमाण-पत्र दिये गये।

6.15.3 भारतीय फीचर फिल्मों में से 676 फिल्में सामाजिक कथानक पर आधारित थीं और अपराध संबंधी फिल्मों की संख्या 92 थी। इन्हीं विषयों पर विदेशी फिल्मों की संख्या क्रमशः 35 और 7 थी।

6.15.4 बोर्ड ने 895 भारतीय लघु फिल्मों को भी प्रमाणपत्र दिये। इनमें से 878 को "यू" प्रमाणपत्र, 6 को "यू ए" और 11 फिल्मों को "ए" प्रमाण पत्र दिये गये। 116 विदेशी लघु - फिल्मों को भी प्रमाणपत्र दिये गये। विदेशी लघु फिल्मों में 80 को "यू" प्रमाण-पत्र, 11 को "यू ए" और 25 फिल्मों को "ए" प्रमाण पत्र दिये गये।

6.15.5 बोर्ड द्वारा वर्ष 1992 में 606 भारतीय वीडियो फिल्मों को भी प्रमाण-पत्र दिये गये। इनमें से 26 फीचर फिल्में, 382 छोटी और 198 लंबी फिल्में थीं। 643 विदेशी फीचर फिल्मों का भी प्रमाणन किया गया जिनमें 3 फीचर, 622 छोटे और 18 लंबी फिल्में थीं। बोर्ड द्वारा 22 शैक्षिक विषयों पर आधारित फिल्मों को भी प्रमाणपत्र दिया गया।

6.15.6 बोर्ड, भारतीय सिनेमेटोग्राफी नियम, 1983 के अनुसार प्रमाणन शुल्क के रूप में राजस्व प्राप्त करता है। बोर्ड क्षेत्रीय कार्यालयों में फिल्मों के प्रदर्शन पर भी प्रक्षेपण शुल्क लेता है। 1992 में जनवरी से दिसम्बर के दौरान बोर्ड को 20 लाख 26 हजार रुपये की आय प्राप्त हुई। केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड फीचर फिल्मों के प्रमाण-पत्र के आवेदकों से पहले की तरह "उपकर शुल्क" (सेस फी) के रूप में 1,000 रु. की राशि भी लेता रहा।

6.15.7 इस वर्ष 6 भारतीय फीचर फिल्में और 4 विदेशी फीचर फिल्मों को केन्द्र सरकार द्वारा सिनेमेटोग्राफी अधिनियम, 1952 की उपधारा 5 बी (2) में दिये गये निर्देशों का उल्लंघन करने के कारण प्रमाण-पत्र देने से इंकार किया गया। उनमें से कुछ फिल्मों को

संशोधित रूप से या फिल्म प्रमाणन अपील ट्राइब्यूनल के आदेशों के बाद प्रमाणपत्र दिये गये। भारतीय और विदेशी-दोनों ही सेल्यूलाइड फिल्मों को प्रमाणपत्र देने से पहले इनमें से 16,607 मीटर लंबे आपत्तिजनक अंशों को हटाया गया। इसमें से 15,273 मीटर अंश भारतीय फीचर फिल्मों से: 1,187 मीटर विदेशी फीचर फिल्मों से; 65 मीटर भारतीय लघु फिल्मों से और 82 मीटर अंश विदेशी लघु फिल्मों से हटाया गया।

6.15.8 बोर्ड के निर्णय के अनुसार सलाहकार मंडल और निरीक्षण अधिकारियों के लाभार्थ विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों में कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में फिल्मों से हटाये गये आपत्तिजनक अंशों के प्रदर्शन के बाद सदस्यों की प्रतिक्रिया पर विचार किया गया कुछ कार्यशालाओं में दूसरे क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा कुछ फिल्मों के अंश हटाये जाने पर भी चर्चा की गई। सदस्यों और केन्द्रों की कठिनाइयों पर भी विचार हुआ।

पत्र सूचना कार्यालय

7.1.1 पत्र सूचना कार्यालय सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी देने वाली प्रमुख एजेंसी है। यह अपने मुख्यालय और 37 क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों के जरिए सभी सूचना माध्यमों — मुद्रित, श्रव्य, दृश्य और इलैक्ट्रॉनिक को सूचनाएं प्रदान करता है (देखिए परिशिष्ट 7)। पत्र सूचना कार्यालय सरकार और सूचना माध्यमों के बीच मध्यस्थ का कार्य करता है।

7.1.2 पत्र सूचना कार्यालय के सूचना कर्मी मंत्रालयों/विभागों से सम्बद्ध रहते हैं और विभिन्न कार्य निपटाते हैं। उनके महत्वपूर्ण कार्य हैं—सूचना माध्यमों को जानकारी देना और समाचार पत्रों में छपी अपने-अपने मंत्रालय से संबंधित रिपोर्टों तथा जनता की शिकायतों के बारे में फीड बैक उपलब्ध करना।

7.1.3 इस वर्ष पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय और उसके क्षेत्रीय तथा शाखा कार्यालयों ने सूचना माध्यमों के लिए 31,945 विज्ञप्तियां जारी कीं। पत्रकारों के लिए सरकारी सूत्रों से सूचना एकत्र करने के कार्य को आसान बनाने के लिए पत्र सूचना कार्यालय ने केन्द्रीय प्रेस मान्यता समिति की सिफारिश पर मान्यता प्रदान की कुल 1,269 पत्रकारों, कैमरामैन और टेक्नीशियनों को मान्यता प्रदान की गयी है।

वर्ष की उपलब्धियां

7.2.1 जहां तक प्रचार का प्रश्न है, पत्र सूचना कार्यालय ने सभी क्षेत्रों में सरकार द्वारा उठाए गए प्रभावशाली कदमों के साथ पूरा तालमेल बनाए रखा। वर्ष के दौरान कार्यालय ने अभूतपूर्व आर्थिक संकट से निपटने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों और दूरगामी आर्थिक सुधारों पर प्रकाश डालने के कार्य पर विशेष ध्यान दिया। व्यापार नीति में महत्वपूर्ण सुधारों, 1992-97 के लिए नयी आयात-निर्यात नीति और शत-प्रतिशत निर्यातोन्मुख इकाइयों संबंधी योजना आदि के बारे में विभिन्न सूचना माध्यमों के जरिए प्रचार अभियान चलाया गया। इसके अतिरिक्त, विभिन्न श्रम कानूनों में प्रस्तावित संशोधन औद्योगिक विकास तेज करने के लिए उठाए गए कदमों, उर्वरकों पर मूल्य-नियंत्रण समाप्त किये जाने और सार्वजनिक वितरण प्रणाली में व्यापक सुधार के बारे में भी पर्याप्त प्रचार किया गया।

7.2.2 आर्थिक विषयों के सम्पादकों का तीन दिन का सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें 80 से अधिक वरिष्ठ सम्पादकों ने हिस्सा लिया। उन्हें सरकार के आर्थिक मंत्रालयों द्वारा उठाये गये नये कदमों की जानकारी दी गयी।

7.2.3 पत्र सूचना कार्यालय ने पाक्षिक प्रकाशन 'इंडिया अप-डेट' के लिए सम्पादकीय सामग्री उपलब्ध कराने का कार्य जारी रखा। इसमें नयी आर्थिक नीतियां अपनाने के बाद उपलब्ध अवसरों के बारे में विशेष रूप से सूचनाएं दी जाती हैं। सरकार के प्रमुख फैसलों का संकलन किया गया और उन्हें सभी सूचना-माध्यमों को उपलब्ध कराया गया।

7.2.4 आम जनता के लिए सरकारी नीतियों को और अधिक स्पष्ट बनाने के उद्देश्य से सम्बद्ध मंत्रालयों के मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मीडिया प्रतिनिधियों के साक्षात्कार आयोजित किए गए। विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के मंत्रियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के 924 संवाददाता सम्मेलनों के अलावा पत्र सूचना कार्यालय ने जनवरी 1993 में नई दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के दौरान एक मीडिया सेंटर भी स्थापित किया।

7.2.5 इस वर्ष पत्र सूचना कार्यालय ने अयोध्या के मामले को लेकर उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए प्रचार के विशेष उपाय किए। इनका उद्देश्य इस मामले को सुलझाने के प्रयासों को प्रचारित करना तथा स्थिति पर लगातार नजर रखकर शीघ्रता से फीड बैक उपलब्ध कराना है। क्षेत्रीय समाचार पत्रों में दिन-प्रतिदिन की घटनाओं और

जनता की प्रतिक्रिया के बारे में भी फीड बैक उपलब्ध कराया गया। 100 से अधिक सार-संक्षेप तैयार किये गये और सूचना माध्यनों को हर रोज सूचनाएं दी गयीं। पंजाब और कश्मीर, झारखंड वार्ता, अयोध्या पर राष्ट्रीय एकता परिषद की बैठक, बोडो वार्ता, आतंकवाद पर मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन और मानवाधिकार आयोग गठित करने के बारे में भी सूचनाएं दी गयीं। पत्र सूचना कार्यालय ने अपनी सामग्री के प्रस्तुतीकरण के स्वरूप में परिवर्तन किया है ताकि यह सूचना माध्यमों के लिए और अधिक आकर्षक तथा ग्राह्य बन सके। उदाहरण के लिए आंकड़ों को कम्प्यूटर ग्राफिक/पिक्टोग्राफ के जरिए प्रदर्शित किया जाने लगा है जिससे सामग्री अधिक रोचक हो जाती है।

7.2.6 संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन तथा इसके बाद ब्राजील में रिओ दि जनेरो में पृथ्वी सम्मेलन में भारत की भूमिका पर प्रकाश डालने के लिए व्यापक प्रचार किया गया।

7.2.7 गलत सूचनाओं के कारण भ्रामक समाचारों का प्रसार रोकने और गलत धारणाओं को दूर करने के लिए पत्र सूचना कार्यालय ने स्पष्टीकरण और खंडन जारी करने पर जोर दिया।

फीडबैक और विशेष सेवाएं

7.3.1 पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय तथा इसके क्षेत्रीय और शाखा कार्यालयों ने विभिन्न भाषाओं में 1,100 से भी अधिक विशेष फीचर जारी किये। ये सचित्र फीचर, फोटो फीचर, "डू यू नो", "फैक्ट शीट्स", "फैक्ट एट ए ग्लांस", "ग्लॉसरी", "ट्रेन्ड्स एट ए ग्लांस", विकास संबंधी समाचारों पर ग्राफिक चित्रों, सरकारी कार्यक्रमों की विशेषताएं बताने वाले फीचरों, प्रमुख अनुसंधान संस्थान, भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती तथा अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित थे। इसके अलावा स्वाधीनता आंदोलन और गणतंत्र दिवस पर भी विशेष फीचर जारी किये गये।

7.3.2 पत्र सूचना कार्यालय के फीड बैक सैल ने समाचारों और विचारों पर आधारित दैनिक सार संक्षेप तैयार किये। पंजाब, कश्मीर, असम और अयोध्या की घटनाओं पर भी 750 विशेष सार संक्षेप जारी किये गये। इसके अलावा केंद्रीय बजट, रेल बजट और आर्थिक विषयों पर भी विशेष सार-संक्षेप जारी किए गए। विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को हिंदी और अंग्रेजी समाचार पत्रों की 6 लाख से अधिक कतरनें भेजी गयीं।

फोटो सेवा

7.4 पत्र सूचना कार्यालय ने 851 समाचार फोटो की 2,33,908 प्रतियां समाचार पत्रों तथा अन्य प्रकाशनों के लिए जारी कीं। फोटो लाइब्रेरी के एलबमों में 2,098 नये फोटो जोड़े गये। इसके अलावा पत्र सूचना कार्यालय ने छोटे और मझोले समाचार पत्रों को 1,971 एबोनाइड ब्लॉक भी दिये।

भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक

8.1.1 भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय का एक सम्बद्ध कार्यालय है। यह समाचार पत्रों के नामों की उपलब्धता की पुष्टि, नियमन तथा पंजीकरण करता है। यह एक वार्षिक रिपोर्ट 'प्रेस इन इंडिया' का प्रकाशन भी करता है। यह कार्यालय सरकारी नीति के अनुरूप पत्र पत्रिकाओं को अखबारी कागज आबंटित करता है तथा समाचार पत्रों की आवश्यकता के अनुरूप छपाई मशीनों और अन्य संबंधित उपकरणों के आयात की अनिवार्यता का प्रमाण पत्र देता है।

8.1.2 अप्रैल दिसम्बर 1992 के दौरान इस कार्यालय ने प्रस्तावित पत्र-पत्रिकाओं के नामों के संबंध में 11,401 आवेदन-पत्र निपटाए। नामों की स्वीकृति देने के लिए हाल में अपनाई गई कम्प्यूटर प्रणाली को और उन्नत बनाया जा रहा है ताकि नाम स्वीकृत करने का काम और तेजी से हो सके। इस व्यवस्था को बंबई, कलकत्ता तथा मद्रास के तीन क्षेत्रीय कार्यालयों से जोड़ा जाएगा। आठवीं योजना अवधि में इस समूची परियोजना के पूरा हो जाने की आशा है

8.1.3 इसी अवधि में 1,460 पत्र पत्रिकाओं को पंजीकरण प्रमाण-पत्र जारी किए गए पूरे वर्ष के दौरान यह संख्या 2,000 हो जाने की आशा है।

8.1.4 नवम्बर 1992 तक इस कार्यालय ने 1,482 समाचार पत्रों के प्रसार संख्या संबंधी दावों की जांच की जबकि 1991-92 में 1,111 पत्रों के दावों की जांच की गई थी वर्ष के अंत तक 400 और पत्रों के प्रसार संख्या संबंधी दावों की जांच कर लिए जाने की आशा है

8.1.5 भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक की वार्षिक रिपोर्ट 'प्रेस इन इंडिया 1991' जल्दी ही प्रकाशित हो जाएगी यह रिपोर्ट पत्र-पत्रिकाओं से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित होती है।

1992 की रिपोर्ट के अनुसार समाचारों से संबद्ध पत्र पत्रिकाओं की संख्या 1990 की 28,491 से बढ़कर 1991 में 30,214 हो गई है।

अखबारी कागज

8.2.1 1992-93 के लिए अखबारी कागज के आयात की नीति तथा इसे सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने की अधिसूचना जारी किए जाने के बाद 5 मई 1992 को समाचारपत्रों को अधिकार प्रमाण-पत्र जारी करने से संबंधित दिशा निर्देशों की घोषणा की गई। आयात नीति और दिशा निर्देशों के अनुसार समाचारपत्र स्वयं सीधे अथवा अपनी अधिकृत एजेंसियों की मार्फत अखबारी कागज का आयात कर सकते हैं। जिन समाचार पत्रों की वर्ष में 200 मीट्रिक टन तक स्टैंडर्ड अखबारी कागज प्राप्त करने की योजना है, वे चाहे जितना अखबारी कागज आयात कर सकते हैं परंतु शर्त यह होगी कि दो टन अखबारी कागज देशी अनुसूचित मिलों से खरीदने पर एक टन विदेशी अखबारी कागज आयात कर सकेंगे। किंतु जिन समाचार पत्रों की वर्ष में स्टैंडर्ड अखबारी कागज प्राप्त करने की योजना 200 मीट्रिक टन से कम है और जिन पत्रिकाओं को ग्लेज्ड कागज के इस्तेमाल की अनुमति मिली हुई है वे भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक द्वारा निर्धारित मात्रा में अखबारी कागज आयात कर सकेंगी। अब बिना किसी शुल्क के अखबारी कागज आयात किया जा सकता है

8.2.2 नवम्बर 1992 तक 200 मीट्रिक टन स्टैंडर्ड अखबारी कागज प्राप्त करने की पात्रता वाले 371 पत्र-पत्रिकाओं को 'अधिकार प्रमाण पत्र' जारी किए गए। नवम्बर 1992 तक 1.03 लाख मी० टन आयातित स्टैंडर्ड अखबारी कागज तथा 53,857 मी० टन ग्लेज्ड अखबारी कागज 1,715 पत्र-पत्रिकाओं को आबंटित किया गया इसी अवधि में 272 नए आवेदकों को 27,407 मी० टन स्वदेशी अखबारी कागज दिया गया।

छपाई मशीनें

8.3. अप्रैल - अक्तूबर 1992 के दौरान समाचार-पत्र प्रतिष्ठानों को 4.99 करोड़ रुपये की छपाई मशीनों तथा संबद्ध उपकरणों के आयात की अनुमति दी गई

अध्याय 9

प्रकाशन विभाग

9.1 प्रकाशन विभाग सरकार का सबसे बड़ा प्रकाशन संगठन है। यह 1941 में ब्यूरो ऑफ पब्लिक इंफार्मेशन की एक शाखा के रूप में स्थापित किया गया था तथा 1944 में इसने वर्तमान नाम और अलग पहचान कायम की। स्वतंत्रता के बाद पिछले साढ़े चार दशकों के दौरान विभाग ने राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर पुस्तकों और पत्रिकाओं के उत्पादन, बिक्री और वितरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभाग के मुख्य उद्देश्यों में राष्ट्रीय गतिविधियों के विभिन्न आयामों से संबंधित सूचना का प्रचार करना तथा देश भर में पाठकों को उचित दाम पर स्वस्थ साहित्य उपलब्ध कराना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभाग द्वारा भारत की कला एवं संस्कृति तथा इतिहास पर तथा जानीमानी हस्तियों के जीवन वृत्त पर अंग्रेजी, हिन्दी तथा प्रमुख भारतीय भाषाओं में पुस्तकों और पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। अब तक विभाग ने अंग्रेजी, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में 6,471 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

पुस्तकें

9.2.1 प्रकाशन विभाग 'आधुनिक भारत के निर्माता', 'हमारे देश के राज्य', 'भारत के सांस्कृतिक पुरोधा', 'हम सबकी पुस्तक माला', 'भारतीय इतिहास के गौरव ग्रंथ', 'भारत के गौरव', 'भारत के अमर चरित्र', 'इंडियन विज़डम' (अंग्रेजी), 'भारतीय मनीषा' (हिन्दी), 'हमारी जनजातियां', 'हमारे संत', 'भारत के महापुरुषों के उद्धरण' और 'भारत की महान नारियां' इत्यादि श्रृंखलाओं के अंतर्गत पुस्तकों का प्रकाशन करता है। विभाग ने देश के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों के भाषण और आलेखों के खंड प्रकाशित करने का गौरव प्राप्त किया है।

9.2.2 'आधुनिक भारत के निर्माता' ग्रंथमाला के अंतर्गत विभाग ने आचार्य विनोबा भावे, केशव चंद्र सेन, वी. ओ. चिदम्बरम पिल्लै, एनी बेसेंट तथा अन्य जीवनियां प्रकाशित कीं।

9.2.3 'भारत की महान नारियां' श्रृंखला के अंतर्गत आलोच्य वर्ष में 'राजस्थान के नारी रत्न' और 'हाड़ी रानी' पर पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

बाल साहित्य

9.3 बचपन की उम्र ऐसी होती है जिस पर कोई भी छाप आसानी से पड़ जाती है। अतः विभाग ने बच्चों के लिए स्वस्थ साहित्य प्रकाशित करने के विशेष प्रयास किए। विभाग द्वारा भारत की ऐतिहासिक और पौराणिक कहानियों का संग्रह, भारत के विभिन्न प्रदेशों की लोककथाएं तथा विश्व की लोककथाएं प्रकाशित की गईं। इस श्रेणी के अंतर्गत विभाग ने पंजाबी की पांच, दो उर्दू, दो तमिल और एक तेलुगु में पुस्तकें प्रकाशित कीं।

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

9.4 प्रकाशन विभाग द्वारा सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय के तहत 90 खंड अंग्रेजी में तथा 83 खंड हिन्दी में प्रकाशित किए गए हैं। अंग्रेजी में तीन पूरक खंडों का प्रकाशन भी किया गया है। 'इंडेक्स ऑफ पर्सन्स' और 'इन्डेक्स ऑफ सब्जेक्टस' का प्रकाशन हो रहा है। अंग्रेजी के चौथे पूरक खंड तथा हिन्दी के 84 वें खंड का काम प्रगति पर है।

पत्रिकाएं

9.5 प्रकाशन विभाग द्वारा अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनेक पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य देश में चल रहे विभिन्न घटनाक्रमों की सूचना उपलब्ध कराना है। विभाग की एक पत्रिका - 'योजना' आयोजना एवं विकास पर समर्पित है। यह हिन्दी तथा अंग्रेजी के अलावा दस भारतीय भाषाओं में भी प्रकाशित की जाती है। यह पत्रिका अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल और तेलुगु में पाक्षिक और मलयालम, पंजाबी, असमिया, बंगाली,

गुजराती, मराठी, कन्नड और उर्दू में मासिक आधार पर प्रकाशित की जाती है। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आठवीं पंचवर्षीय योजना पर एक विशेषांक प्रकाशित किया गया। इसके अलावा स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस पर भी एक-एक विशेषांक प्रकाशित किए गए। 'भारत छोड़ो आंदोलन' के 50 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में पत्रिकाओं के विभिन्न अंकों में विशेष आलेख प्रकाशित हुए। आर्थिक पहलुओं पर केंद्रित आलेख जैसे 'बजट', 'आर्थिक सुधार', 'आर्थिक सर्वेक्षण', 'आयात-निर्यात नीति' - 'पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली' इत्यादि प्रकाशित किए गए। शिक्षा, साक्षरता, रोजगार जनित अनुसूचित जाति एवं जनजातियों, महिलाओं और सामाजिक कल्याण पर भी लेख प्रकाशित किए गए।

9.5.2 'बाल भारती' बच्चों की मासिक पत्रिका है। इसमें उनकी रुचि वाले तथा उपयोगी लेख प्रकाशित होते हैं। आलोच्य वर्ष में पत्रिका में भारत छोड़ो आंदोलन, अमरीका की खोज के 500 वर्ष, नए राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा, भारत रत्न जे० आर० डी० टाटा इत्यादि पर लेख प्रकाशित किए।

9.5.3 'आजकल' एक साहित्यिक पत्रिका है जो हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित होती है। इसमें साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र की गतिविधियों से संबंधित सामग्री प्रकाशित होती है। आलोच्य वर्ष में आजकल (हिन्दी) का कविता विशेषांक प्रकाशित किया गया, जिसमें 1945 से पत्रिका के विभिन्न अंकों में छपी कविताओं में से 150 कवियों की चुनी हुई कविताएं प्रकाशित की गईं। आजकल (उर्दू) में जाने माने फिल्म निर्देशक सत्यजीत राय और प्रख्यात उर्दू शायर और ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता फिराक गोरखपुरी पर विशेष लेख प्रकाशित हुए। भारत छोड़ो आंदोलन के स्वर्ण जयंती के अवसर पर एक विशेषांक भी निकाला गया।

9.5.4 विभाग द्वारा ग्रामीण विकास विभाग की ओर से एक मासिक पत्रिका 'कुरुक्षेत्र' का प्रकाशन भी किया जाता है। इस पत्रिका का वार्षिकांक 'ग्रामीण स्वच्छता— समस्याएं और संभावनाएं' पर केंद्रित था।

रोजगार समाचार

9.6 प्रकाशन विभाग का रोजगार समाचार एकक अंग्रेजी में 'एम्पलायमेंट न्यूज' तथा हिन्दी तथा उर्दू में रोजगार समाचार का प्रकाशन करता है। तीनों ही साप्ताहिक पत्र हैं। पत्र में केन्द्र/राज्य सरकारों की नौकरियों के संबंध में सूचना प्रकाशित की जाती है। इसके अलावा इसमें विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं और साक्षात्कारों के लिए तैयारी करने वाले अभ्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक सामग्री भी दी जाती है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान इस पत्र की प्रसार संख्या तेजी से बढ़ी है। मार्च 1993 में इसकी कुल प्रसार संख्या 4,37,000 प्रति है।

प्रदर्शनियां

9.7 आलोच्य वर्ष के दौरान विभाग ने लगभग 40 पुस्तक प्रदर्शनियों/मेलों में हिस्सा लिया, जो नई दिल्ली तथा विभिन्न राज्यों के महत्वपूर्ण नगरों में आयोजित किए गए थे। गत वर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि दिल्ली, उत्तर प्रदेश व हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एक चलती-फिरती पुस्तक प्रदर्शनी की शुरुआत की गई।

विपणन

9.8 विभाग अपनी पुस्तकों के विपणन अपने नई दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास, पटना, लखनऊ, तिरुअनंतपुरम और हैदराबाद स्थित विक्रय केंद्रों तथा विभिन्न एजेंटों के माध्यम से करता है। विभाग द्वारा अपने विक्रय केंद्रों पर सरकारी और अर्धसरकारी संगठनों की पुस्तकों की बिक्री भी की जाती है। आलोच्य वर्ष के दौरान यह प्रयास किए गए कि विभाग के प्रकाशनों, खासतौर से 'आपरेशन ब्लैक बोर्ड स्कीम' के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों की थोक खरीद में राज्य सरकारों और स्वायत्तशासी संस्थाओं का सहयोग लिया जाए।

राजस्व

9.9 अप्रैल 1992 से 31 मार्च, 1993 की अवधि के दौरान पुस्तकों और पत्रिकाओं की बिक्री से प्रकाशन विभाग ने 270.00 लाख रुपयों का कुल राजस्व कमाया तथा विभिन्न पत्रिकाओं में इस अवधि के दौरान छपने वाले विज्ञापनों के जरिये 4.5 लाख रुपयों का राजस्व प्राप्त किया। इसी अवधि के दौरान रोजगार समाचार के जरिये 935.00 लाख रुपये का राजस्व कमाया गया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार

9.10 जनसंचार के किसी भी विषय पर हिंदी में मूल लेखन के लिए वर्ष 1991 के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार दिसम्बर 1992 में प्रदान किए गए। पच्चीस हजार रुपये का प्रथम पुरस्कार श्री राधानाथ चतुर्वेदी को उनकी पांडुलिपि 'प्रसारण के लिए समाचार लेखन' पर दिया गया। द्वितीय पुरस्कार जो कि 15,000/- रुपये का है, श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी को उनकी पुस्तक 'समाचार संपादन' के लिए प्रदान किया गया। 10,000/- रुपये का तीसरा पुरस्कार श्री पवन चौधरी मनमौजी को उनकी पांडुलिपि 'विधि पत्रकारिता : चिन्ता और चुनौती' पर दिया गया। पांच-पांच हजार के पांच मेरिट पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

अध्याय 10

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

10.1.1. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय क्षेत्र आधारित संगठन होने के कारण अपनी स्थापना के समय से ही राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस कार्य में वह समाज के हर वर्ग के लोगों का सक्रिय सहयोग प्राप्त कर रहा है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय समाज के विभिन्न वर्गों, विशेष रूप से कमजोर और दलित वर्गों के लोगों के लिए सरकार द्वारा बनायी गयी विकास योजनाओं और गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ाने की कोशिश करता है।

10.1.2. कुशल कर्मचारियों और उपयुक्त साज-सामान से सुसज्जित क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयां घर-घर जाकर लोगों को हमारे देश के विविधतापूर्ण सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप की जानकारी देती हैं। वे दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिकों को इस बात की प्रेरणा देती हैं कि वे देशवासियों के बेहतर भविष्य के लिए एकजुट होकर आगे बढ़ें। इसके लिए कई तरह के कार्यक्रमों का सहारा लिया जाता है जिनमें फिल्में, गीत और नाटक मंडलियों के कार्यक्रम तथा मौखिक संचार और विशेष कार्यक्रम जैसे परिचर्चा, जनसभा, विचार गोष्ठी तथा विभिन्न किस्म की प्रतियोगिताएं शामिल हैं। फिल्मों का चयन स्थानीय परिस्थितियों और प्रचार आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है क्षेत्रीय प्रचार संगठन सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों तथा ग्राम के स्तर पर उनके क्रियान्वयन के बारे में जनता की प्रतिक्रिया प्राप्त करता है और आवश्यक कार्रवाई के लिए सरकार को इससे अवगत कराता है। इस तरह निदेशालय सरकार और जनता के बीच दोहरी संचार व्यवस्था कायम करता है।

संगठन

10.2. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। देश के विभिन्न भागों में इसके 22 क्षेत्रीय कार्यालय और 257 इकाइयां हैं। इनमें 72 सीमान्त इकाइयां और 30 परिवार कल्याण इकाइयां भी शामिल हैं। निदेशालय के प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय के अधीन 8 से 18 तक इकाइयां हैं। कुछ बड़े राज्यों को दो क्षेत्रों में बांट दिया गया है जबकि छोटे राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों को मिलाकर एक क्षेत्र बनाया गया है। क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के क्षेत्रीय कार्यालयों और इकाइयों की सूची परिशिष्ट-आठ में दी गई है।

गतिविधियां

10.3.1. प्रत्येक क्षेत्रीय इकाई अपने आप में सम्पूर्ण बहुआयामी प्रचार संगठन है जिसके पास वाहन, सिनेमा प्रोजेक्टर, सार्वजनिक सभा को संबोधित करने के लिए उपकरण, टेप रिकार्डर और ट्रान्जिस्टर उपलब्ध रहता है। इसके अलावा जिन इलाकों में बिजली नहीं होती वहां फिल्म दिखाने के लिए बिजली का जेनरेटर भी रहता है आधुनिकीकरण की योजना के अंतर्गत कुछ इकाइयों को सचल वीडियो प्रोजेक्शन प्रणालियां उपलब्ध कराई गई हैं। क्षेत्रीय इकाइयां हर महीने 12 से 15 दिन अपने-अपने क्षेत्र में दौरे पर रहती हैं। प्रचार संबंधी गतिविधियों के संचालन में वे राज्य सरकार के संगठन और स्वयंसेवी संस्थाओं से तालमेल बनाए रखती हैं।

10.3.2. क्षेत्रीय इकाइयों ने महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों जैसे राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, लोकतंत्र के प्रति वचनबद्धता, धर्म निरपेक्षता, सामाजिक बुराइयों जैसे मादक द्रव्यों के दुरुपयोग, नशाखोरी, दहेज और बाल विवाह आदि के उन्मूलन पर विशेष प्रचार किया। इस कार्य में फिल्म प्रदर्शन, गीत और नाटक, मौखिक संचार के कार्यक्रम तथा विशेष प्रतियोगिताएं और मुकाबलों आदि की सहायता लीं। लेकिन देश के विभिन्न भागों में स्थिति को देखते हुए राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर ज्यादा जोर दिया गया।

10.3.3. अप्रैल 1992 से सितम्बर 1992 तक क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने समाज के सभी वर्गों के 2.5 करोड़ लोगों

सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सचिव श्री अशोक चन्द्रा, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय को वीडियो वैन प्रदान करते हुए

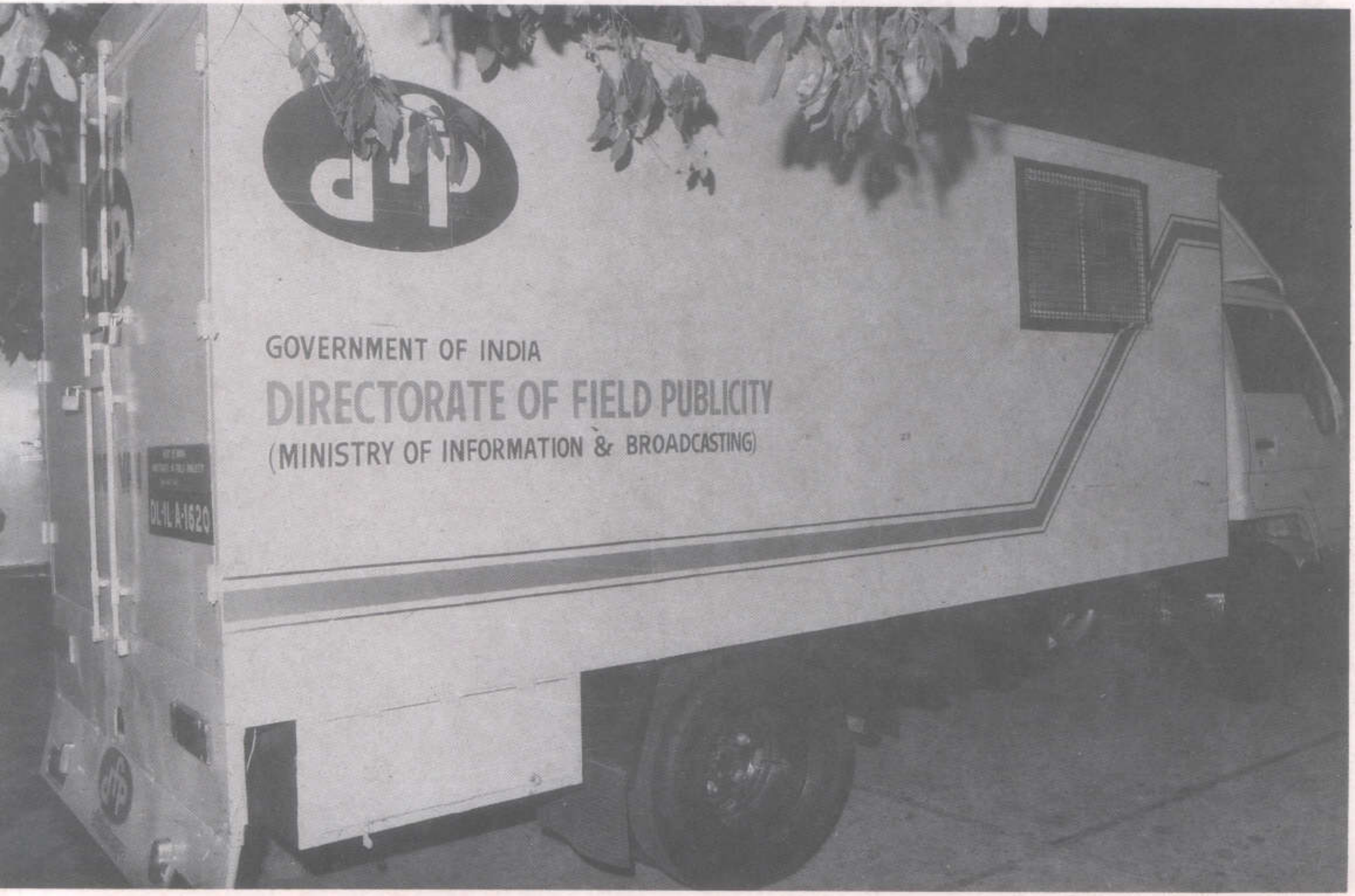

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की वीडियो वैन

के लिए 27,571 फिल्म शो, 3,944 गीत और नाटक कार्यक्रम, 18,448 फोटो प्रदर्शनियां, और 29,186 मौखिक संचार कार्यक्रम आयोजित किए।

10.3.4. निदेशालय की इकाइयों ने गांधी-जयंती, डॉक्टर आम्बेडकर जन्म-शताब्दी समारोह तथा पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री लाल बहादुर शास्त्री और डॉक्टर राधाकृष्णन की जयंती जैसे अवसरों पर राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, धर्म निरपेक्षता, लोकतंत्र, स्वाधीनता आंदोलन आदि विषयों पर संदेश प्रसारित किए। इसी तरह विश्व स्वास्थ्य दिवस, विश्व जनसंख्या दिवस, विश्व पोषाहार दिवस, सार्क बालिका दशक, टीकाकरण दिवस, अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस आदि अवसरों पर भी क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने राष्ट्रीय महत्व के विषयों और कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार किया।

कार्य योजना

10.4. प्रशासन को और अधिक कार्यकुशल और जवाबदेह बनाकर उसमें व्यापक सुधार के लिए निदेशालय ने काम के तौर-तरीकों की समीक्षा के सामान्य नियमों तथा आदेशों का अनुपालन किया और कार्यविधि को सरल बना दिया। संचार नीति के बारे में केन्द्रीय दल द्वारा निर्धारित विषयों के प्रचार-प्रसार के लिए क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने देश के सभी भागों में बहु-माध्यम प्रचार अभियान के जरिए समन्वित प्रयास किए। इन विषयों में लोकतंत्र के प्रति वचनबद्धता, धर्मनिरपेक्षता, देश की एकता और अखंडता, राष्ट्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियों, 20-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम, कृषि में सुधार, अल्पसंख्यकों के लिए 15-सूत्री कार्यक्रम, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण तथा कई अन्य महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्यक्रम शामिल हैं। क्षेत्रीय इकाइयों के जरिए केन्द्रीय बजट और नए आर्थिक कार्यक्रम के सकारात्मक पक्षों का प्रचार भी किया गया।

20-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम का प्रचार

10.5. 20-सूत्री कार्यक्रम के प्रचार का उद्देश्य लोगों, विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्गों की दशा में सुधार करना था। क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने विभिन्न संचार माध्यमों के जरिए अनेक कार्यक्रमों द्वारा इसका प्रचार किया। इन कार्यक्रमों का आयोजन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि जिस क्षेत्र और जिन श्रोताओं के लिए इन्हें बनाया गया है उनके लिए इनके संदेश की सार्थकता बनी रहे। केन्द्रीय बजट के सकारात्मक पक्षों और गरीबों, छोटे और सीमान्त किसानों तथा मजदूरों के लिए इसमें दी गई रियायतों के प्रचार पर भी पूरा ध्यान दिया गया। कीमतें कम करने के लिए उठाए गए कदमों के प्रचार के लिए परिचर्चाएं आयोजित की गई और मौखिक संचार विधियों का सहारा लिया गया। जवाहर रोजगार योजना, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम और राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम को भी प्रचार अभियान में शामिल किया गया।

राष्ट्रीय एकता

10.6.1. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने दृश्य-श्रव्य संचार माध्यमों के जरिए देश भर में राष्ट्रीय एकता के संदेश का प्रचार जारी रखा। कुछ चुने हुए इलाकों और नाजुक क्षेत्रों में विशेष प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए गए। 19 नवम्बर से 25 नवम्बर, 1991 तक देश भर में 'कौमी एकता सप्ताह' मनाया गया। कौमी एकता के संदेश के प्रचार के लिए कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें फिल्म शो, गीत और नाटकों के कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, भाषण, विचार-गोष्ठियां तथा देशभक्ति के गीतों की प्रतियोगिताएं शामिल थीं। धर्मनिरपेक्षता के प्रति देश की वचनबद्धता के प्रचार के लिए क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने विशेष कार्यक्रम आयोजित किए। 20 अगस्त को सद्भावना दिवस के अवसर पर भी कई क्षेत्रीय कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर देश भर में विशेष प्रचार अभियान चलाया गया।

10.6.2. जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले के सुरनकोट और पुंछ विकास खंडों में राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रचार के लिए विभिन्न संचार माध्यमों की मदद से अक्तूबर 1992 में अभियान छेड़ा गया। पश्चिम बंगाल के कूचबिहार जिले में जून 1992 में सघन प्रचार अभियान चलाया गया जिसका उद्देश्य "तीन बीघा" इलाका बंगलादेश को पट्टे पर दिये जाने के औचित्य के बारे में लोगों को जानकारी देना था। पश्चिम बंगाल की तीन क्षेत्र प्रचार इकाइयों — कूचबिहार, जलपाइंगुड़ी और सिलिगुड़ी ने इस अभियान में अंतर-वैयक्तिक संचार के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर फिल्म शो, फोटो प्रदर्शनी, परिचर्चा तथा प्रचार सामग्री के वितरण आदि का सहारा लिया। अभियान के एक अंग के रूप में इन इलाकों में गीत और नाटकों के 45 कार्यक्रम भी आयोजित किये गए। इस अभियान में इलाके के प्रमुख व्यक्तियों को भी शामिल किया गया।

अल्पसंख्यकों का कल्याण

10.7. अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री के 15-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के प्रचार के लिए क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने कई कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसी सिलसिले में आयोजित परिचर्चाओं में अल्पसंख्यकों के कल्याण और उन्हें वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने में आने वाली परेशानियों के बारे में विस्तार से चर्चा हुई। निदेशालय की इकाइयों ने अल्पसंख्यक समुदायों की दशा सुधारने की सरकार की हार्दिक इच्छा के बारे में प्रचार किया। क्षेत्रीय कार्यक्रमों में सामाजिक न्याय और विभिन्न क्षेत्रों में अवसर उपलब्ध कराने के राज्य सरकारों के प्रयासों पर भी प्रकाश डाला गया।

शिक्षा

10.8.1. क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने विभिन्न दृश्य-श्रव्य माध्यमों के जरिए 'नई शिक्षा नीति' के बारे में भी प्रचार किया। इसके लिए आयोजित कार्यक्रमों में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और विकास के आधार के रूप में प्रस्तुत करने पर जोर दिया गया। क्षेत्रीय इकाइयों ने दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया और निरक्षरों तथा नव साक्षरों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने वाले कार्यक्रम आयोजित किए।

10.8.2. आंध्र प्रदेश के करीमनगर जिले में अगस्त 1992 में साक्षरता के बारे में सघन बहुमाध्यम प्रचार अभियान चलाया गया। इसमें वारंगल, निजामाबाद, मेडक, नलगोंडा और हैदराबाद की क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों को शामिल किया गया। उत्तर प्रदेश (पश्चिमोत्तर) में मुरादाबाद इकाई ने जिले के दो गांवों में 'साक्षरता और राष्ट्रीय विकास' तथा 'शिक्षा और समाज' विषयों पर विचारगोष्ठियों का आयोजन किया। गुजरात में वड़ोदरा इकाई ने 'साक्षरता और विकास' विषय पर नाडियाड में विचार गोष्ठी आयोजित की। कर्नाटक में बीजापुर, बेलगांव, धारवाड़ और गुलबर्गा इकाइयों ने अगस्त 1992 में बीजापुर इकाई द्वारा आयोजित बहु-माध्यम प्रचार अभियान में भाग लिया।

छुआछूत उन्मूलन

10.9. लोगों को छुआछूत की बुराई के बारे में जागरूक बनाने के बारे में क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने 'एक पुराना अभिशाप' और 'परोपकार' आदि फिल्में प्रदर्शित कीं। मौखिक संचार और परिचर्चाओं के माध्यम से भी इस विषय पर प्रचार किया गया। सभी क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने भारत रत्न डॉ० बी. आर. आम्बेडकर की जन्म शताब्दी के सिलसिले में कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें दलितों के लिए उनकी सेवाओं को याद किया गया। गांधी जयंती, छुआछूत विरोधी सप्ताह और स्वतंत्रता दिवस जैसे अवसरों पर भी ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों और जन-जातियों को केन्द्र बनाकर इस विषय पर प्रचार अभियान चलाया गया.

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

10.10. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण पर सघन प्रचार जारी रखा। इसके लिए फिल्म शो, फोटो प्रदर्शनियां, गीतों और नाटकों के कार्यक्रम, मौखिक संचार, शिशु स्वास्थ्य प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तर सभाओं और माताओं की बैठकों का सहारा लिया गया। स्वास्थ्य और चिकित्सा अधिकारियों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, युवा क्लबों तथा अन्य स्वयंसेवी संगठनों की मदद से घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क स्थापित किया गया और उन्हें स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण के बारे में जानकारी दी गई. विभिन्न क्षेत्रीय इकाइयों ने निबंध और भाषण प्रतियोगिताओं, विचार गोष्ठियों तथा चित्रकला प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया। हैजा, मलेरिया और पेचिश की आशंका वाले इलाकों में इन बीमारियों की रोकथाम के उपायों की जानकारी देने के लिए अभियान चलाए गए। सभी इकाइयों ने अप्रैल में विश्व स्वास्थ्य दिवस और जुलाई में विश्व जनसंख्या दिवस मनाया और चुने हुए क्षेत्रों में प्रचार अभियान चलाए। क्षेत्रीय प्रचार अधिकारियों के लिए 'स्वास्थ्य और परिवार कल्याण' तथा 'सबके लिए प्राथमिक शिक्षा' पर चार दिन की कार्यशाला 17 से 20 नवम्बर 1992 तक हैदराबाद में आयोजित की गई।

अन्य विषय

10.11. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के प्रचार अभियानों की सूची में समाज में महिलाओं की स्थिति, अस्पृश्यता उन्मूलन, नशाबंदी, मादक पदार्थों की बुराई और सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका जैसे सामाजिक-आर्थिक विषय शामिल हैं। आंध्र प्रदेश में तिरुपति में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महाअधिवेशन के दौरान 12 से 18 अप्रैल तक व्यापक बहु-माध्यम प्रचार अभियान आयोजित किया गया। इसमें नई सार्वजनिक वितरण प्रणाली, नई आर्थिक नीति और 20 सूत्री कार्यक्रम सहित विभिन्न सामाजिक - आर्थिक और कल्याण कार्यक्रमों को शामिल किया गया।

आर्थिक उपाय

10.12. नए आर्थिक उपायों के अधिक-से-अधिक प्रचार के राष्ट्रीय प्रयास में योगदान करने तथा केन्द्रीय बजट की विशेषताओं पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से निदेशालय की इकाइयों ने अपने आपको पूरी तरह तैयार कर लिया। प्रचार के विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को प्रेरित करने के लिए व्यापक जन-सम्पर्क अभियान चलाए गए। फिल्म शो और मौखिक संचार के जरिए खर्च में किफायत बरतने तथा ईंधन की बचत की आवश्यकता आदि विषयों पर भी जोर दिया गया। इसके अलावा अनाज के मामले में आत्मनिर्भरता, नई व्यापार और उद्योग नीति, उपभोक्ता संरक्षण तथा कई अन्य विषयों पर पूरे साल परिचर्चाओं का आयोजन किया गया और इन पर विचार किया गया। शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 'कन्जर्वेशन ऑफ पेट्रोलियम' और 'ड्राप-दैट काउन्टस' जैसी फिल्में भी प्रदर्शित की गई।

मेले और समारोहों के अवसर पर कार्यक्रम

10.13. मेलों और समारोहों के अवसर पर क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयां नियमित रूप से कार्यक्रम आयोजित करती हैं। ऐसे अवसरों का फायदा बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए जन समूह को राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर संदेश देने के लिए उठाया जाता है. आंध्र प्रदेश में बारह वर्षों में एक बार होने वाले प्रमुख त्यौहार

कृष्ण पुष्करम् के अवसर पर क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए। पश्चिम बंगाल में कूच-बिहार में 9 नवम्बर से 21 नवम्बर, 1992 तक आयोजित प्रसिद्ध 'राश मेला' में भी क्षेत्रीय इकाइयों ने भाग लिया। इस दौरान मेले में राष्ट्रीय एकता और परिवार कल्याण से संबद्ध कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके अलावा हरिद्वार में अर्द्धकुंभ मेले, गुवाहाटी में कामाख्या मंदिर में अंबुबासी मेले और उज्जैन में सिंहस्थ मेले में भी क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने हिस्सा लिया।

प्रायोजित भ्रमण

10.14. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने तथा लोगों के मन में एकात्मता की भावना पैदा करने के लिए जनमत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रमुख लोगों के लिए प्रायोजित भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किए गए। हर साल देश के एक क्षेत्र के लोगों को दूसरे क्षेत्र की यात्रा पर ले जाया जाता है ताकि वे वहां विभिन्न क्षेत्रों में चल रही विकास गतिविधियों का खुद जायजा ले सकें। इस तरह के भ्रमण दलों में सीमावर्ती, जनजातीय और पिछड़े क्षेत्रों के लोक कलाकारों, अध्यापकों, विद्यार्थियों, युवकों, जन-नेताओं और प्रगतिशील किसानों को शामिल किया जाता है।

बातचीत के मुद्दे

10.15. क्षेत्रीय अधिकारियों को विभिन्न विषयों पर उचित जानकारी उपलब्ध कराने के लिए मुख्यालय में 'बातचीत के मुद्दे' तैयार किए जाते हैं और क्षेत्रीय इकाइयों को भेजे जाते हैं। इस तरह जारी किए गए 'बातचीत के मुद्दे' से क्षेत्रीय कर्मचारी देश की नवीनतम घटनाओं से अवगत रहते हैं। इससे प्रचार के कार्य में विशेष मदद मिलती है क्योंकि इससे प्रचार के विषयों की उन्हें अच्छी जानकारी मिल जाती है। इस वर्ष 'नए आर्थिक उपाय', 'जनसंख्या नियंत्रण' की नीति, 'ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम', 'बंगलादेशी नागरिकों के अवैध रूप से बसने', 'तेल की कीमतों में वृद्धि' और 'उर्वरक' आदि के बारे में संयुक्त संसदीय समिति की सिफारिशों पर सरकार के फैसले जैसे विषयों पर बातचीत के मुद्दे तैयार किए गए।

जांच और मूल्यांकन

10.16. क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों के कामकाज की निगरानी, विश्लेषण और मूल्यांकन के लिए निदेशालय में जांच और मूल्यांकन कक्ष बनाया गया है। इस कक्ष के अधिकारी समय समय पर क्षेत्रीय कार्यालयों और क्षेत्र प्रचार इकाइयों का दौरा करते हैं और उनकी गतिविधियों का मूल्यांकन कर मौके पर ही दिशानिर्देश देते हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों/इकाइयों की गतिविधियों के तुलनात्मक अध्ययन के बारे में वार्षिक संदर्भ ग्रंथ भी इस कक्ष ने जारी किया।

फीड-बैक

10.17. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय दुतरफा संचार का माध्यम है। एक ओर यह सरकार की नीति और कार्यक्रमों के बारे में सूचना प्रदान करता है तो दूसरी ओर जनता की प्रतिक्रिया तत्काल एकत्र कर उचित स्थान तक पहुंचाता है ताकि उस पर उचित कार्रवाई की जा सके।

अध्याय 11

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय

11.1.1 विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय एक बहु-माध्यम केंद्रीय एजेंसी है जो लोगों को सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी देती है और उन्हें इन कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए प्रेरित करती है। विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय समाचार पत्रों में विज्ञापनों, प्रदर्शनियों, पुस्तिकाओं, फोल्डरों, पोस्टरों, रेडियो और टेलीविजन के विज्ञापनों, अति लघु फिल्मों (क्विकीज), बसों के पैनलों, सड़कों की होर्डिंग और किओस्कों के जरिए अपना कार्य करता है। निदेशालय ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, बालिकाओं के कल्याण, रोग-प्रतिरोधक टीकों के महत्व, महिला और बाल विकास, राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव, प्रतिरक्षा, नई आर्थिक नीति, पर्यावरण, साक्षरता, रोजगार, चुनाव, एड्स के खतरे, नशीले पदार्थों के नुकसान, मद्य निषेध, सीमाशुल्क और उत्पाद शुल्क, आय कर, ग्रामीण विकास और ऊर्जा संरक्षण जैसे विषयों पर जानकारी का प्रचार-प्रसार किया है।

11.1.2 निदेशालय के मुख्यालय में विज्ञापन, बाहरी प्रचार, मुद्रित प्रचार, प्रदर्शनी, ई० डी० पी० केन्द्र, मास-मेलिंग, श्रव्य-दृश्य कक्ष, स्टूडियो, कॉपी खंड, अभियान खंड (विंग्स) आदि हैं। इनके अलावा देश भर में निदेशालय के कार्यालय हैं। क्षेत्रीय कार्यकलापों में तालमेल के लिए बंगलौर और गुवाहाटी में दो क्षेत्रीय कार्यालय हैं। हिन्दी, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रचार-सामग्री के शीघ्र वितरण के लिए कलकत्ता और मद्रास में दो क्षेत्रीय वितरण केन्द्र हैं। निदेशालय के अंतर्गत गुवाहाटी में एक प्रदर्शनी किट निर्माण केंद्र और 35 क्षेत्र प्रचार इकाइयां भी हैं। इनमें सात प्रदर्शनी-वाहन भी शामिल हैं, मद्रास-स्थित क्षेत्रीय प्रदर्शनी कार्यशाला प्रदर्शनियों के डिजाइन, निर्माण और दिखाए जाने के काम में मुख्यालय के प्रदर्शनी प्रभाग को मदद करता है।

मुद्रित प्रचार

11.2.1 विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने जनवरी 1993 तक मुद्रित प्रचार-सामग्री के अंतर्गत निम्न पुस्तिकाएं, फोल्डर और पोस्टर जारी किए— गरीबों के लिए नई खाद्य - सुरक्षा प्रणाली, तीन बीघा-तथ्य, भारत छोड़ो आंदोलन, भारतीय पैनोरमा 1993, आयकर, आठवीं पंचवर्षीय योजना, भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह—1993, आकाशवाणी संगीत सम्मेलन, भारतीय वायु सेना, किसानों का कल्याण— देश का कल्याण, नई उर्वरक मूल्य नीति, पेट्रोलियम मूल्य-निर्धारण, शिल्प संग्रहालय, अंतर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा निवारण दशक, चुनौतियों का समय-परिवर्तन का समय, ग्रामीण गरीबों के लिए योजनाएं, हरी पत्तेदार सब्जियां, गणतंत्र दिवस-लोक गीत उत्सव और शिल्प मेला, नई आयात-निर्यात नीति, मौसमी फल और सब्जियां खाइए, नई औद्योगिक नीति, तुरंत तैयार होने वाला शिशु-आहार, नशीले पदार्थों के नुकसान तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण। नई दिल्ली में आयोजित हालैंड, हंगरी, मिस्र, जापान, पुर्तगाल और इटली के फिल्म समारोहों पर फोल्डर छापे गये। 1993 के कलैंडर और डायरियां भी छापी गईं।

11.2.2 प्रधानमंत्री के भाषणों की श्रृंखला में श्री पी० वी० नरसिम्ह राव के 20 भाषण हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में पुस्तिकाओं/फोल्डरों के रूप में छापे गए। इनमें सार्वजनिक वितरण प्रणाली का कार्य-क्षेत्र विकसित करने, पर्यावरण संरक्षण, रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद विवाद, नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता, सौर ऊर्जा हमारी ऊर्जा की समस्याएं हल कर सकती है, प्रशासन को नीतिगत परिवर्तनों के अनुरूप ढलना ही होगा, मानवाधिकार— पुनर्दृढ़ता, खेल और शारीरिक शिक्षा को जन आंदोलन बनाना होगा, तेज प्रगति के लिए आम राय और तालमेल, जीवन-स्तर सुधारने में विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका, लोकसभा में 'अविश्वास प्रस्ताव' पर बहस पर प्रधानमंत्री का उत्तर और स्वामी विवेकानंद की भारत-परिक्रमा की शताब्दी आदि विषयों पर भाषण शामिल हैं। निदेशालय ने 'सर्वांगीण विकास के लिए साहसपूर्ण कदम-प्रमुख उपलब्धियां (जून 91 से दिसम्बर 92)', नाम का प्रकाशन भी छापा, जिसमें भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की उपलब्धियों का विवरण दिया गया है। कुल मिलाकर हिन्दी,

अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में 114 शीर्षकों के अंतर्गत 489 प्रकाशनों की 1.27 करोड़ प्रतियां छापी गईं।

प्रेस विज्ञापन

11.3.1 निदेशालय ने अप्रैल 1992 से जनवरी 1993 के दौरान 13,865 प्रेस विज्ञापन (13,068 वर्गीकृत और 797 प्रदर्शन विज्ञापन) जारी किए। ये विज्ञापन 3,687 समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए जारी किए गए। ये विज्ञापन आयकर, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, एड्स, रोग-प्रतिरक्षक टीके, नशीले पदार्थों के नुकसान और मद्य निषेध, राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय हथकरघा निर्यात, पर्यावरण संरक्षण, सीमा शुल्क और उत्पादन शुल्क, हस्तशिल्प और वस्त्र उद्योग, राष्ट्रीय बचत संगठन और विश्व जनसंख्या दिवस जैसे विषयों पर थे। गैर पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों, केंद्रीय उत्पाद शुल्क दिवस, कर्मचारी राज्य बीमा योजना— सामाजिक सुरक्षा का 42 वां वर्ष, विश्व जनसंख्या दिवस और राष्ट्रीय बाल-जीवन और सुरक्षित मातृत्व विषय पर विशेष परिशिष्ट भी निकाले गए।

11.3.2 इस अवधि के दौरान 3,097 पत्र-पत्रिकाओं के साथ करारों का नवीकरण किया गया और 273 पत्र-पत्रिकाओं को अखिल - भारतीय स्तर पर विज्ञापनों के पैनल में रखा गया।

श्रव्य-दृश्य प्रचार

11.4.1 निदेशालय ने अप्रैल 1992 से फरवरी 1993 के दौरान करीब 2,135 रेडियो स्पॉट, जिंगल्स और प्रायोजित कार्यक्रम तथा 225 वीडियो स्पॉट्स, अति लघु फिल्में (क्विकीज) और वृत्तचित्र तैयार किए। कुल 58,900 रेडियो प्रसारण (ब्रॉडकास्ट) और 825 टेलीविजन प्रसारण (टेलिकास्ट) पंजीकृत किए गए।

11.4.2 श्रव्य-दृश्य एकांश ने नई आर्थिक नीति, आयकर, गैर परंपरागत ऊर्जा-स्रोतों, पर्यावरण संरक्षण, महिला और बाल विकास, उपभोक्ता संरक्षण, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण और भारत छोड़ो आंदोलन का व्यापक प्रचार किया। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के बारे में विभिन्न कड़ियों वाली अति लघु फिल्मों (सीरियलाइज्ड क्विकीज) का 'संवरती राहें' और 'हमारा सपना' का दूरदर्शन से कई बार प्रसारण हुआ।

11.4.3 रेडियो पर प्रायोजित कार्यक्रमों— महिला और बाल विकास पर 'नया सवेरा' और 'आओ हाथ बढ़ाएं', उपभोक्ताओं के अधिकारों पर 'अपने अधिकार' तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण पर 'हसीन लम्हे' का रेडियो की व्यावसायिक प्रसारण सेवा के 29 चैनलों से प्रसारण किया गया। 'इको मार्क' के बारे में बहुमाध्यम अभियान तैयार किया गया और इस श्रृंखला में दो रेडियो स्पॉट और एक वीडियो स्पॉट निर्मित किए गए।

11.4.4 प्रायोजित कार्यक्रमों 'नया सवेरा' और 'आओ हाथ बढ़ाएं' के श्रोताओं पर प्रभाव के आकलन के लिए एक फीडबैक सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण के परिणामों के अनुसार सामाजिक कल्याण की बातों के प्रचार-प्रसार में ये दोनों कार्यक्रम काफी प्रभावी रहे हैं।

बाह्य प्रचार

11.5.1 निदेशालय ने अप्रैल 1992 से जनवरी 1993 के दौरान 775 होर्डिंगों, 3,875 बस पैनलों, 4,450 किओस्कों, 29,300 सिनेमा स्लाइडों, 720 वॉल-पेंटिंग्स, कपड़े पर बने 1,125 बैनरों तथा अन्य तरीकों से विभिन्न विषयों के बारे में प्रचार किया। इन विषयों में नशीले पदार्थों और शराब के नुकसान, नई आर्थिक नीति, लड़कियों की शिक्षा, राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव, भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह - 1993, हस्तशिल्प, साक्षरता, डॉक्टर भीमराव आंबेडकर शताब्दी समारोह, उपभोक्ता संरक्षण, भारत छोड़ो आंदोलन, एगमार्क, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, ऊर्जा संरक्षण, सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क, सेना और नौसेना में भर्ती तथा आयकर शामिल थे। हरिद्वार में अर्द्धकुंभ और उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ मेले के दौरान भी ऐसी सामग्री प्रयुक्त की गई। नई दिल्ली में हुए दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन 'सार्क' के सदस्य देशों, जापान, तुर्की, स्वीडन और हालैंड के फिल्म समारोहों में भी बाह्य प्रचार सामग्री का उपयोग हुआ।

प्रदर्शनी

11.6.1 विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने सात प्रदर्शनी-वाहनों सहित अपनी 35 क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाइयों के जरिए सरकार के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रमों का प्रचार किया। इस काम में फिल्मों और श्रव्य कार्यक्रमों की भी मदद ली गई। इस अवधि में विभिन्न प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। इनमें आज का भारत (इंडिया टुडे), गर्ल चाइल्ड (बालिका शिशु), भारत छोड़ो आंदोलन, (क्विट इंडिया मूवमेंट), बेहतर भविष्य की ओर (टुवर्ड्स ए बैटर फ्यूचर), 'गंगा', विश्व जनसंख्या (वर्ल्ड पापुलेशन), एक गांव की ओर, डॉक्टर बी० आर० आंबेडकर और भारत प्रगति पथ पर (इंडिया मार्चेज अहेड) शामिल हैं। देश भर में ये प्रदर्शनियां दिखाई गईं। निदेशालय ने 2200 प्रदर्शनी-दिवसों में 380 प्रदर्शनियां आयोजित कीं और 30 से ज्यादा प्रदर्शनियों में भाग लिया। इनमें फिल्म समारोह निदेशालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनियां भी शामिल हैं।

11.6.2 'गंगा', 'एक राष्ट्र एक प्राण' और 'बेहतर भविष्य की ओर' प्रदर्शनियां हरिद्वार में अर्द्धकुंभ और उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ मेले के अवसर पर लगाई गईं। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर नई दिल्ली में संसद सौध में 'भारत और विश्व' प्रदर्शनी आयोजित की गई।

मास मेलिंग शाखा

11.7 निदेशालय ने नई दिल्ली में अपने मुख्यालय और मद्रास और कलकत्ता के क्षेत्रीय वितरण केन्द्रों के जरिए जनवरी 1993 तक मुद्रित प्रचार-सामग्री की 2.25 करोड़ प्रतियां वितरित कीं। इस शाखा की डाक-सूची में 15 लाख से ज्यादा पते और 530 से ज्यादा वर्ग थे। इनमें प्राइमरी/मिडिल स्कूल, डाकघर, ग्रामीण बैंक, सामाजिक संगठन, पंचायतें, शैक्षिक और सांस्कृतिक संगठन आदि शामिल हैं।

प्रमुख अभियान

नये आर्थिक कदम

11.8.1.1 विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने अपने विभिन्न माध्यमों से नये आर्थिक कदमों का प्रचार किया। इन उपायों के विविध पक्षों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए निदेशालय ने 45 प्रकाशन छापे, इनमें नयी औद्योगिक नीति, नयी व्यापार नीति, नयी आयात-निर्यात नीति, आठवीं पंचवर्षीय योजना, नयी खाद्य सुरक्षा प्रणाली, केंद्रीय बजट, नेहरू रोजगार योजना, नई उर्वरक मूल्य-नीति, गरीबों के लिए कार्यक्रम, चुनौतियों के वर्ष—परिवर्तन के वर्ष, किसानों का कल्याण — देश का कल्याण और छोटे व्यापारियों के लिए आयकर नियमों के सरलीकृत रूप पर पुस्तिकाएं और फोल्डर शामिल हैं। निदेशालय ने देश के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन जारी किए। नये आर्थिक कदमों और अर्थव्यवस्था पर इसके अनुकूल प्रभावों के बारे में तिरुपति में प्रदर्शनी आयोजित की गई। उड़ीसा में पुरी में रथयात्रा के अवसर पर एक बड़ी प्रदर्शनी आयोजित की गई। श्रव्य-दृश्य सेल ने स्व-रोजगार, यूनी-गेज सिस्टम, नयी कर नीति, मूल्य-सह निर्यात, महिला उद्यमियों और गुणवत्ता तथा निर्यात पर अनेक स्पॉट और क्विकीज तैयार कीं। बाहय प्रचार डिवीजन ने दिल्ली और हैदराबाद में 250 बस-पैनल तथा मद्रास, पांडिचेरी और फरीदाबाद में 250 वॉल पेंटिंग्स, 80 सिनेमा स्लाइडें तथा अनेक होर्डिंग्स प्रदर्शित किए।

11.8.1.2 बिजली, इस्पात, इलैक्ट्रॉनिक्स, संचार, सिंचाई और दूरसंचार जैसे अर्थव्यवस्था के विविध पक्षों की जानकारी देने वाला पाक्षिक प्रकाशन 'इंडिया अपडेट' निदेशालय द्वारा प्रकाशित किया जाता है। इसके अब तक सोलह अंक निकल चुके हैं। नयी आर्थिक नीति की जानकारी देने वाली 15 मिनट की फिल्म 'इंडिया अपडेट' भी तैयार की गई है। निदेशालय ने नयी आर्थिक नीति और आठवीं पंचवर्षीय योजना पर व्यापक बहुमाध्यम अभियान के अंतर्गत मैसूर में 2 से 9 मई, 1992 तक 'भारत—आज और कल' नामक प्रदर्शनी आयोजित की। केंद्र और राज्य सरकारों की 12 प्रचार इकाइयों को प्रदर्शनी किट दिए गए, जिन्होंने 100 से ज्यादा गांवों में कार्यक्रम आयोजित किए। मैसूर जिले में 120 चुने हुए गांवों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें ग्रामीण युवाओं के लिए क्विज और भाषण प्रतियोगिताएं, रंगोली प्रतियोगिताएं, स्वस्थ शिशु प्रदर्शनी और विशेष संगोष्ठियां शामिल थीं।

भारत छोड़ो आंदोलन के स्वर्ण जयंती समारोह

11.8.2 भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती देश भर में मनाई गई और इसका व्यापक प्रचार किया गया। इसके अंतर्गत दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, बलिया (उ. प्र.), नौगांव (गुवाहाटी के पास), भोपाल, लखनऊ, हैदराबाद और मद्रास में कुल 12 प्रदर्शनियां लगाई गईं। दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, बंगलौर और असम के विभिन्न भागों में 41 होर्डिंग लगाए गए। दिल्ली में 150 किओस्कों, बंबई, हैदराबाद और सिकंदराबाद में 400 बस पैनलों और 225 सिनेमा स्लाइडों के जरिए भारत छोड़ो आंदोलन के विविध संदेशों का प्रचार किया गया। निदेशालय ने दो-दो मिनट की तीन वीडियो क्विकीज तैयार कीं तथा हिन्दी, अंग्रेजी और 11 क्षेत्रीय भाषाओं में 'भारत छोड़ो आंदोलन' शीर्षक वाली नौ लाख पुस्तिकाएं छापीं। देश भर की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के लिए दो विज्ञापन जारी किए गए।

ग्रामीण विकास

11.8.3 विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने ग्रामीण विकास के विविध पक्षों पर एक बहु-माध्यम प्रचार अभियान चलाया। 'एगमार्क' पोषाहार सप्ताह, उर्वरक मूल्य नीति और किसान, विश्व खाद्य दिवस पर अखिल भारतीय आधार पर हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन दिए गए। विभिन्न विषयों पर पुस्तिकाएं, फोल्डर और पोस्टर निकाले गए। इनमें निम्न प्रकाशन शामिल हैं— गरीबों के लिए एक नई खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण निर्धनों का जीवन स्तर सुधारने के लिए योजनाएं, नई उर्वरक मूल्य नीति, ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की आपूर्ति, हरी पत्तेदार सब्जियां खाइए, किसानों का कल्याण— देश का कल्याण। शिशुओं का पोषण और अंतर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा निवारण दशक पर पोस्टर भी निकाले गए। राष्ट्रीय ग्रामीण विकास कोष पर बीस मिनट की वीडियो फिल्म बनाई गई ताकि लोगों को ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के लिए इस कोष में दान देने को प्रेरित किया जा सके। एगमार्क के बारे में भी वीडियो स्पॉट्स बनाए गए। ग्रामीण विकास संबंधी प्रचार विभिन्न प्रदर्शनियों के माध्यम से भी किया गया। देश भर में बाहय प्रचार-सामग्री प्रदर्शित की गई। इसमें 445 बस पैनलों, 800 किओस्कों, अनेक होर्डिंगों और 9,330 से ज्यादा सिनेमा स्लाइडों के जरिए प्रचार शामिल है।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

11.8.4 स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के प्रचार अभियान में तेजी लाई गई। परिवार नियोजन, रोग प्रतिरोधक टीकों, विवाह की सही उम्र, छोटा परिवार, पुरुष नसबंदी, बढ़ती जनसंख्या और अतिसार के बारे में पुस्तिकाएं, फोल्डर और पोस्टर छापे गए। विश्व एड्स दिवस और टीकाकरण दिवस पर पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन दिए गए। बाहय प्रचार के

अंतर्गत अनेक सिनेमा स्लाइडों, होर्डिंग और बस पैनलों के जरिए प्रचार किया गया। ऑडियो तथा वीडियो स्पॉट्स और क्विकीज तैयार की गईं तथा बच्चों के जन्म में अंतर लाने, जल्दी विवाह, विश्व खाद्य दिवस, माला-डी तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण जैसे विषयों पर रेडियो और टेलीविजन पर प्रसारण किए गए। वाहन (वैन) के जरिए प्रचार के लिए चार कार्यक्रम विश्व जनसंख्या दिवस पर 10 मिनट का कार्यक्रम बनाया गया। इंडोनेशिया में बाली में अगस्त 1992 में एशिया-प्रशांत देशों के आयोग के जनसंख्या संबंधी सेमिनार-एस्केप-पॉपुलेशन के अवसर पर 'इंडिया—शेपिंग दि फ्यूचर ऑफ ग्रोइंग मिलियंस' प्रदर्शनी लगाई गई। निदेशालय ने भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के दौरान नई दिल्ली के प्रगति मैदान में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से 'छोटा परिवार सुख का आधार' प्रदर्शनी आयोजित की। इस प्रदर्शनी की डिजाइन की उत्कृष्टता और विषयों की समन्वित प्रस्तुति के लिए विशेष सराहना की गई। देश भर में 24 अन्य प्रदर्शनियां आयोजित की गईं।

अर्द्धकुंभ मेला

11.8.5.1 निदेशालय ने 1992 में हरिद्वार में अर्द्धकुंभ मेले के दौरान बहु-माध्यम अभियान चलाया। बाह्य प्रचार के अंतर्गत 42 होर्डिंगों, 1300 किओस्कों, 100 बस पैनलों और 100 वॉल पैनलों के जरिए प्रचार किया गया। राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव, गंगा की सफाई, साक्षरता, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, नई आर्थिक नीति, ऊर्जा बचाएं, आई० एस० आई० निशान, नशीले पदार्थों के नुकसान और मद्य निषेध के बारे में प्रचार किया गया। मेले के दौरान विभिन्न विषयों पर करीब दो लाख पुस्तिकाएं, फोल्डर और पेंफलेट बांटे गए। इस अवसर के लिए विशेष रूप से छापे गए 'गंगा सेवा-भारत सेवा' प्रकाशन भी बांटे गए। गंगा के प्रदूषण के बारे में 'गंगा सेवा-भारत सेवा' शीर्षक से पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन भी दिए गए।

11.8.5.2 निदेशालय के अनुरोध पर भारतीय जन संचार संस्थान ने हरिद्वार में अर्द्धकुंभ मेले में आए लोगों पर प्रचार अभियान के प्रभाव के आकलन के बारे में अध्ययन किया। अध्ययन के अनुसार, प्रचार अभियान द्वारा दिए गए संदेश बड़े प्रभावशाली और उपयोगी रहे।

भारत का 24 वां अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह - 1993

11.8.6 निदेशालय ने 10 से 20 जनवरी के दौरान हुए भारत के 24 वें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के लिए 20 होर्डिंग, 200 बस पैनल, 600 किओस्क और 150 सिनेमा स्लाइड प्रदर्शित किए। हिन्दी और अंग्रेजी में (द्विभाषी) दस हजार पोस्टर छापे गए। इनमें 5,000 भारतीय पैनोरमा - 93 और 5,000 आई० एफ० एफ० आई०-93 के बारे में थे। भारतीय सिनेमा और आई० एफ० एफ० आई०-93 के बारे में दो ब्रोशर भी छापे गए। समारोह के दौरान सीरी फोर्ट सभागार में एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। विभिन्न थियेटरों में दिखाई जाने वाली फिल्मों का विवरण देने के लिए प्रेस विज्ञापन भी दिए गए।

अध्याय 12

फोटो प्रभाग

12.1.1 फोटो प्रभाग फोटोग्राफी के क्षेत्र में देश की अपने तरह की सबसे बड़ी उत्पादन इकाई है। यह प्रभाग भारत सरकार की ओर से देश तथा विदेश में प्रचार के लिए श्वेत-श्याम और रंगीन दोनों प्रकार के चित्र तैयार करता है।

12.1.2 फोटो प्रभाग का मुख्य कार्य विभिन्न क्षेत्रों में देश में हुए विकास को छायाचित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करना तथा इस दिशा में प्रचार-प्रसार की गतिविधियों को चित्रों के माध्यम से और सशक्त बनाना है। यह प्रभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की प्रचार इकाइयों, राष्ट्रपति सचिवालय, उपराष्ट्रपति सचिवालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, लोकसभा/राज्य सभा सचिवालय, केंद्र तथा राज्य सरकारों के अन्य मंत्रालयों/विभागों और विदेश स्थित भारतीय मिशनों को फोटोग्राफ उपलब्ध कराता है। प्रभाग द्वारा आम लोगों और गैर प्रचार संगठनों को भी भुगतान करने पर रंगीन और श्वेत-श्याम फोटोग्राफ तथा रंगीन स्लाइड्स/पारदर्शी उपलब्ध करायी जाती हैं। अप्रैल से दिसम्बर, 1992 के दौरान प्रभाग ने अपनी 'प्राइसिंग स्कीम' (मूल्य योजना) के तहत 7.22 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया।

12.1.3 दिल्ली में प्रभाग के मुख्यालय में श्वेत-श्याम और रंगीन, दोनों ही प्रकार के फोटोग्राफ तैयार करने के लिए सभी सुविधाओं से सम्पन्न प्रयोगशाला है। फोटो प्रभाग के बंबई, कलकत्ता और मद्रास में तीन क्षेत्रीय कार्यालय और गुवाहाटी में एक फोटो-एकांश है।

प्रमुख कवरेज

12.2.1 फोटो प्रभाग ने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की देश-विदेश की यात्राओं की व्यापक कवरेज की। इसके अलावा प्रभाग ने दृश्य प्रचार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी फोटो उपलब्ध कराये। ये फोटो पत्र सूचना कार्यालय के माध्यम से देश भर के समाचारपत्रों को उपलब्ध कराये गये। विदेशों में भारतीय दूतावासों को ये फोटो विदेश मंत्रालय के विदेश प्रचार प्रभाग द्वारा उपलब्ध कराए जाते हैं।

12.2.2 फोटो प्रभाग ने अति विशिष्ट विदेशी मेहमानों और भारत यात्रा पर आए राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों की फोटो कवरेज भी की। इस तरह के फोटो सभी सम्बद्ध लोगों को देने के साथ साथ प्रभाग ने विदेशी मेहमानों की भारत यात्रा के अंत में उन्हें भेंट करने के लिए फोटो एलबम भी तैयार किये। इसके अलावा फोटो प्रभाग ने समय समय पर मंत्रिपरिषद में शामिल किये गये मंत्रियों तथा महत्वपूर्ण व्यक्तियों के छायाचित्र बनाकर जारी किये।

12.2.3 फोटो प्रभाग शौकिया फोटोग्राफरों के लिए राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता तथा प्रदर्शनी का भी आयोजन करता है। सादे और रंगीन, दोनों तरह के छायाचित्रों की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं जिनमें फोटोग्राफरों को अधिकतम चार फोटो शामिल की जाती हैं। प्रतियोगिता का विषय हर साल बदलता रहता है। 1992 में आयोजित चौथी राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता का विषय "सांस्कृतिक विरासत" था। इसमें देश भर से 826 शौकिया फोटोग्राफरों ने 713 सादे और 1,606 रंगीन फोटो भेजे। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल ने पुरस्कार जीतने वाले फोटो के चयन के साथ-साथ 106 छायाचित्रों को प्रदर्शनी में शामिल करने के लिए चुना।

12.2.4 प्रतियोगिता में पुरस्कृत तथा निर्णायक मंडल द्वारा चुने गये छायाचित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन 23 मार्च 1992 को तत्कालीन सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा ने किया। इसी समारोह में विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये गये। सादे और रंगीन दोनों वर्गों के चित्रों के लिए तीन-तीन पुरस्कार रखे गये थे। पहला पुरस्कार 10,000 रुपये, दूसरा 7,000 रुपये और तीसरा 5,000 रुपये निर्धारित किया गया था

अप्रैल से दिसम्बर 1992 तक फोटो प्रभाग ने निम्नलिखित कार्य किये।

1.	समाचार और फीचर फोटोग्राफ (सादे और रंगीन दोनों)	:	2,348
2.	निगेटिव (सादे और रंगीन दोनों)	:	66,631
3.	रंगीन स्लाइड और पारदर्शियां (ट्रांसपेरेंसी)	:	225
4.	तैयार किए गए श्वेत-श्याम चित्र	:	3,13,954
5.	रंगीन चित्र	:	24,068
6.	कुल श्वेत श्याम और रंगीन चित्र	:	3,38,022
7.	फोटो एल्बम/वालेट्स	:	80

अध्याय 13

गीत और नाटक प्रभाग

13.1.1 गीत और नाटक प्रभाग सामाजिक-आर्थिक महत्व के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में लोगों में जागरुकता पैदा करने के लिए जीवंत माध्यमों, विशेष रुप से लोक कलाओं और परम्परागत माध्यमों का इस्तेमाल करता है। प्रभाग नाटक, नृत्य-नाटिका, कठपुतली और लोकगीत जैसी परंपरागत मंच-कलाओं के साथ-साथ ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम का भी व्यापक उपयोग करता है। प्रभाग सीमावर्ती क्षेत्रों में सशस्त्र सेना की मनोरंजन की आवश्यकता को पूरा करता है। प्रभाग अपनी सभी गतिविधियों में केन्द्र और राज्य सरकारों के साथ पूरे तालमेल के साथ काम करता है

13.1.2 महत्वपूर्ण समारोहों के दौरान जब बड़ी संख्या में लोग एकत्र होते हैं, जीवन्त माध्यमों का बड़े कारगर ढंग से इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे समारोहों में राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति, साम्प्रदायिक सद्‌भाव, नई आर्थिक नीति, पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली, आठवीं पंचवर्षीय योजना, छुआछूत की बुराई मिटाने, नशाबंदी, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण आदि के बारे में संदेशों का विशेष प्रचार किया गया।

गतिविधियां

13.2.1 गीत और नाटक प्रभाग निदेशक के अधीन कार्य करता है। प्रभाग का ढांचा तीन स्तरीय है: (1) दिल्ली में मुख्यालय, (2) भोपाल, कलकत्ता, चंडीगढ़, दिल्ली, गुवाहाटी, लखनऊ, मद्रास, और पुणे में आठ क्षेत्रीय केन्द्र ; तथा (3) भुवनेश्वर, हैदराबाद, पटना, इम्फाल, जोधपुर, दरभंगा, नैनीताल, शिमला और श्रीनगर स्थित नौ उप-केन्द्र। इसके अलावा नई दिल्ली और बंगलूर में प्रभाग के ध्वनि और प्रकाश केन्द्र तथा रांची में एक जनजातीय केन्द्र भी हैं। ये केन्द्र और उप-केन्द्र प्रचार के लिए कार्यक्रम तैयार करते हैं।

13.2.2 गीत और नाटक प्रभाग ने अपनी 43 विभागीय मंडलियों, दो ध्वनि और प्रकाश इकाइयों, एक जनजातीय इकाई तथा 674 व्यावसायिक मंडलियों के माध्यम से अपनी गतिविधियां जारी रखीं। प्रभाग ने परम्परागत लोक माध्यमों का पूरा इस्तेमाल किया और 1992 में 37,159 कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इनमें से अप्रैल से दिसम्बर 1992 तक विभिन्न प्रकार के 28,747 कार्यक्रम आयोजित किए गए।

13.2.3 प्रभाग अपने कार्यक्रमों को देश के दूर-दराज के तथा पिछड़े हुए इलाकों तक पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास करता है। इन कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने में केन्द्र और राज्य सरकार की एजेंसियों की पूरी सहायता ली जाती है। सरकारी कार्यक्रमों के प्रचार अभियान चलाने में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार सभी संसाधन जुटाने के प्रयास किए गए।

विभागीय नाटक मंडलियां

13.3 प्रभाग की छह विभागीय नाटक मंडलियां हैं। ये पुणे, हैदराबाद, श्रीनगर, दिल्ली, पटना और भुवनेश्वर में स्थित हैं। वर्ष के दौरान इन मंडलियों ने हिन्दी, कश्मीरी, उर्दू, मराठी, उड़िया और तेलुगु में नाटकों और प्रहसनों के रूप में 539 कार्यक्रम प्रस्तुत किए। हैदराबाद स्थित विभागीय नाटक मंडली ने मद्रास के क्षेत्रीय केन्द्र के साथ मिलकर तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश में भावनात्मक एकता बढ़ाने के लिए प्रचार अभियान चलाए। पुणे की विभागीय नाटक मंडली ने बाबा साहब डा. भीमराव आम्बेडकर की जन्म शताब्दी के सिलसिले में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में विशेष रूप से हिस्सा लिया। प्रभाग की पटना और श्रीनगर की नाटक मंडलियों ने झांसी और ग्वालियर में नए ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम - "और कदम बढ़ते रहे" की प्रस्तुति में विशेष योगदान दिया। दिल्ली की विभागीय नाटक मंडली ने चालू वर्ष में 87 शो प्रस्तुत किए।

सीमा प्रचार मंडलियों द्वारा कार्यक्रम

13.4 अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं से लगे क्षेत्रों में प्रभावकारी और गहन प्रचार के लिए विभागीय मंडलियों ने सीमावर्ती गांवों में स्थानीय

बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों का मनोबल बढ़ाया और राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता पर बल देते हुए लोगों को देश की रक्षा सम्बंधी तैयारियों से परिचित कराया। इन मंडलियों ने केन्द्र और राज्य सरकारों की एजेंसियों तथा स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से गहन प्रचार अभियान चलाए। देश के विभिन्न हिस्सों, विशेषकर संवेदनशील क्षेत्रों के जन-जन में राष्ट्रीय एकता की भावना और साम्प्रदायिक सद्भाव को सुदृढ़ करने के लिए प्रभाग ने वर्ष भर भावनात्मक एकता प्रचार अभियान चलाए। इन अभियानों के दौरान विभिन्न सीमा प्रचार मंडलियों को सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया गया। इन मंडलियों के कार्यक्रमों की श्रोताओं और दर्शकों ने बड़ी प्रशंसा की।

सशस्त्र सैनिक मनोरंजन शाखा के कार्यक्रम

13.5 सीमावर्ती क्षेत्रों में जवानों के मनोरंजन के लिए 1967 में सशस्त्र सैनिक मनोरंजन शाखा स्थापित की गई। इसकी कुल नौ मंडलियां हैं, जिनमें से एक मद्रास में और बाकी दिल्ली में हैं। वर्ष के दौरान इन मंडलियों ने कठिन और बीहड़ सीमावर्ती क्षेत्रों का दौरा किया और जवानों के मनोरंजन के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसके अलावा इस शाखा के कलाकारों ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के श्रोताओं के लिए विशेष कार्यक्रम तैयार और प्रस्तुत किए। कार्यक्रम इस तरह से तैयार किए गए ताकि विभिन्न भाषायी समूहों के लोग उनमें समान रुचि ले सकें। अप्रैल से दिसम्बर, 1992 तक इन मंडलियों ने 436 कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम

13.6 दिल्ली और बंगलूर में प्रभाग की दो ध्वनि और प्रकाश इकाइयां हैं। तिरुपति में राष्ट्रीय एकता पर ध्वनि और प्रकाश का एक विशेष कार्यक्रम 'और कदम बढ़ते रहे' प्रस्तुत किया गया। 'फूल वालों की सैर' के अवसर पर नई दिल्ली में ध्वनि और प्रकाश का एक नया कार्यक्रम 'वह रहगुजर वह राहगीर' तैयार कर प्रस्तुत किया गया। प्रभाग ने जालंधर और चंडीगढ़ में 'धरती दी रूह पंजाब' नाम का ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

व्यावसायिक और विशेष सेवाएं

13.7 स्थानीय प्रतिभाओं विशेषकर लोक और परम्परागत कलाकारों को सामने लाने के लिए प्रभाग की स्थापना के समय ही यह योजना शुरु की गई थी। प्रभाग विकास की दिशा में देश के बहुआयामी प्रयासों और राष्ट्रीय एकता के संदेश को कलाओं के माध्यम से व्यक्त करने में व्यावसायिक मंडलियों का उपयोग करता है। शुरु में प्रभाग ने 5 व्यावसायिक मंडलियों का चयन किया था जबकि इस समय विभाग के पास 674 ऐसी मंडलियां हैं जो राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के लिए अथवा उसकी ओर से भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें राज्य सरकारों की फील्ड एजेंसियों, अर्द्ध सरकारी एजेंसियों और स्वयंसेवी संगठनों की सहायता ली जाती है। वर्ष के दौरान प्रभाग ने इस योजना के तहत देश के विभिन्न भागों में 33,811 कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

जनजातीय केन्द्र, रांची

13.8 प्रभाग ने जनजातीय परियोजना कार्यक्रम के तहत मध्य प्रदेश, बिहार और उड़ीसा के जनजातीय कलाकारों की प्रतिभा के उपयोग के लिए रांची में एक केन्द्र की स्थापना की है। इस योजना का मूल उद्देश्य इन समुदायों को प्रोत्साहन देना है ताकि वे अपने कार्यक्रम अपनी बोली, अपनी शैली और अपने परिवेश में अपने ही तरीके से तैयार और प्रस्तुत कर सकें। वे इन कार्यक्रमों के माध्यम से अपने उन भाइयों को शिक्षित बनाने और उन तक सूचनाएं पहुंचाने का कार्य भी करते हैं जो अभी तक किसी संचार माध्यम के सम्पर्क में नहीं आए हैं। इस योजना की विशेषता यह है कि जनजातीय मंडलियों द्वारा कार्यक्रम उनकी अपनी बोली में तैयार कराए जाते हैं, ताकि उनकी सदियों से चली आ रही परम्परागत शैली का किसी तरह का नुकसान न हो। इस योजना के तहत अप्रैल से दिसम्बर 1992 तक प्रभाग द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में ऐसे 804 कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

परिवार कल्याण

13.9.1 प्रभाग द्वारा विभिन्न एजेंसियों के सहयोग से परिवार कल्याण के बारे में विशेष प्रचार अभियान चलाए गए। प्रभाग ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण की संशोधित नीति के अनुरूप तैयार किए गए अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 'विश्व जनसंख्या दिवस' के अवसर पर प्रभाग ने 6 से 10 जुलाई 1992 तक विभागीय मंडलियों की प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

13.9.2 प्रभाग ने दिल्ली की झुग्गीझोंपड़ी विशेष प्रचार अभियान चलाए। वर्ष के दौरान प्रभाग ने उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, केरल और पश्चिम बंगाल के अधिक आबादी वाले जिलों में भी कार्यक्रम आयोजित किए। "अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या दिवस" के अवसर पर 6 जुलाई से 10 जुलाई तक देश भर में एक सप्ताह का राष्ट्रीय अभियान चलाया गया। प्रभाग ने प्रगति मैदान में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के अवसर पर भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के घनिष्ट सहयोग से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए।

मेले और उत्सव

13.10 गीत और नाटक प्रभाग ने ऐसे कई मेलों और उत्सवों के अवसर पर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जहां बड़ी संख्या में लोग

इकट्ठे होते हैं। उड़ीसा में प्रभाग ने बरीपादा, जैपोर, कोरापुट, क्योंझर, केन्द्रपाड़ा और अटगढ़ में 12 दिन का व्यापक बहु-माध्यम प्रचार अभियान चलाया। उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ मेले के अवसर पर भी प्रभाग ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसके अलावा जिन अन्य महत्वपूर्ण मेलों/समारोहों में प्रभाग ने हिस्सा लिया, उनमें देश के विभिन्न भागों में आयोजित दुर्गापूजा, असम में बिहू, अजमेर में उर्स, उत्तर प्रदेश में नौचंदी मेला और दिल्ली में 'फूलवालों की सैर' शामिल है।

बीस-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम

13.11 गीत और नाटक प्रभाग द्वारा प्रस्तुत लगभग सभी कार्यक्रमों में 20 -सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के लगभग सभी पहलुओं, जैसे— भूमि सुधार, बंधुआ मजदूरों की मुक्ति और अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के विकास आदि के प्रचार को स्थान दिया गया। नई दिल्ली में "परिवार कल्याण" पर सूचनात्मक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए। इसके अलावा प्रभाग ने देश के ग्रामीण इलाकों में साक्षरता की प्रगति के बारे में कई कार्यक्रम आयोजित किए।

साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता

13.12 प्रभाग ने राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने का क्रम जारी रखा। पंजाब, जम्मू-कश्मीर और असम में ग्रामीण युवाओं को ध्यान में रखकर कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रभाग ने देश के दूरदराज के उन सीमावर्ती इलाकों में कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जहां इलैक्ट्रानिक और मुद्रित माध्यम की पहुंच/प्रभाव सीमित है। पंजाब के 12 जिलों में भावात्मक और राष्ट्रीय एकता पर अनेक बार विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। गुवाहाटी की क्षेत्रीय इकाई ने सभी पूर्वोत्तर राज्यों में कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 19.11.92 से 25.11.92 तक मनाए गए कौमी एकता सप्ताह के दौरान भी देश भर में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

नई आर्थिक नीति और पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली

13.13 सूचना और प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय स्तर के संचार कर्मियों के समक्ष प्रधानमंत्री के भाषण में कही गई बातों के अनुपालन में गीत और नाटक प्रभाग ने पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा नई आर्थिक नीति के प्रचार के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए। प्रभाग के क्षेत्रीय केन्द्रों ने अपने अपने क्षेत्र में सूचनात्मक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। इन विषयों पर सौ से अधिक नए कार्यक्रम तैयार किए। इन्हें मार्च से दिसम्बर 1992 तक की अवधि में 29,000 कार्यक्रमों के रूप में प्रस्तुत किया गया।

अन्य प्रमुख आकर्षण

13.14 वर्ष के दौरान गीत और नाटक प्रभाग की अन्य प्रमुख गतिविधियों में 20 अगस्त 1992 को सद्भावना दिवस के अवसर पर प्रस्तुत विशेष कार्यक्रम शामिल हैं। इसके अलावा कुल्लू के दशहरे पर भी विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए और लक्षद्वीप में साक्षरता अभियान के सिलसिले में प्रचार अभियान चलाया गया।

गवेषणा और संदर्भ प्रभाग

14.1.1 गवेषणा और संदर्भ प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, उसके माध्यम एककों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों को संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराता है। प्रभाग मंत्रालय के माध्यम एककों के लिए सूचनाएं एकत्र तथा उपलब्ध कराने वाले सूचना बैंक की तरह कार्य करता है। वह इन एककों को उनके कार्यक्रम तथा प्रचार अभियान बनाने में मदद करता है। प्रभाग जन संचार माध्यमों की प्रवृत्तियों का भी अध्ययन करता है तथा जन संचार और सामयिक विषयों पर संदर्भ तथा प्रलेखन सेवा भी उपलब्ध करता है। गवेषणा और संदर्भ प्रभाग – सूचना और प्रसारण मंत्रालय, इसके माध्यम एककों तथा जन संचार से जुड़े अन्य संगठनों को पृष्ठभूमि लेख, अनुसंधान और संदर्भ सामग्री तथा अन्य सेवाएं उपलब्ध कराता है।

14.1.2 गवेषणा और संदर्भ प्रभाग की अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाओं में दो वार्षिक संदर्भ ग्रंथों के संकलन का कार्य भी शामिल है। 'भारत' – वार्षिक संदर्भ ग्रंथ देश के बारे में एक प्रामाणिक संदर्भ ग्रंथ है। 'मास मीडिया इन इंडिया' नाम का दूसरा संदर्भ ग्रंथ जन संचार से संबंधित है।

14.1.3 28 जनवरी, 1992 तक प्रभाग 11 संदर्भ लेखों, संदर्भ पत्रों और जीवनवृत्तों सहित संदर्भ सामग्री जुटाने के 122 कार्य निपटा चुका था। ये संदर्भ लेख पर्यटन, जल-संसाधन-विकास, सार्वजनिक क्षेत्र, 1992-93 बजट की विशेषताएं, पर्यावरण और आयात-निर्यात नीति जैसे विविध विषयों पर आधारित थे। प्रभाग ने 'भारत' वार्षिक संदर्भ ग्रंथ और 'मास मीडिया इन इंडिया' के वर्ष 1992 के संस्करणों के संकलन का कार्य पूरा किया। गवेषणा और संदर्भ प्रभाग 'डायरी ऑफ नेशनल इवेन्ट्स' नाम का एक पाक्षिक भी निकालता है।

संदर्भ पुस्तकालय

14.2 गवेषणा संदर्भ प्रभाग का अपना एक बड़ा संदर्भ पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकों के अलावा कुछ चुनी हुई पत्र-पत्रिकाओं के सजिल्द खंड और अनेक मंत्रालयों, समितियों तथा आयोगों की रिपोर्ट उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में पत्रकारिता, जन संपर्क, विज्ञापन तथा दृश्य-श्रव्य माध्यम पर पुस्तकों का विशाल संग्रह बनाया गया है। इसमें दुनिया भर के प्रकाशकों के वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, सामयिक लेख और प्रमुख विश्वकोश भी उपलब्ध हैं। भारत और विदेशों के 750 से अधिक मान्यता प्राप्त संवाददाता तथा बड़ी संख्या में सरकारी अधिकारी इस पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। इस पुस्तकालय में देश-विदेश की करीब 110 पत्र - पत्रिकाएं भी आती हैं।

राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र

14.3.1 मंत्रालय द्वारा गठित एक विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों के आधार पर 1976 में गवेषणा और संदर्भ प्रभाग के एक अंग के रूप में राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र की स्थापना की गयी। इसका उद्देश्य जनसंचार के क्षेत्र में हो रही घटनाओं और प्रवृत्तियों के बारे में सूचनाओं का संकलन, व्याख्या और प्रसार करना था।

14.3.2 राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र ने निम्नलिखित आठ सेवाएं जारी रखीं। ये हैं – 'करंट अवेयरनेस सर्विस' 'रिफरेंस अवेयरनेस सर्विस', 'बिब्लियोग्राफी सर्विस', 'हू इज हू इन मास मीडिया', 'ऑनर्स कन्फर्ड ऑन मास कम्यूनिकेटर्स', 'मीडिया मैमोरी', 'वर्ल्ड मीडिया सर्विस' और 'बुलेटिन ऑन फिल्म'। वर्ष के दौरान केन्द्र ने 40 पर्चे जारी किये

कम्प्यूटरीकरण

14.4 गवेषणा और संदर्भ प्रभाग में कंप्यूटर की स्थापना की जा चुकी है और जल्दी ही इसका इस्तेमाल होने लगेगा। आशा है कि अगले साल प्रभाग की सेवाओं का लाभ उठाने वालों को पूरी तरह कम्प्यूटर पर आधारित प्रलेखन, सूचना-प्राप्ति तथा पुस्तकालय सेवाएं उपलब्ध होने लगेंगी। कम्प्यूटर के उपयोग से न केवल प्रभाग की अनुसंधान और संदर्भ सम्बन्धी गतिविधियों में तेजी तथा कुशलता आयेगी बल्कि यह इन सेवाओं का फायदा उठाने वालों के लिए भी काफी उपयोगी सिद्ध होगी

अध्याय 15

भारतीय जनसंचार संस्थान

15.1.1 भारतीय जनसंचार संस्थान एक स्वायत्त संस्था के रूप में 1965 में स्थापित किया गया था। इसे भारत सरकार से सूचना और प्रसारण मंत्रालय के जरिए अनुदान सहायता के रूप में धन प्राप्त होता है।

15.1.2 भारतीय जनसंचार संस्थान शिक्षण और प्रशिक्षण के कई कार्यक्रम संचालित करने के साथ-साथ विचार गोष्ठियां भी आयोजित करता है। इस तरह यह भारत तथा अन्य विकासशील देशों के लिए उपयुक्त सूचना संबंधी आधारभूत ढांचा खड़ा करने में भी योगदान करता है।

15.1.3 पिछले 26 वर्षो में संस्थान ने विभिन्न अवधि के करीब 215 पाठ्यक्रम संचालित किए हैं। इनमें करीब 5,200 प्रशिक्षार्थियों (भारतीय तथा विदेशी दोनों) को फायदा हुआ हैं। समाचार एजेंसी पत्रकारिता में गुट निरपेक्ष देशों के लिए संस्थान का डिप्लोमा पाठ्यक्रम अफ्रीका, एशिया और लातीनी अमरीका के देशों के मध्यम स्तर के श्रमजीवी पत्रकारों में काफी लोकप्रिय है। हर साल इस तरह के दो पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिनकी अवधि पांच-पांच महीनों की होती है।

दीक्षान्त समारोह

15.1.4 वर्ष 1991-92 के शैक्षिक-सत्र का समापन 24 अप्रैल 1992 को वार्षिक दीक्षान्त समारोह के साथ हुआ। यह समारोह इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित किया गया। इसमें गुटनिरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता पाठ्यक्रम के 17, पत्रकारिता में स्नातकोत्तर पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी) के 30, विज्ञापन और जनसम्पर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के 25 छात्रों को डिप्लोमा प्रदान किए गए। प्रतिभाशाली छात्रों को जो पुरस्कार प्रदान किए गए उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए भारतीय जनसंचार संस्थान का रजत जयन्ती पुरस्कार, बाबा साहब डाक्टर भीमराव आम्बेडकर पुरस्कार तथा राजस्थान पत्रिका, पी. टी. आई. साप्ताहिक हिन्दुस्तान, डेकन हेराल्ड, द हिन्दू, पैट्रिऑट, एडवरटाइजिंग एजेंसीज एसोसिएशन ऑफ इंडिया, पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया, प्रो. एम. बी. देसाई और संस्थान के अन्य पुरस्कार शामिल हैं।

शैक्षिक सत्र 1992-93

15.1.5.1 4 अगस्त 1992 को संस्थान में तीन पाठ्यक्रम शुरू हुए। पत्रकारिता (अंग्रेजी) में 36, विज्ञापन और जन सम्पर्क में 38 तथा पत्रकारिता (हिन्दी) में 32 छात्रों ने प्रवेश लिया। गुटनिरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता का 19 वां डिप्लोमा पाठ्यक्रम 8 जुलाई 1992 को शुरू हुआ और 28 नवम्बर 1992 को पूरा हुआ। इसी दिन दीक्षान्त समारोह भी आयोजित किया गया। दीक्षान्त भाषण विदेश राज्य मंत्री श्री रघुनंदन लाल भाटिया ने दिया। 23 विदेशी और एक भारतीय प्रतिभागी को डिप्लोमा प्रदान किए गए। भारतीय सूचना सेवा के ग्रुप-ए के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए 11 महीने का 9 वां पाठ्यक्रम 3 मार्च 1992 को शुरू हुआ और फरवरी 1993 को पूरा हुआ।

संक्षिप्त पाठ्यक्रम, कार्यशालाएं और विचार गोष्ठियां

15.1.5.2 वर्ष के दौरान निम्नलिखित संक्षिप्त पाठ्यक्रम, सेमिनार, और कार्यशालाएं आयोजित की गई। (इनमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों की संख्या कोष्टक में दी गई है)।

1. आकाशवाणी के कर्मचारियों के लिए वॉइस कास्ट पर कार्यशाला (22 से 28 सितम्बर 1992) (9)
2. सेना के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए मीडिया संचार पाठ्यक्रम (12 से 24 अक्तूबर 1992) (16)
3. आकाशवाणी कर्मचारियों के लिए कापी राइटिंग पर कार्यशाला (दिनांक 26 से 30 अक्तूबर 1992) (10)

4. भारतीय सूचना सेवा के ग्रुप-बी अधिकारियों के लिए बेसिक कोर्स
(3 नवम्बर से 16 दिसम्बर 1992) (14)

5. आकाशवाणी के कर्मचारियों के लिए प्रसारण पत्रकारिता पाठ्यक्रम
(17 नवम्बर से 14 दिसम्बर 1992) (11)

मिजोरम, आइज़ोल में कार्यशाला

15.1.5.3 मिजोरम सरकार के सूचना और जनसम्पर्क निदेशालय के अनुरोध पर संस्थान ने 'संचार-कौशल' विषय पर एक कार्यशाला 17 से 28 नवम्बर 1992 तक आइज़ोल में आयोजित की। इसके लिए मिजोरम सरकार ने आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान की। कार्यशाला के दौरान दो वीडियो पत्रिकाएं— 'दिस वीक एट आइजोल' और 'रेडियो न्यूज रील' तैयार की गई।

उपग्रह और केबल टेलीविजन पर विचार गोष्ठी

15.1.5.4 उपग्रह और केबल टेलीविजन से उत्पन्न स्थिति के बारे में एक-दूसरे के अनुभवों, विचारों तथा प्रतिक्रियाओं पर विचार-विमर्श के लिए भारतीय जनसंचार संस्थान ने जर्मनी के फ्रेडरिख इलबर्ट फाउंडेशन के सहयोग से "उपग्रह और केबल टेलीविजन— अवसर और चुनौतियां" विषय पर दो दिन की अंतर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी आयोजित की। 17 और 18 नवम्बर 1992 को आयोजित इस विचार गोष्ठी में भारत, बांग्लादेश, चीन, मलेशिया और नेपाल के 70 विद्वानों, नीति निर्माताओं और मीडिया से जुड़े लोगों ने भाग लिया।

बोधात्मक कार्यक्रम

15.1.5.5 संस्थान ने आकाशवाणी और दूरदर्शन के हिन्दी समाचार बुलेटिनों में "भाषा, शब्द चयन, अनुवाद और एकरूपता" विषय पर 17 और 18 सितम्बर 1992 को दो दिन का बोधात्मक कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें आकाशवाणी और दूरदर्शन के हिन्दी समाचार बुलेटिनों से जुड़े 16 अधिकारियों ने भाग लिया।

एड्स पर सूचना परियोजना

15.1.5.6 विश्व स्वास्थ्य संगठन के नई दिल्ली स्थित दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्रीय कार्यालय के सुझाव पर संस्थान ने सूचना सामग्री का प्रारूप तैयार किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन और भारतीय जनसंचार संस्थान के सहयोग से चलाई गई इस संयुक्त परियोजना का उद्देश्य एच. आई. वी./एड्स के बारे में परामर्श देने के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार करना था।

अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन

15.1.6 कृषि प्रसार में मुद्रित तथा जनसंचार माध्यम का सहयोग (टी. एंड वी.) के तहत मध्य प्रदेश और तमिलनाडु के बारे में रिपोर्ट अप्रैल 1992 में पेश की गई। इस वित्त वर्ष में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुरोध पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ "महिला स्वास्थ्य संघ का मूल्यांकन" विषय पर एक अध्ययन के कार्यक्रम पर सहमति हुई। सभी चुने हुए राज्यों — पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक के बारे में क्षेत्रीय कार्य अक्तूबर/नवम्बर 1992 में पूरा हो गया था।

उपग्रह और केबल टेलीविजन पर एक अध्ययन

15.1.7 देश के पांच नगरों - दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, हैदराबाद और कानपुर में फ्रेडरिख अलबर्ट फाउंडेशन की आर्थिक सहायता से यह अध्ययन कराया गया। अध्ययन के प्रारंभिक नतीजे 17 और 18 नवम्बर 1992 को "उपग्रह और केबल टेलीविजन" विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी में प्रस्तुत किए गए। विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय के अनुरोध पर संस्थान ने अप्रैल 1992 में बहु-माध्यम प्रचार अभियान के प्रभाव विषय पर हरिद्वार के अर्द्ध-कुंभ मेले के दौरान अनुसंधान अध्ययन आयोजित किया।

परिशिष्ट - दो

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

योजना तथा गैर-योजना बजट का विवरण

मांग संख्या 55- सूचना और प्रसारण मंत्रालय **(हजार रुपयों में)**

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1992-93 योजना	बजट अनुमान 1992-93 गैर-योजना	बजट अनुमान 1992-93 योग	संशोधित अनुमान 1992-93 योजना	संशोधित अनुमान 1992-93 गैर-योजना	संशोधित अनुमान 1992-93 योग	बजट अनुमान 1993-94 योजना	बजट अनुमान 1993-94 गैर-योजना	बजट अनुमान 1993-94 योग
	राजस्व भाग									
	मुख्य शीर्ष - 2251 - सचिवालय-सामाजिक सेवायें									
1.	मुख्य सचिवालय	-	2,78,17	2,78,17	-	2.99.30	2,99,30	-	3.54.17	3,54,17
2.	समेकित वेतन और लेखा कार्यालय	5,00	1,49,83	1.54.83	3,00	1,52,70	1,55,70	1,00	1,57,83	1,58,83
	योग	**5,00**	**4,28,00**	**4,33,00**	**3,00**	**4,52,00**	**4,55,00**	**1,00**	**5,12,00**	**5,13,00**
	मुख्य शीर्ष - 2205 - कला एवं संस्कृति सिनेमेटोग्राफिक फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए प्रमाणीकरण									
3.	केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड	20,00	56,80	76,80	20,00	63,90	83.90	10,00	64,75	74,75
4.	फिल्म प्रमाणीकरण अपील न्यायाधिकरण	-	2,20	2,20	-	3,10	3,10	-	3,25	3,25
	योग : मुख्य शीर्ष 2205	**20,00**	**59,00**	**79,00**	**20,00**	**67,00**	**87,00**	**10,00**	**68,00**	**78,00**
	मुख्य शीर्ष - 2220 - सूचना और प्रचार									
5.	फिल्म प्रभाग	2,70,00	15.52.82	18.22.82	2.57.00	16,12,83	18,69,83	1,47,00	16,29,17	17,76,17
6.	फिल्म समारोह निदेशालय	1.60.00	1.75.40	3,35,40	2,16,50	2,23,13	4.39.63	2,24,00	1,62,68	3,86,68
7.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार	60.00	28.73	88.73	53,50	28,88	82,38	20,00	29,95	49,95
8.	भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, कलकत्ता	-	-	-	-	-	-	10.00	-	10.00
9.	राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केंद्र को अनुदान सहायता	1,20,00	27,00	1.47,00	1,20,00	10,00	1,30.00	1.40,00	15,00	1,55,00
10.	भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान को अनुदान सहायता	1,00,00	2,09,00	3,09,00	1,00,00	2.24.16	3,24.16	65,00	2,34,22	2,99,22
11.	फिल्म समितियों को अनुदान सहायता	3,00	-	3,00	3,00	-	3,00	3,00	-	3,00
12.	गवेषणा और संदर्भ प्रभाग	-	36,93	36,93	-	32,92	32,92	-	35,25	35,25
13.	भारतीय जनसंचार संस्थान को अनुदान सहायता	50,00	96,50	1,46,50	44.80	1,04,08	1,48,88	70,00	1,08,91	1,78,91
14.	विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय	68.00	27.45.00	28,13,00	50.00	23,85,15	24,35,15	30,00	24,00,89	24,30,89
15.	पत्र सूचना कार्यालय	20.00	6.87.00	7,07,00	20.00	7,29,31	7,49,31	30,00	7,48,21	7,78,21
16.	भारतीय प्रेस परिषद	-	30,37	30,37	-	31,19	31,19	-	35,95	35,95
17.	समाचार एजेंसियों को सहायता अनुदान	-	1,00	1,00	-	1,00	1,00	-	50	50
18.	पी. टी. आई. को ऋण के ब्याज पर सबसिडी	-	2,38	2,38	-	2,38	2,38	-	1,90	1,90
19.	व्यावसायिक तथा विशेष सेवाओं के लिए भुगतान	-	39,22	39,22	-	30,50	30,50	-	38,22	38,22
20.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	75,00	8,39,00	9,14,00	71,00	8,85,40	9,56,40	47,00	9,13,73	9,60,73
21.	गीत और नाटक प्रभाग	1,65,00	5,28,00	6,93,00	88,00	5,41,00	6,29,00	97,00	5,69,78	6,66,78
22.	प्रकाशन विभाग	64,00	5,62,72	6,26,72	35.00	5,88,18	6.23.16	30,00	6.05.00	6,35,00
23.	रोजगार समाचार	-	7.50.59	7,50,59	-	7.48.82	7.46.82	-	7,85,88	7,85,88
24.	एस. टी. सी. को नुकसान की भरपाई	-	1.00	1,00	-	85.00	85.00	-	2,00	2,00
25.	भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक	28,00	67.64	95,64	11.84	65.47	77,31	5.00	67,87	72,87
26.	फोटो प्रभाग	1,20,00	95.20	2,15.20	1.28.36	1,15.00	2.43.36	25.00	1,20.59	1,45.59
27.	संचार के विकास के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए अंशदान	-	27.50	27,50	-	21.50	21,50	-	16.00	16,00
28.	विभागीय कैन्टीन	-	1.00	1,00	-	6.10	6.10	-	6.30	6,30
	कुल : मुख्य शीर्ष - 2220	**13,03,00**	**85,04,00**	**98,07,00**	**11,99,00**	**84,72,00**	**96,71,00**	**9,43,00**	**85,28,00**	**94,71,00**
	कुल : राजस्व खण्ड	**13,28,00**	**89,91,00**	**103,19,00**	**12,22,00**	**89,91,00**	**102,13,00**	**9,54,00**	**91,08,00**	**100,62,00**

(हजार रुपयों में)

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1992-93 योजना	गैर-योजना	योग	संशोधित अनुमान 1992-93 योजना	गैर-योजना	योग	बजट अनुमान 1993-94 योजना	गैर-योजना	योग
	पूंजी खंड									
	मुख्य शीर्ष - 4220 - सूचना और प्रचार के लिए पूंजी परिव्यय									
	(अ) मशीनें और उपकरण									
1.	फिल्म प्रभाग, बंबई के लिए उपकरणों की खरीद	3,42,00	-	3,42,00	3,02,00	-	3,02,00	36,00	-	36,00
2.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे के लिए उपकरणों की खरीद	47,00	-	47,00	70,00	-	70,00	30,00	-	30,00
3.	पत्र सूचना कार्यालय के लिए उपकरणों की खरीद	1,80,00	-	1,80,00	1,53,95	-	1,53,95	1,14,00	-	1,14,00
4.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के लिए उपकरणों की खरीद	1,20,00	-	1,20,00	1,30,60	-	1,30,60	50,00	-	50,00
5.	फोटो प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	-	-	-	-	-	-	32,00	-	32,00
6.	गीत और नाटक प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	20,00	-	20,00	20,00	-	20,00	13,00	-	13,00
	(आ) भवन									
7.	फिल्म प्रभाग की बहुमंजिला इमारत का मुख्य निर्माण कार्य	25,00	-	25,00	84,25	-	84,25	2,49,00	-	2,49,00
8.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के कार्यालय भवन का मुख्य निर्माण कार्य	13,00	-	13,00	7,70	-	7,70	2,00	-	2,00
9.	फिल्म समारोह काम्प्लेक्स में नये निर्माण तथा पुराने में परिवर्तन संबंधी प्रमुख निर्माण कार्य	40,00	-	40,00	1,39,00	-	1,39,00	20,00	-	20,00
10.	कलकत्ता में फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान की स्थापना - भूमि अधिग्रहण तथा भवन निर्माण	11,00,00	-	11,00,00	2,65,00	-	2,65,00	5,58,00	-	5,58,00
11.	सूचना भवन परिसर - प्रमुख निर्माण कार्य	3,45,00	-	3,45,00	52,50	-	52,50	39,00	-	39,00
12.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के अन्तर्गत कार्यालय तथा आवासीय भवनों का निर्माण - प्रमुख निर्माण कार्य	40,00	-	40,00	40,00	-	40,00	-	-	-
13.	दूसरे राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल के संचालन के लिए प्रस्तावित संयुक्त क्षेत्र की कम्पनियों में पूंजीनिवेश	-	-	-	-	-	-	4,53,00	-	4,53,00
14.	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम	2,00,00	-	2,00,00	2,00,00	-	2,00,00	2,00,00	-	2,00,00
	कुल : मुख्य शीर्ष- 4220	24,72,00	-	24,72,00	14,65,00	-	14,65,00	17,96,00	-	17,96,00
	मुख्य शीर्ष - 6220 - सूचना और प्रचार के लिए ऋण									
	सार्वजनिक क्षेत्र के तथा अन्य उपक्रमों को ऋण									
	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड	2,00,00	-	2,00,00	2,00,00	-	2,00,00	2,00,00	-	2,00,00
	कुल : मुख्य शीर्ष- 6220	2,00,00	-	2,00,00	2,00,00	-	2,00,00	2,00,00	-	2,00,00
	कुल : पूंजी खण्ड	26,72,00	-	26,72,00	16,65,00	-	16,65,00	19,96,00	-	19,96,00
	कुल : मांग सं० 55	40,00,00	89,91,00	129,91,00	28,87,00	89,91,00	118,78,00	29,50,00	91,08,00	120,58,00

मांग संख्या 56 – प्रसारण सेवाएं

राजस्व **(हजार रुपयों में)**

		बजट अनुमान 1992-93			संशोधित अनुमान 1992-93			बजट अनुमान 1993-94		
क्रम सं.	विवरण	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
	राजस्व खंड									
	मुख्य शीर्ष. 2221									
	आकाशवाणी									
1.	निर्देशन तथा प्रशासन	4,13,00	7,79,00	11,92,00	1,85,00	8,37,00	10,22,00	3,41,00	8,86,00	12,27,00
2.	परिचालन तथा रख-रखाव	14,19,00	29,79,00	43,98,00	11,66,00	33,82,00	45,48,00	21,98,00	35,59,00	57,57,00
3.	विज्ञापन प्रसारण सेवा	20,00	11,09,00	11,29,00	4,00	12,61,00	12,65,00	16,00	14,19,00	14,35,00
4.	कार्यक्रम सेवा	45,92,00	94,20,00	1,40,12,00	18,79,00	1,00,42,00	1,19,21,00	42,24,00	1,07,78,00	1,50,02,00
5.	समाचार सेवा प्रभाग	1,13,00	9,47,00	10,60,00	8,00	9,87,00	9,95,00	19,00	10,14,00	10,33,00
6.	श्रोता अनुसंधान	49,00	69,00	1,18,00	23,00	69,00	92,00	48,00	71,00	1,19,00
7.	विदेश प्रसारण सेवा	41,00	2,32,00	2,73,00	11,00	2,28,00	2,39,00	21,00	2,42,00	2,63,00
8.	योजना और विकास	1,90,00	4,28,00	6,18,00	1,68,00	4,62,00	6,30,00	2,48,00	4,77,00	7,25,00
9.	अनुसंधान तथा प्रशिक्षण	1,63,00	2,14,00	3,77,00	94,00	2,13,00	3,07,00	1,35,00	2,20,00	3,55,00
10.	उचन्त	-	51,76,00	51,76,00	-	52,13,00	52,13,00	-	57,44,00	57,44,00
11.	आकाशवाणी और दूरदर्शन विज्ञापन राजस्व कोष का हस्तांतरण	-	28,83,00	28,83,00	-	32,78,00	32,76,00	-	42,68,00	42,68,00
	कुल आकाशवाणी राजस्व	**70,00,00**	**2,42,36,00**	**3,12,36,00**	**35,38,00**	**2,59,72,00**	**2,95,10,00**	**72,50,00**	**2,86,78,00**	**3,59,28,00**
	दूरदर्शन									
1.	निर्देशन तथा प्रशासन	1,10,00	5,84,00	6,94,00	88,00	6,71,00	7,59,00	27,00	7,06,00	7,33,00
2.	परिचालन तथा रख-रखाव	18,75,00	46,44,00	65,19,00	13,19,00	53,70,00	66,89,00	14,55,00	61,04,00	75,59,00
3.	वाणिज्यिक सेवाएं	-	49,67,00	49,67,00	-	52,72,00	52,72,00	-	57,21,00	57,21,00
4.	कार्यक्रम सेवाएं	54,14,00	1,15,00,00	1,69,14,00	35,27,00	1,18,49,00	1,53,76,00	34,92,00	1,24,70,00	1,59,62,00
5.	दर्शक अनुसंधान	1,00	53,00	54,00	3,00	56,00	59,00	5,00	65,00	70,00
6.	उचन्त	-	74,87,00	74,87,00	-	69,10,00	69,10,00	-	76,35,00	76,35,00
7.	आकाशवाणी और दूरदर्शन वाणिज्यिक कोष का हस्तांतरण	-	2,73,56,00	2,73,56,00	-	2,90,90,00	2,90,90,00	-	3,15,12,00	3,15,12,00
	कुल : दूरदर्शन (राजस्व)	**74,00,00**	**5,65,91,00**	**6,39,91,00**	**49,37,00**	**5,92,18,00**	**6,41,55,00**	**49,79,00**	**6,42,13,00**	**6,91,92,00**
	कुल : प्रमुख शीर्ष 2221	**1,44,00,00**	**8,08,27,00**	**9,52,27,00**	**84,75,00**	**8,51,90,00**	**9,36,65,00**	**1,22,29,00**	**9,28,91,00**	**10,51,20,00**
	कुल : राजस्व खंड	**1,44,00,00**	**8,08,27,00**	**9,52,27,00**	**84,75,00**	**8,51,90,00**	**9,36,65,00**	**1,22,29,00**	**9,28,91,00**	**10,51,20,00**
	पारित	**1,44,00,00**	**8,08,25,00**	**9,52,25,00**	**84,75,00**	**8,51,87,00**	**9,36,62,00**	**1,22,29,00**	**9,28,85,00**	**10,51,14,00**
	भारित@	-	**2,00**	**2,00**	-	**3,00**	**3,00**	-	**6,00**	**6,00**

मांग संख्या 56 – प्रसारण सेवाएं

राजस्व

(हजार रुपयों में)

क्रम सं.	विवरण	बजट अनुमान 1992-93 योजना	गैर-योजना	योग	संशोधित अनुमान 1992-93 योजना	गैर-योजना	योग	बजट अनुमान 1993-94 योजना	गैर-योजना	योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
	पूंजी खंड									
	मुख्य शीर्ष- 4221									
	आकाशवाणी									
1.	मशीनें तथा उपकरण	63,00	-	63,00	31,25	-	31,25	66,00	-	66,00
2.	स्टूडियो	45,42,00	10.00	45,52,00	29,37,40	5.00	29,42,40	31,93,00	10,00	32,03,00
3.	ट्रान्समीटर	79,55,00	-	79,55,00	43,76,40	-	43,76,40	66,01,00	-	66,01,00
4.	उचन्त	-	4,99,00	4,99,00	-	5,35,00	5,35,00	-	5,47,00	5,47,00
5.	अन्य खर्च (स्थापना तथा विभिन्न निर्माण योजनाएं)	29,40,00	3,00	29,43,00	26,23,95	13,00	26,36,95	31,90,00	-	31,90,00
	कुल : आकाशवाणी	**1,55,00,00**	**5,12,00**	**1,60,12,00**	**99,69,00**	**5,53,00**	**1,05,22,00**	**1,30,50,00**	**5,57,00**	**1,36,07,00**
	पारित	**1,54,90,00**	**5,12,00**	**1,60,02,00**	**99,42,00**	**5,53,00**	**1,04,95,00**	**1,30,40,00**	**5,57,00**	**1,35,97,00**
	भारित	**10,00**	**-**	**10,00**	**27,00**	**-**	**27,00**	**10,00**	**-**	**10,00**
	दूरदर्शन									
1.	मशीनें तथा उपकरण	28,92	-	28,92	36,67	-	36,67	52,00	-	52,00
2.	स्टूडियो	74,82,75	1,00	74,83,75	48,33,85	1,00	48,34,85	46,96,00	10,00	47,06,00
3.	ट्रान्समीटर	62,90,84	1,87	62,92,71	65,29,67	10,00	65,39,67	50,16,00	1,00	50,17,00
4.	उचन्त	-	5,90,13	5,90,13	-	5,58,00	5,58,00	-	5,00,00	5,00,00
5.	अन्य व्यय (स्थापना तथा विविध निर्माण)	53,13,49	2,00	53,15,49	38,55,81	11,00	38,66,81	22,57,00	-	22,57,00
	योग : दूरदर्शन	**1,91,16,00**	**5,95,00**	**1,97,11,00**	**1,52,56,00**	**5,80,00**	**1,58,36,00**	**1,20,21,00**	**5,11,00**	**1,25,32,00**
	पारित	**1,91,06,00**	**5,95,00**	**1,97,01,00**	**1,52,46,00**	**5,80,00**	**1,58,26,00**	**1,20,11,00**	**5,11,00**	**1,25,22,00**
	भारित	**10,00**	**-**	**10,00**	**10,00**	**-**	**10,00**	**10,00**	**-**	**10,00**
	कुल : मुख्य शीर्ष- 4221	**3,46,16,00**	**11,07,00**	**3,57,23,00**	**2,52,25,00**	**11,33,00**	**2,63,58,00**	**2,50,71,00**	**10,68,00**	**2,61,39,00**
	कुल : पूंजी खंड	**3,46,16,00**	**11,07,00**	**3,57,23,00**	**2,52,25,00**	**11,33,00**	**2,63,58,00**	**2,50,71,00**	**10,68,00**	**2,61,39,00**

परिशिष्ट-तीन

आकाशवाणी

वर्ष 1993-94 में चालू होने वाले आकाशवाणी केन्द्र

प्रसारण केन्द्र	अन्य परियोजनाएं
1. माउंट आबू (एफ एम)	1. दिल्ली (किंग्सवे) 50 किलोवाट शार्टवेव ट्रान्समीटर
2. कारगिल	2. इलाहाबाद 2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रान्समीटर
3. चमोली	3. उदयपुर 2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रान्समीटर
4. किन्नौर	4. रामपुर 2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रान्समीटर
5. लाहौल स्पीति	5. गुवाहाटी में स्टूडियो में सुधार
6. पिथौरागढ़	6. गंगतोक में टाइप I (आर) स्टूडियो
7. चूड़ाचांदपुर (एफ एम)	7. तेजू में 10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रान्समीटर
8. मोकोकचुंग (एफ.एम)	8. कोहिमा में 50 किलोवाट शार्टवेव ट्रान्समीटर
9. जीरो	9. पणजी में टाइप III (आर) स्टूडियो
10. लुंगलेह (एफ एम)	10. बोरीविली में टाइप III (आर) स्टूडियो
11. कोकराझार	11. बम्बई में मल्टी ट्रैक रिकार्डिंग
12. जोवाई (एफ एम)	12. भोपाल में 10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रान्समीटर
13. उस्मानाबाद (एफ एम)	13. कालीकट में 100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रान्समीटर
14. दमन (एफ एम)	14. तिरुअनंतपुरम में टाइप IV स्टूडियो
15. बीजापुर (एफ एम)	15. हैदराबाद में टाइप IV स्टूडियो
16. कावारत्ती	16. मदुरई में 2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रान्समीटर
	17. कोयम्बटूर में 2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रान्समीटर

परिशिष्ट-चार

आकाशवाणी

विविध भारती और प्राथमिक चैनल पर विज्ञापनों से प्राप्त राजस्व

वर्ष	विविध भारती	प्राथमिक चैनल से प्राप्त सकल राजस्व		
		प्रथम चरण	द्वितीय चरण	कुल
1975-76	6,25,87,679	-	-	6,25,87,679
1976-77	6,85,54,222	-	-	6,85,54,222
1977-78	7,82,06,252	-	-	7,82,06,252
1978-79	8,90,75,436	-	-	8,90,75,436
1979-80	10,31,43,702	-	-	10,31,43,702
1980-81	12,51,32,824	-	-	12,51,32,824
1981-82	15,23,44,716	-	-	15,23,44,716
1982-83	15,39,89,422	72,64,000	-	16,12,53,422
1983-84	16,00,34,250	42,30,500	-	16,42,64,750
1984-85	15,93,53,046	66,78,500	-	16,60,31,546
1985-86	17,54,89,035	50,06,275	2,13,84,761	20,22,80,071
1986-87	17,71,77,765	1,06,68,575	5,20,92,195	23,99,38,535
1987-88	19,26,24,082	88,13,025	8,51,64,751	28,66,01,858
1988-89	21,99,92,445	84,81,675	9,60,46,546	32,45,20,666
1989-90	23,72,28,116	68,02,372	10,59,36,265	35,06,66,753
1990-91	25,25,09,742	64,71,500	13,40,37,024	39,30,18,266
1991-92	34,89,00,000	83,62,000	17,00,38,000	52,73,00,000

परिशिष्ट-पांच

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

1992 में प्रमाणित भारतीय फीचर फिल्में

क्रम सं.	भाषा	बंबई	कलकत्ता	मद्रास	बंगलौर	तिरुअनंतपुरम	हैदराबाद	दिल्ली	कटक	कुल
1.	हिन्दी	140	2	29	2	4	12	-	-	189
2.	तमिल	2	-	139	8	4	27	-	-	180
3.	तेलुगु	-	-	39	4	5	105	-	-	153
4.	कन्नड़	-	-	-	92	-	-	-	-	92
5.	मलयालम	2	-	68	-	19	1	-	-	90
6.	बंगला	2	38	1	-	-	-	-	1	42
7.	मराठी	24	-	1	-	-	-	-	-	25
8.	पंजाबी	12	-	-	-	-	-	-	-	12
9.	उड़िया	-	1	1	-	-	-	-	9	11
10.	नेपाली	8	1	-	-	-	-	-	-	9
11.	भोजपुरी	5	3	-	-	-	-	-	-	8
12.	गुजराती	5	-	-	-	-	-	-	-	5
13.	असमिया	-	4	-	-	-	-	-	-	4
14.	अंग्रेजी	2	-	2	-	-	-	1	-	5
15.	राजस्थानी	3	-	-	-	-	-	-	-	3
16.	हरयाणवी	2	-	-	-	-	-	-	-	2
17.	उर्दू	2	-	-	-	-	-	-	-	2
18.	गढ़वाली	1	-	-	-	-	-	-	-	1
19.	नागपुरी	-	1	-	-	-	-	-	-	1
20.	मणिपुरी	-	1	-	-	-	-	-	-	1
21.	संस्कृत	-	-	-	1	-	-	-	-	1
	कुल	210	51	280	107	32	145	1	10	836

परिशिष्ट-छह

दूरदर्शन

दूरदर्शन प्रसारण केन्द्र (25-2-1993 की स्थिति)

क्रम सं०	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	उच्चशक्ति	अल्पशक्ति	अतिअल्प शक्ति	ट्रान्सपोंजर	कुल
1.	असम	3	8	0	2	13
2.	आंध्र प्रदेश	5	25	0	2	32
3.	अरुणाचल प्रदेश	1	2	16	0	19
4.	बिहार	5	26	0	1	32
5.	गोवा	1	0	0	0	1
6.	गुजरात	3	28	1	0	32
7.	हरियाणा	0	5	0	0	5
8.	हिमाचल प्रदेश	1	6	5	2	14
9.	जम्मू कश्मीर	3	2	15	1	21
10.	केरल	2	13	0	0	15
11.	कर्नाटक	3	25	0	0	28
12.	मध्यप्रदेश	6	47	0	1	54
13.	मेघालय	2	1	1	0	4
14.	महाराष्ट्र	5	37	0	1	43
15.	मणिपुर	1	1	3	0	5
16.	मिजोरम	1	0	2	0	3
17.	नागालैंड	1	2	3	1	7
18.	उड़ीसा	3	21	0	1	25
19.	पंजाब	3	4	0	1	8
20.	राजस्थान	1	38	1	2	42
21.	सिक्किम	0	1	3	0	4
22.	तमिलनाडु	2	23	0	3	28
23.	त्रिपुरा	1	0	0	1	2
24.	उत्तर प्रदेश	8	41	10	4	63
25.	पश्चिम बंगाल	4	11	0	0	15
26.	दिल्ली	1	0	0	0	1
27.	अंडमान निकोबार द्वीपसमूह	0	2	6	0	8
28.	दमन और दीव	0	1	1	0	2
29.	पांडिचेरी	0	1	3	0	4
30.	लक्षद्वीप	0	0	9	0	9
31.	चंडीगढ़	0	1	0	0	1
32.	दादरा और नागर हवेली	0	0	1	0	1
	कुल	66	372	80	23	541

परिशिष्ट-सात

पत्र सूचना कार्यालय
क्षेत्रीय/शाखा कार्यालय

क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	शाखा कार्यालय	कार्यालय तथा सूचना केन्द्र	सूचना केन्द्र	कुल
		I उत्तरी क्षेत्र		
चंडीगढ़	1. जम्मू 2. शिमला	1. श्रीनगर 2. जालंधर		5
		II मध्य क्षेत्र		
भोपाल	1. जयपुर 2. इंदौर 3. कोटा 4. जोधपुर			5
		III मध्य-पूर्व क्षेत्र		
लखनऊ	1. वाराणसी 2. कानपुर 3. पटना			4
		IV पूर्वी क्षेत्र		
कलकत्ता	1. कटक 2. अगरतला	1. गंगटोक	पोर्ट ब्लेयर	5
		V पूर्वोत्तर क्षेत्र		
गुवाहाटी	1. शिलांग	1. कोहिमा 2. इम्फाल	आइज़ोल	5
		VI दक्षिण-मध्य क्षेत्र		
हैदराबाद	1. विजयवाड़ा 2. बंगलौर			3
		VII दक्षिणी क्षेत्र		
मद्रास	1. मदुरै 2. तिरुअनंतपुरम 3. कोचीन			4
		VIII पश्चिमी क्षेत्र		
बम्बई	1. नागपुर 2. पुणे 3. पणजी 4. अहमदाबाद 5. राजकोट			6
कुल 8	22	5	2	37

परिशिष्ट-आठ

क्षेत्रीय प्रचार

प्रादेशिक और क्षेत्रीय कार्यालय

1. आंध्र प्रदेश

1. कुडप्पा	5. कुरनूल	9. निज़ामाबाद
2. गुंटूर	6. नलगोंडा	10. श्रीकाकुलम
3. हैदराबाद	7. मेडक	11. विशाखापत्तनम
4. काकीनाडा	8. नेल्लोर	12. वारंगल

2. अरुणाचल प्रदेश

1. अलांग	5. खोंसा	9. सेप्पा
2. अनीनी	6. नामपोंग	10. तवांग
3. बोमडिला	7. न्यू ईटानगर	11. तेजू
4. दपोरिजो	8. पासीघाट	12 ज़िरो

3. असम

1. बरपेडा	5. गुवाहाटी	9. उत्तरी लखीमपुर
2. धुबरी	6. हाफलांग	10. नौगांव
3. डिब्रूगढ़	7. जोरहाट	11. सिलचर
4. डिफू	8. नलबाड़ी	12. तेजपुर

4. बिहार (उत्तरी), पटना

1. भागलपुर	5. फारबिसगंज	9. मुजफ्फरपुर
2. बेगूसराय	6. किशनगंज	10. पटना
3. छपरा	7. मुंगेर	11. सीतामढ़ी
4. दरभंगा	8. मोतीहारी	

5. बिहार (दक्षिणी), रांची

1. डाल्टनगंज	5. गुमला
2. धनबाद	6. हजारीबाग
3. दुमका	7. जमशेदपुर
4. गया	8. रांची

6. गुजरात

1. अहमदाबाद	5. गोधरा	9. राजकोट
2. अहवा	6. हिम्मतनगर	10. सूरत
3. भावनगर	7. जूनागढ़	11. बड़ोदरा
4. भुज	8. पालनपुर	

7. जम्मू और कश्मीर

1. अनंतनाग	6. कंगन	11. पुंछ
2. बारामूला	7. कारगिल	12. राजौरी
3. चदूरा	8. कठुआ	13. शोपियां
4. डोडा	9. कुपवाड़ा	14 श्रीनगर
5. जम्मू (तवी)	10. लेह	15. उधमपुर

8. कर्नाटक

1. बंगलौर
2. बेलगांव
3. बेल्लारि
4. बीजापुर
5. चित्रदुर्ग
6. धारवाड़
7. गुलबर्गा
8. हसन
9. मंगलूर
10. मसूर
11. शिमोगा

9. केरल

1. एलेप्पी
2. कण्णूर
3. एर्नाकुलम
4. कैलपट्टा (विनाद)
5. कोट्टायम
6. कोझिकोड
7. मल्लपुरम
8. पालघाट
9. क्विलोन
10. त्रिचूर
11. तिरुअनंतपुरम

10. मध्य प्रदेश (पूर्व), रायपुर

1. अम्बिकापुर
2. बालाघाट
3. बिलासपुर
4. दुर्ग
5. जबलपुर
6. जगदलपुर
7. कांकेर
8. रायपुर
9. रीवा
10. शहडोल
11. सीधी

11. मध्यप्रदेश (पश्चिम), भोपाल

1. भोपाल
2. छतरपुर
3. छिंदवाड़ा
4. गुना
5. ग्वालियर
6. होशंगाबाद
7. इन्दौर
8. झाबुआ
9. मंदसौर
10. सागर
11. उज्जैन

12. महाराष्ट्र और गोवा

1. अहमदनगर
2. अमरावती
3. औरंगाबाद
4. बम्बई
5. चंद्रपुर
6. जलगांव
7. कोल्हापुर
8. नागपुर
9. नांदेड़
10. नासिक
11. पुणे
12. रत्नागिरी
13. सतारा
14. शोलापुर
15. वर्धा
16. पणजी

13. मेघालय, मिज़ोरम और त्रिपुरा क्षेत्र

1. अगरतला
2. आइजोल
3. जोवाई
4. कैलाशहर
5. लुंग्लेई
6. सेहा
7. शिलांग
8. तुरा
9. उदयपुर

14. नागालैंड और मणिपुर

1. चंदेल
2. चूड़ाचांदपुर
3. इम्फाल
4. कोहिमा
5. मोकोकचुंग
6. मोन
7. त्सेमिन्यू
8. त्यूनसांग
9. उखरुल

15. उत्तर-पश्चिम

1. अम्बाला
2. अमृतसर
3. चंडीगढ़
4. धर्मशाला
5. फिरोजपुर
6. हमीरपुर
7. हिसार
8. जालंधर
9. कालपा
10. लुधियाना
11. मंडी
12. नाहन
13. नारनौल
14. नई दिल्ली (1 और II)
15. पटानकोट
16. रोहतक
17. शिमला
18. दिल्ली I
19. दिल्ली II

16. उड़ीसा

1. बालासोर
2. बारीपाड़ा
3. बरहानपुर
4. भवानीपटना
5. भुवनेश्वर
6. कटक
7. जेपोर
8. क्योंझर
9. फूलवनी
10. पुरी
11. सम्बलपुर

17. राजस्थान

1. अजमेर
2. अलवर
3. बाड़मेर
4. बीकानेर
5. डूंगरपुर
6. जयपुर
7. जैसलमेर
8. जोधपुर
9. कोटा
10. सवाई माधोपुर
11. सीकर
12. श्रीगंगानगर

18. तमिलनाडु और पांडिचेरी

1. कोयम्बटूर
2. धर्मपुरी
3. मद्रास
4. मदुरै
5. पांडिचेरी
6. रामनाथपुरम्
7. सेलम
8. तंजावूर
9. तिरुचिरापल्ली
10. तिरुनेलवेलि
11. वेल्लोर

19. उत्तर प्रदेश (मध्य-पूर्व) ,लखनऊ

1. इलाहाबाद
2. आजमगढ़
3. बांदा
4. गोंडा
5. गोरखपुर
6. झांसी
7. कानपुर
8. लखीमपुर-खीरी
9. लखनऊ
10. मैनपुरी
11. रायबरेली
12. सुल्तानपुर
13. वाराणसी

20. उत्तर प्रदेश (उत्तर-पश्चिम), देहरादून

1. आगरा
2. अलीगढ़
3. बरेली
4. देहरादून
5. गोपेश्वर
6. मेरठ
7. मुरादाबाद
8. मुजफ्फरनगर
9. नैनीताल
10. पौड़ी
11. पिथौरागढ़
12. रानीखेत
13. उत्तरकाशी

21. पश्चिम बंगाल (उत्तर), सिलीगुड़ी

1. कूच बिहार
2. गंगटोक
3. जलपाईगुड़ी
4. जोरेथांग
5. कालिम्पोंग
6. मालदा
7. रायगंज
8. सिलीगुड़ी

22. पश्चिम बंगाल (दक्षिण), कलकत्ता

1. बांकुरा
2. बैरकपुर
3. बरहामपुर
5. कलकत्ता
6. कार निकोबार
7. चिनसुरा
9. पोर्ट ब्लेयर
10. रानीघाट